

प्राचार्य श्री विनयचन्द्र ज्ञान मण्डार, अय्यपुर



# मान पञ्च संग्रह

अथवा

व्यावहारिक आत्म-ज्ञान

तीसरा भाग

और

वाणी संग्रह

---

संग्रहकर्ता तथा प्रकाशक

रामगोपाल मोहता

बीकानेर

---

पहली बार }  
१००० प्रति }

संवत् २००७

{ मूल्य  
१।१) रुपया



मुद्रकः—

भारतीय मुद्रण मन्दिर

खजांची भवन,

बीकानेर

## सूची पत्र

पद्य	श्रु	पद्य	पृष्ठ
असल सन्यास को धार लपैया	३	आन सखी आई बरन्त	४५
अगम दरबार में रे कोनिया मान	६	आनन्द आगो रे अमर	५०
अब पी प्याला हम सोते रहे	८	आल छूते ये अन्ये है बाधा	७६
अब हम मस्त भये क्या बोलें	१५	आन सतगुरु भेटियं ग्यारे	८९
अमर प्याला पियो अवधू	१६	आ मत किए विच आवे हो	६५
अटपट है सन्तो नात हमारी	२४	आई है मूल थारे माई भाटी	६७
अबधू देवो भूल मिठाय	२६	इ	
अबधू बाहर रंग मल्लाय	२६	इक नट डोर पफर सब जगरी	१४
अमराये मिल देश जालो	३४	इते दिन भूल में रह गये	७४
अन्तर बाहिर एक रूप सखी	४४	ए	
अब हम असल जौधारी	४६	एक दिन राम भयो रे	६६
अब रेणो रे सम होय	४६	ऐ	
अब कागो रे समझ कर	४६	ऐसो निरत करे ओ सब में	१३
अ रे हां ओ सिकरो डराम	८०	ऐसा अब अमरकोश हम	१६
अदगुल चरिख अदेख	८६	ऐसी बेगम नीन्द में दोहा	३१
अमर बधायो ग्यारे बंट	६३	ऐसी अवर अमर रस	६०
अनमाल नन्दन सन्द भाये	१०४	ऐसी एक सतगुरु भेद	८२
अचरज खेत अवभा	११३	ओ	
आ		ओ ब्रह्म भद प्यालो शीश	२१
आकरो आनन्द सखी	१७	ओ नीको रे ब्रह्म भद नीको	४६
आलीगा बाने इंद लियो	२०	ओ तो अमर बनड़े ने सुरता	५८
आनन्द मिल्यो सो नयो	२२	ओ जालम बडो कलाल	६१

पद्य	पृष्ठ	पद्य	पृष्ठ
<b>क</b>		<b>क्या</b>	
कर्म योग करले सीई योणी	१८	क्या पूछो हमें हम करा से	७
कवि कर आलस मन सोयरे	६४	क्या पूछे सदेली इसको	२१
कर रयो कर रयो मान तू उलटी	६६	क्या पण्डित पोथी पढे दोहा	४४
कहो किमकर पत आवे हो	६७	क्या पूछो तुम पण्डित मीय	४४
कहे रुपा हो मालजी दोहा	१०८	क्या कर सक्ती है मुक्ति हमारा	६५
करना है तुम्ह को ज्ञान जो	१२०	क्यों तू जग अलुभ विभाटी	६८
<b>का</b>		<b>गु</b>	
कायर था वह भरतु दोहा	६८	गुरु बिना भागे न भरम	८३
<b>कि</b>		<b>घू</b>	
किशने कहूँ समझाय	२५	घूमे मतवालो आप निरालो	५७
किया निश्चय येही हम ने	११६	<b>च</b>	
<b>के</b>		चबडे में चेतन मिल्यो हे हैली	३०
केशव भापी है गीता के माँरी	३१	चतुर कवि बंक है रे थारी	७०
केशो मानले ए प्यारी	७३	<b>चा</b>	
केते ही व्रत उपवास करो सवेया	७७	चालो उण देश में रे जोगिया	५
केशो मानले मरारो भाठी	६७	<b>ची</b>	
<b>को</b>		चौबीसों एकादशी दोहा	७७
कोई चढ़िया रे ज्ञान षोडे	५०	<b>छी</b>	
कोई हिम्मत होवे तो म्हारे	५६	छीलरियो में कूण न्हावे	१७
कोई मत छावो मन मुद्धोरे	५६	<b>ज</b>	
कोई शानी निजानन्द जोये	११८	जगत मगता किये मगता	१६
		जगत गुनो ने जोगी जागती	३०
		जगत श्रुत जाण नन्दे समझ	७५

पृष्ठ	पद्य	पृष्ठ	पद्य	पृष्ठ
	जा		नाम मैं अखन्ध कुमारी	४७
	चाहरे मन हंगला तू	६४	ना कोई क्या न आया	६६
	जी		नि	
७			नित प्राप्त प्राप्ति कहा है देली	३०
२१	जोरे बीरावों रे मन में	१०६	नित परचो पायो नहीं दोहा	१००
४४	जोरे धीरा संगत करी छावे	१०६	नित आनन्द हम श्रीलक्ष्मणे	१०३
४४	जो		प	
६५	जो पीले अन्हें भिजाते हैं	१७	पन्य अतन्त्रों ने जुलम कियो सवैया	२
६८	जोगी हूँ उख देश रो रे	३२	पतको खोल पखिलत कहा	१०
	ठ		पद तो अग्राम छै जी	८८
८३	उगन की कैसे भाव	१५	परियाण पूरा निको पायो	८६
	ते		परियाण पहुंच्या निको पाया	१०४
९७	तेरे अम तू ही भूलायो	८८	पा	
	त्या		पायो मैं ही निब सर्ववी काम	६५
१०	त्याम को त्याग कियो सवैया	३	पाँचो पद परियाण ने देखी	१०६
७०	त्याग बैराग्य को खन्धते दोहा	६७	पी	
	थे		पीयो वो फुल ही पीयो	४०
५	थे आलो गहार भाँखे रो	१११	प्या	
	हु		प्यारी क्यों भटके तू गार	६२
७७	हुबिहा मिठाकी मन की	११६	फ	
	दे		फकीर मन मयहरी छोड	२७
१७	देख देख सब ही कहे दोहा	५	फकीरी उन मुन रहत	६२
	घ		वा	
	धर्म छोट में चोट करे ए	७७	वालाबी गहार जगत-जहानगढ़	३५
१६	ना		वालाबी गहार मन्द भिंकांग	३५
३०	नार नदी अलबेली	३६	वात तो छव है मूठ नदी सवैया	४२
७५				

पद्य	पृष्ठ	पद्य	पृष्ठ
बात टाय नहीं आवे अन्नदाता	६८	भन लोभी नू साथे मू	८१
बत करे पर ब्रह्मरी दोहा	१०७	मन के स्मार्थ छोड़ जरा	११७
<b>वि</b>		<b>मा</b>	
बिनारे पने है देश जो थारो	६३	मानसिह दण्ड बगत में दोहा १	
<b>वु</b>		मानसिह सवार में दोहा १२	
बुरा ही बुग सब कहत चले सवैया ८०		मानसिह उगु देशरी कु'डलिया ३१	
बुरा जो हूँ दृष्ट में गगा दोहा ८०		<b>मु</b>	
<b>वं</b>		सुभ में जगत हुआ नहीं २२	
मक फड़े मुन भूपति दोहा ४२		<b>मे</b>	
<b>व्र</b>		मेरा मेर कोई नहीं जाने ६	
ब्रह्म वैराग्य धरयो सबैया ३		मेरी माला तू कश फेरे १३	
ब्रह्म वैराग्य धरयो सबैया ७१		मेरा मन्त्र मन्त्रों से २३	
<b>भ</b>		मेरा स्वरूप धनूप रूप है ११६	
भक्ति रस कोई बिरला पीथे २७		<b>में</b>	
भक्तां सम संगता नह। कोई २८		में हूँ परम आस्तिक प्यार २२	
भरत श्रेष्ठ स्मृत ४१		में हूँ जोगी और इच्छा है सबैया ३२	
भयो शठ अपने ही भाम ८५		में हूँ नेत्रा नू नेत्रों हरनी ६५	
<b>भा</b>		<b>मो</b>	
भारी जीवने बाजिया १८		मोय करीबी माये नहीं ५	
<b>भू</b>		मोहे चाहिये न य मोग तो ११	
भूपति वर मन हासी ३८		मोह नीन्द सोवत नहीं जोई चौपाई ११	
भूलांने भ्रातृ बतवो ६६		मो मन में एक उपजी शंक ७०	
<b>म</b>		<b>म्ह</b>	
मत पूछो रे भाग हम बुद्ध ८		म्हें तो नित परबी भावो ४०	
मना अब स्थिर होय बैठो ४६		म्हाने मन पूछो रे म्हे आषा ६३	

पद्य	पृष्ठ	पद्य	पृष्ठ
म्हारे तो इष्ट दुम्हारे	६४	रं	
म्हाने दोष मत जाणो माटी	६४	रंगीलो वण कोई आवे	४७
यं		रंग वरसे चहुँ ओर भीजे	४७
यह नहीं देस हमारा है	७	ला	
यहां तो रोकड़ी सोझा	२५	लाल म्हाय बीरा रे देहकली	१०२
या		लाल म्हाय बीरा रे समझने	१०२
या में वही नर नहाने	४२	ले	
यो कहा भोग लगाने	७८	लेचणा हुवे सो लीको माना	११५
र		व	
रहे मस्तान ऐली घूटी पाऊं	२०	वहां नहीं पहुँचे जुगला है	२१४
रहे हम उस रंग में मतवारे	१६	वा	
रस रसिक होष पीते हैं	२९	वां पुक्या रो रंग करो रे	७२
रा		वे	
रामचन्द्र ने समझाये वशिष्ठ	६८	वे बीबित जग के माँदे	२६
रामा लामा आचनो दोहा	६४	श	
रावलमाजो हुय जावो	११२	शब्द के शेल सहे नहीं सवैया	७१
रि		स	
रिला मिला रहो हेत सँ हाली	१०५	समाधि म्हारे कौन करे रे	
रू		समझ बिना वहाँ अस्मा	
रुम हमारो नहीं है किणच	६	सब से गृहस्थ मेरो है	
रुपां कहे रे भाईयो ओ रुम	१०७	सगर सुतन के खरखे दोहा	
रे		सखी बाव रखी समझा रो	
रे कवि चापरो है तू खँया	४१	सतगुरु सुरमें री लब्धी तो	
रे जग कैसी भूल मूलाई बीपाई	६७	सन्तो हो जावो तैयार रंग	
रे जारे मन तुम को कौन	८४	समझ तू थाप को सारे	

पद्य	पृष्ठ	पद्य	पृष्ठ
बात दाव नहीं आवे अन्नदाता	६८	मन लोभी नृ सारो सूँ	८४
वःत करे पर प्रदारी दोहा	१०७	मन के स्वार्थ छोड़ गए	११७
<b>बि</b>		<b>मा</b>	
बिनारे पने है देश जो यारो	६३	मानविह दण अगत में दोहा १	
<b>बु</b>		मानविह ससार में दोहा १२	
बुरा ही बुरा सब कहत चले सबैया ८०		मानविह उण देखरी कुँडलिया ३१	
बुरा जो हूँ तस्य में गया दोहा ८०		<b>सु</b>	
<b>बं</b>		सुभ मे नगत हुआ नहीं २२	
नक पड़े सुन भूपति दोहा ८२		<b>मे</b>	
<b>ब्र</b>		मेरा भेद कोई नहीं जाने ६	
ब्रह्म वैराग्य धरयो सबैया ३		मेरी माला नृ क्या फेरे १३	
ब्रह्म वैराग्य धरयो सबैया ७३		मेरा मजबूत मजबूतो मे २३	
<b>भ</b>		मेरा शरण अल्प रूप है ११६	
भक्ति रख कोई बिरला पावे २७		<b>में</b>	
भक्तो सम भगना नहो कोई २८		मे ई परम आलिक प्याए २२	
भरत श्रेष्ठ खजुल सबैया ४९		मे हूँ जोगी श्रीर इच्छा है सबैया २२	
भयो शठ अपने ही भय ८३		मे हूँ नेदा नृ नेदा हरनी ६५	
<b>भा</b>		<b>मो</b>	
भायी जीवनो बाधिया १८		मोय गरीबी भावे नहीं ५	
<b>भू</b>		मोहे चढ़िये नय मेरा तो ११	
भूपति वह मन हावी ३८		मोह नोन्द सोचत नहीं कोई चीतादे ३१	
भूलाने मारग बतायो ६६		मो मन मे एक उग्रो शंक ७०	
<b>भ</b>		<b>म्हें</b>	
भत गुह्यो रे बाग हम बुझ ८		म्हें तो नित परवी श्याओ ४०	
भना अथ स्थिर होय बैठा ४६		म्हने मय गुह्यो रे मे आग ६३	



पंखा	पृष्ठ	पंखा	पृष्ठ
महारे तो इय तुम्हारे	६४	रं	
महाने दीय मत नाम्नी भाटी	६४	रंगीलों वण कोई आवे	४७
यं		रंग बरसे जहुँ और मोजे	४७
यह नदी बेरा हमारा है	७	ला	
वहाँ तो रोकड़ी सीढ़ा	२४	लाल म्हाय बीरा रे देहकली	१०२
या		लाल म्हाय बीरा रे समझने	१०२
या में वही नर नहावे	४३	ले	
यों कहा भोग लगाने	७८	लेवणा हुवे सो लीजे मांका	११५
र		व	
रदे मलान ऐसी घुंटी पाऊं	१०	वहाँ नहीं पहुँचे बुझा दे	११४
रई हम उस रंग में मतवारे	१६	वा	
रत रसिक लेव पीले हैं	१६	वां पुरुषा रो संग करो रे	७२
रा		वे	
रांमलान ने समझावे वरिष्ठ	६८	वेजीवित्त्व के मर्हि	७६
रामा रामा आवजो दोहा	६४	शु	
रावलनाल हृद गावो	११२	राम के खेल सदे नहीं सवेरा	७१
रि		स	
रिल मिला रदो देत रं हलो	१०५	समाधि महारे कीन करे रे	६
रू		समझ बिना वहाँ आना	८
रुम हमारे नहीं है किशोर	६	सब से एहस्थ मेरो है	२४
रुपां कहे रे मर्हिओ ओ रुम	१०७	सगर सुगन के करये रोहा	४१
रे		सली नाम रयो समझां रे	४५
रे कवि नावरो है नू सवैया	४१	सतसुख सुखें टी डन्डी ले	६०
रे कग कैसी मूल मूलाई चौपाई	६७	सन्तो हो कवो तैवार रंग	६१
रे नारे मन तुम को कीन	८४	समझ तू आव जो नारे	८६

पद्य	पृष्ठ	पद्य	पृष्ठ
सतगुरुआन लुडावे	१०६	सो	
समझ हालो रे माँझ भाईयो	११६	सो जाणे वैराग्य अधोरी रो	६६
सतसग में आने वाले	११६	ह	

### सा

साधो भाई भाने मिलियो न	२
साधो रे भाई मैं सो बस्ती बसू	३
साधो भाई तन धोवा मन	४२
साधो भाई म्हारी छिल रही	४३
साधो भाई मुझमें जगत	६४
साधो भाई धर्म रीति कछु	७५
साधो भाई यो एकादरी कीजे	७६
साधो भाई फल कारण जग	७७
साधो भाई कर्म बान्ह जग	७८
साधो भाई हम कर्मन से न्यारे	८०
साधो भाई खतरी मद्गत मुग	८१
साधो भाई जग मिथ्या दरसाई	८२
साधो भाई जगत क्यों नहीं	१०५

### सु

सुण सुण अमर पिता जी री	३६
सुनरे भवर छैलानी बात मोरी	७४
सुयो म्हाय भाईयो रे अणयो	११०

### सै

सैया ए म्हारी अनवेला रे	३५
सैया ए म्हारी चहूँ दिश	३६
सैया ए म्हारी हथ कारण	३७
सैया ए म्हारी अनन्त गोत्रो	३७

हम देवें शान नहीं दागल को	६
हरिजन लाया शब्द का वेहा	११४

### हां

हा समझ निज देस दिगावो	३२
हां देख निज मन्दिर भाई	३३
हारे खेलण भाई रे दुनिगारी	५६
हारे नुरता गैली रे होगई रे	५६
हारे रूप निज अपथो रे	५७
हारे भाई परिरूख रत एक	८७
हा भाई जोयो जोयो अचन	८७
हारे हरजी तन दो नी भाम	८८
हारे बीरा आनयो हुवेतो सीधोदे	१००
हारे बीरा ओ गहार अथग	१०१
हा रे बीरा वे हरिजन म्हारे	१०१

हारे बीरा नर नारी माव	१०८
हारे बीरा जाल सभी यह	१०८
हारे बीरा कियने केजं रे	११३

### ही

हीग घण ठूं कद हरे	४
-------------------	---

### हे

हेला दे समझऊ कछु	१५
हेनो इहने अमर बीन्द	५०
हेनो म्हाने प्रेम नियालो भर	५१

पद्य	पृष्ठ	पद्य	पृष्ठ
हेवी गहने मिश्रपुर फगवा	५२	हे तू अनादि सदाई रे नावा	८१
हेनी थाने कौन करी गहाव	५३	हो	
हेजी ये हो समझ सैन घर	५३	होरी में सुरता गोरी	४८
हेजी अब खोजत पिवा घर	५४	हं	
हेजी गहरी सता ही नीन्द	५४	हंसा करो रे पयाणा	११५
हेजी गहने मिश्री हे अनादि	५५	ह	
हेली ए अछे रे मखल रे मांय	७२	हमा करो गहना नाय बी	६९
हेली ए माण्य रे शब्द रे तीर	७३	हमा	
है		हमा	
है ये गुलाम कैसे भेद बताऊं रे	१२	हान रवि नय उदय हुवा	११८



# मान पद्य-संग्रह

## तीसरे भाग की प्रस्तावना



“मान पद्य-संग्रह” का प्रथम भाग संवत् १९६५ में प्रकाशित हुआ था और दूसरा भाग संवत् १९६७ में प्रकाशित हुआ था। उसके पीछे जोधपुर निवासी सूरदास साधु मोहनरामजी पंथी ने राजरिपि भूतपूर्व जोधपुर नरेश महाराज श्री मानसिंहजी कथित जो भजन गा कर सुनाये उनका संग्रह इस तीसरे भाग में प्रकाशित किया जाता है। साथ ही कई अन्य महात्माओं की धारियाँ भी इस पुस्तक के उत्तरार्ध में “बाणी संग्रह” के नाम से प्रकाशित की जाती हैं और स्थल साधु मोहनरामजी की छाप के कुछ भजन सामयिक तर्जों के भी प्रकाशित किये जाते हैं।

आशा है इस विषय के प्रेमी लोग इन भजनों से लाभ उठावेंगे।

वीकानेर पौष बदी ८ सोमवार  
संवत् २००७ ता० १-१-१९४१



रामगोपाल मोहता



# मान पद्य-संग्रह

संस्कृत

ज्यावहारिक आत्म-ज्ञान

भाग तीसरा

॥ वृत्त ॥

मानसिद्धिं शन उच्यते मे, साधू बहुषु पहाय ।  
पर निगमि हसको आहन्त, तेषु साधू कर्तुं शतं ॥  
सद्य ही जग मे मैं फिरावो, साधू अर्चयमे-बोय ।  
हुँदा हुँदा एक मिलेयां, माय देव ति-

## ॥ मजन ॥

रग सरग; तर्ज बाणी की । ताल दीपचन्दी ॥

माधो भाई म्हांने मिलियो न वैद्य सुपड़ रे । वेद्य मिन्हा सो मिलिया  
स्वाधिया, घेठा बांह पकड़ रे ॥ १ ॥

स्वार्थी पैद्यो सू मिटेना विमारी; ज्यांरो मन स्वारथ लियो हर रे ।  
स्वारथ हेत वात्यों करे बहुता, कोई कहे सुशरु कोई तर रे ॥ १ ॥  
मान न पित्त करु नहीं मेरे; क्यों भूठो करो ये जिकर रे ।  
म्हारी विमारी मेदमी घोई; काटे अण्णो शिर रे ॥ २ ॥  
म्हारो वैद्य सहज नहीं बण्णों; जीवत जावे मर रे ।  
जीवत मरे सां मेटे विमारी; ले आवे गिरधर रे ॥ ३ ॥  
काली मिरच कुटक क्या पावे, क्या तू देवे हरड़ रे ।  
वानो दवाई मिले नहीं आने; चारों मूँट आवो फिर रे ॥ ४ ॥  
नाथजी वैद्य मिल्या म्हांने पूरा, जिको राखी नहीं कसर रे ।  
ममता मिरच कर्म री कुटकी, घोट पिलाई रगड़ रे ॥ ५ ॥  
पाँचू स्वस्थ पित्तपापड़ो कीनो, मैं तो समता मूँठ लिखी कर रे ।  
चिन्तरो चिरायनो गेसो डारधो; पीताई स्वस्थ सुपड़ रे ॥ ६ ॥  
ऐसो पैद्य मान जइ पायो, फिर कुण भटके घर घर रे ।  
और पैद्य मूँ भली नहीं होई; पायो वैद्य सदर रे ॥ ७ ॥

## ॥ मवैया ॥

पन्थ अनन्ता ने जुलम कियो सन्ध्याम असल की जइ यह लोई ।  
पन्थ ही पन्थ की पोल मचा कर आप दूवे मय जगत डुबोई ।  
दीन दयाल यदि कुछ देखियो तो इन मे फिर मोटी होई ।  
जूत पडे यम के शिर पै तो छुड़ावण द्वार मिले नहीं कोई ।  
मान कहे गुरु देव ही नाथ ने हाथ गहे समझ दियो मोई ।  
सहज सन्यास को जोय लियो जब नद्व के बीच मे वृत्ति पोई ॥

॥ सबैया ॥

त्याग को त्याग कियो हमने फिर त्याग कहाँ पै रह्यो वह विचारो ।  
तीनों ही लोक को त्याग दियो पर त्याग्यो नहीं निज रूप हमारो ।  
त्यागत त्यागत भाग कियो जब त्याग और भाग को लख उठ्यो ।  
लख उठाय के देख लियो तो त्यागनहार तो आप कहायो ।  
देख नाथ कृपा करके असली निज त्याग सो मोय बतायो ।  
मान कहे अघ त्याग और प्रहण को भेद मित्रो निज त्यागी कहायो ॥

॥ सबैया ॥

असल सन्यास को धार लहे तब तीनों ही लोक करे जो गुलामी ।  
बेपरवाह रहे परवाह नहों वह तीनों ही लोक को है जो स्वामी ।  
गृहस्थ छूते ही सन्यासी बन्यो जिन पाय लियो उर में धन नामी ।  
मान कहे रंग है उनको जिन जान लियो उर अन्तर्यामी ॥

॥ सबैया ॥

ब्रह्म वैराग्य धरयो उरमें जब छाप रही दिल में एकताई ।  
चिह्न को अपने किया चेला जब मिथ्या अहंकार को दीन बहाई ।  
भुक्ति नार को मूँड की चेली निर्भय रहे उस नगर के नाई ।  
भीख अखण्ड दिवी गुरु देव ने सो क्यहूँ नहीं खूदत लाई ।  
नाथ ने कीन कृपा हम पै तब असल सन्यास की जुगति बताई ।  
मान सन्यास सव्यो अस सुन्दर तो शत उत भटकूँ अब नाई ॥

॥ भजन ॥

यग धारंग; तर्ज बाणी की । ताल कैला ॥

साधो रे भाई मैं तो बस्ती बसू न ऊबड़ रे । मेरी गति तो मैं ही जानूँ;  
मत करना गड़बड़ रे ॥ देर ॥  
तुमरी कही एक ना जानूँ; क्यों बकते बड़ बड़ रे । पोला पन्थ को अन्त  
फर दीनो; मेर दीवी अड़बड़ रे ॥१॥ बाचो पोथा थोथा मूँ ही; बोझ लादे

ज्यू खर रे । मैं तो पोखी प्रेम री बाची; पौक्यो परे मूं पर रे ॥ २ ॥ सब  
वसुधैव कुटुम्ब है मेरो, मेरा घाम सदर रे । मेरो ही हुकूम सभी पर चले,  
सुक्त पर किरणो उजर रे ॥ ३ ॥ गोरख कबीर घणी ही भाखी; राखी नाहीं  
कसर रे । धोंरे मेघ कितार्ई बरसो; पण पत्थर न होवे तर रे ॥ ४ ॥ भूप  
भरथरी भूल न राखी; जिण भाखी शब्द समर रे । मारया तीर ताक ऊ  
तन में, पण हृदय भयो बजर रे ॥ ५ ॥ मान कहे मैं कूड़ ना भालूं; कूं  
निष्पत्त निडर रे । अबकी कही सन्तो नहीं मानो; तो हो थे पशु नहीं तर  
रे ॥ ६ ॥

राम मारग मल्हार, तर्ज नागरी की । ताल दीपचन्द्री ॥

हीरा घण मू कद डरे, घण री खोट चढावे हों ।  
घों साधू मन ना डरे हों हों, ते शब्द परखावे जी ।।टेरा।।  
बिना परख बिना गुरु फिसा, जाग्रत बिन क्या चेला हों ।  
अन्ध अन्ध की संग में हों हों, भव जल कूग गिरेला जी ।  
बिन पारख गुरु नहीं कीजिण, ग्रंथ में साख सुणवे हों ।  
हीरा घण सू० ॥१॥

हंस जिके तो हंस है, चुग रया मोतियों का चारा हां ।  
खीर पीये पानी छोड़दे हों हों, वे हंस लागे प्यारा जी ।  
हंस समान ये हरिजन, जग में नहीं अलुभावे हों ।  
हीरा घण सू० ॥२॥

कनक कामिनी खोटी कहे, ध्योंने कायर जाणो हों ।  
मन ज्यांरो माने नहीं हों हों, अबरां ने दोष लगाणो जी ।  
साधू जिके तो सूरवा, सन्मुख अड़ जावे हों ।  
हीरा घण सू० ॥३॥

देवनाथ गुरु मन जीत है, जिन मेरो मन घस कीनो हों ।  
मान कहे अहू काल सू हों हों, उणने ही उत्तर न दीनो जी ।  
क्षत्री सुन हरिजन संग से, शिर धर निज पद पावे हों ।  
हीरा घण सू० ॥४॥



राम सारंग-महाम, तनू वाणी की । ताल दीपचन्द्री ॥

भोय गरीबी भावे नहीं, दीन ही दीन पुकारे हों ।  
 घणी गरीब जो गाहरी, जिणने हर कोई मारे जी ॥८॥  
 गाहर होय घणा दिन रह्यो, अति दुःख उठाये हों ।  
 सिंह क्रियो म्हारा नाय-जी, भेड़ भ्रम दूर भगायो जी ॥९॥  
 सिंह भयो जद सुख भयो, आवे ज्योने सिंह करिया हों ।  
 भिड़ता भेड़ पण भगियो, भेड़ों ने चरिया जी ॥१०॥  
 दीन दीन धण डूवियो, देश-री जहाज डुबाई हों ।  
 ब्रह्म-विद्या ज्ञानी नहीं, अपणी आप गुमाई जी ॥११॥  
 एक एक की खैच में, उल्टा अलुभावे हों ।  
 भारत भूमि क्यों नहीं धसे, कहि बिघ जीवित रहावे जी ॥१२॥  
 पदं बरिष्ट ने देख लो, कहीं नहीं दीन बताये हों ।  
 कठ बहुवार्यक शशावास्य, तूही है तूही है गांयो जी ॥१३॥  
 होय होय धार कही कृष्ण जी, अलुन समझायो हों ।  
 गीता अनुगीता के मांही, कहीं नहीं दीन बताये जी ॥१४॥  
 आर्य सभी के गुरु हुते, शिष्य होते जग सारो हों ।  
 मान कहे अब दीनता, दिल सँ दूर निवारो जी ॥१५॥

॥ दोहा ॥

देश देश सब ही कहे, देश न देख्यो कोय ।  
 बिना देश देख्यो बिना, देश गाय मत रोय ॥  
 बिना देश देख्यो बिना, कैसे पावे देश ।  
 दिशा विहृण वावरा, क्यों धरे नकली भेष ॥  
 देश देश सब ही करे, और बसे आप परदेश ।  
 मान ध्यानन्द जब आवही, जब बस ही निज देश ॥

राग देश-सोरठ । ताल कैरवा ॥

पाखो छ देश में रे जोगिया, जहाँ नहीं मजहब नहीं पन्थ ॥८॥

चार वेद पट शास्त्र नहीं रे जोगिया, नहीं धरम नहीं ग्रन्थ । अज्ञा राम दोनों नहीं रे जोगिया, नहीं स्वर्ग न जिन्नत । चलो उख देश० ॥१॥ ना वैकुण्ठ ना वहिश्त है रे जोगिया, नरुं दोखस ना कहन्त । ना कोई पंडित काजी मुझा रे जोगिया, ना कोई मत महन्त । चलो उख देश० ॥२॥ जीव ब्रह्म दोनों नहीं रे जोगिया, जहाँ है सबको धन । श्रुति पुरान कुरान नहीं रे जोगिया, सबसे अलग रहन्त । चलो उख देश० ॥३॥ देवनाथ गुरु हाथ गहो रे जोगिया, जब ये बात लखन्त । मानसिंह आनन्द सदा रे जोगिया, अपने में आप बसन्त । चलो उख देश० ॥४॥

गग देश-सांगठ । ताल कैरवा ॥

अगम दरबार मे रे जोगिया, अटक किणी ने नाथ ॥८॥

जात ना धर्य ना धरम कोई रे जोगिया, जो चाहे सो आय । उच नीच जहाँ है नहीं रे जोगिया, छोट भोट कोई नांय । अगम दरबार में० ॥१॥ शीश उतार धरे कोई रे जोगिया, सो उख घर चढ़ जाय । पग बिन पंथ चले कोई रे जोगिया, जब वह मार्ग लग्याय । अगम दरबार में० ॥२॥ जीव ईश जहाँ हैं नहीं रे जोगिया, जहा नहीं राम खुदाय । एणी देश आनन्द है रे जोगिया, नहीं आवे नहीं जाय । अगम दरबार में० ॥३॥ चार वेद जहाँ हैं नहीं रे जोगिया, पट शास्त्र जहा नांय । नहीं कुरान की पहुँच है रे जोगिया, बाणी वाक्य नहीं पाय । अगम दरबार में० ॥४॥ देवनाथ सत गुरु भिले रे जोगिया, दीनो भेद बताय । मानसिंह निज आप मे रे जोगिया, रयो शुद्ध रूप समाध । अगम दरबार में० ॥५॥

गग देश-भोरठ । ताल कैरवा ॥

समाधि म्हारे कौन करे रे जोगिया, मैं स्वत समाधि मांय ॥८॥

ए खट पट तो घणाई किया रे जोगिया, पण हाथ लग्यो कुछ नांय । रेत रुलाई इण देह ने रे जोगिया, पुनि पुनि जन्म धराय । समाधि म्हारे ॥१॥ घणा ही दिवस भूख मरया रे जोगिया, अन्न जल दिया हटाय । धूणी पांच भी तापली रे जोगिया, पर मन स्थिरता नहीं पाय । समाधि म्हारे० ॥२॥

अनन्त देश मैं भटकियो रे जोगिया, कब तक कहां मैं गिनाय । नर माद  
 नाना भयो रे जोगिया, जिणरो अन्त नहीं आय । समाधि म्हारे० ॥१॥  
 आंख खुली जद कुछ भी नहीं रे जोगिया, सब सुपनो ही दरसाय । अनन्त  
 जन्म ऐसा लग्या रे जोगिया, एक पलक रे मांय । समाधि म्हारे० ॥४॥  
 देवनाथ गुरु बशिष्ठ मिल्या रे जोगिया, हम जब राम कहाय । राम  
 बशिष्ठ दोनों नहीं रे जोगिया, मिल गये मेरे मांय । समाधि म्हारे० ॥५॥  
 मैं ब्रह्म मद में चूर भयो रे जोगिया, मन थावे ज्यू वर जाय । जगत तमासो  
 जाणसी रे जोगिया, मरजीवा है जिके पाय । समाधि म्हारे० ॥६॥  
 बकणो म्हारो वेगम थणो रे जोगिया, कोई न करे विश्वास । जो विश्वास  
 कोई कर लेवे रे जोगिया, तो देव रहे न कोई दास । समाधि म्हारे० ॥७॥

राग भैरवी । ताल तिघाला ॥

यह नहीं देश हमारा है, साथो यह नहीं देश हमारा है ॥ टेर ॥  
 याही देशकी दुनिया दीवानी, मेरी गम कित हू नहीं जानी ।  
 यह माया बीच विचारा है । साथो यह नहीं देश० ॥ १ ॥  
 याही देश में भेद भाव बहु, मेरी बात जाने नहीं हर कहु ।  
 भूले मति मन्द गयारा है । साथो यह नहीं देश० ॥ २ ॥  
 मेरे देश दिवस नहीं रजनी, जहां बिलमी है सुरता सजनी ।  
 चन्द सूर नहीं वारा है । साथो यह नहीं देश० ॥ ३ ॥  
 मेरे देश का ढंग निराला, होवे हँस रहे मतथाला ।  
 जग से कीन कितारा है । साथो यह नहीं देश० ॥ ४ ॥  
 मानसिंह बहे सुनो गुनिज्ञानी, वेद शास्त्र वहां है सब कझानी ।  
 अपना ही आप निहारा है । साथो यह नहीं देश० ॥ ५ ॥

राग भैरवी । ताल कैरवा ॥

क्या पृथ्वी हमें हम कहां से आये ॥ टेर ॥  
 आय गये अब कैसे बतावें, या को अंत कहु नहीं पाये ॥ १ ॥  
 आना जाना है नहीं मुझ में, जन्म मरण दुख नहीं पाये ॥ २ ॥

चार वेद पट शास्त्र नहीं रे जोगिया, नहीं धरम नहीं ग्रन्थ । अज्ञा राम दोनों  
 नहीं रे जोगिया, नहीं स्वर्ग न जिन्नत । चलो उख देश० ॥१॥ ना वैकुण्ठ  
 ना बहिरत है रे जोगिया, नर्क दोख ना कहन्त । ना कोई पंडित काजी  
 मुझा रे जोगिया, ना कोई संन महन्त । चलो उख देश० ॥२॥ जीव ब्रह्म  
 दोनों नहीं रे जोगिया, जहाँ है सबको अन्त । श्रुति पुरान कुरान नहीं रे  
 जोगिया, सबसे अलग रहन्त । चलो उख देश० ॥३॥ देवनाथ गुरु हाथ  
 गह्यो रे जोगिया, जब ये बात लग्यन्त । मानसिंह आनन्द सदा रे जोगिया,  
 अपने मे आप बसन्त । चलो उख देश० ॥४॥

राग देश-सोरठ । ताल कैरवा ॥

अगम दरबार मे रे जोगिया, अटक कियो ने नाथ ॥टेरा॥

जात ना धर्म ना धरम कोई रे जोगिया, जो चाहे सो आप । ऊँच नीच  
 जहाँ है नहीं रे जोगिया, छोटा मोटा कोई नाथ । अगम दरबार में० ॥१॥  
 शीश उतार धरे कोई रे जोगिया, सो उख घर चढ़ जाय । पग बिन पंथ चले  
 कोई रे जोगिया, जब वह मार्ग लग्याय । अगम दरबार में० ॥२॥ जीव ईश  
 जहाँ हैं नहीं रे जोगिया, जहा नही राम सुदाय । उणी देश आनन्द है रे  
 जोगिया, नहीं आवे नहीं जाय । अगम दरबार में० ॥३॥ चार वेद जहाँ है  
 नहीं रे जोगिया, पट शास्त्र जहाँ नाथ । नही कुरान की पहुँच है रे जोगिया,  
 बाणी वाक्य नहीं पाय । अगम दरबार में० ॥४॥ देवनाथ सत गुरु मिले रे  
 जोगिया, दोनो भेद बताय । मानसिंह निज आप मे रे जोगिया, रयो गुन  
 रूप समाय । अगम दरबार में० ॥५॥

राग देश-सोरठ । ताल कैरवा ॥

समाधि न्हारे कौन करे रे जोगिया, मैं स्वत समाधि मांय ॥टेरा॥

ए खट पट तो घण्टाई किया रे जोगिया, पण हाथ लग्यो कुछ नाय । रेत  
 रुलाई इण देह ने रे जोगिया, पुनि पुनि जन्म धराय । समाधि न्हारे ॥१॥  
 घण्टा ही दिवस भूरा मरथा रे जोगिया, अन्न जल दिया हटाय । धूणी  
 पाँच भी तापली रे जोगिया, पर मन स्थिरता नहीं पाय । समाधि न्हारे० ॥२॥

अनन्त देश मैं भटकियो रे जोगिया, कब तक कहुँ मैं गिनाय । नर मादा  
 नाना भयो रे जोगिया, जिणरो अन्त नहीं आय । समाधि म्हारे० ॥३॥  
 आँख खुली जद कुछ भी नहीं रे जोगिया, सब सुपनो ही दरसाय । अनन्त  
 जन्म ऐसा लग्या रे जोगिया, एक पलक रे मांय । समाधि म्हारे० ॥४॥  
 देवनाथ गुरु बशिष्ठ मिल्या रे जोगिया, हम जब राम कहाय । राम  
 बशिष्ठ दोनों नहीं रे जोगिया, मिल गये मेरे मांय । समाधि म्हारे० ॥५॥  
 मैं प्रह्लाद मद् में चूर भयो रे जोगिया, मन थावे ज्यूँ ब्रह्म जाय । जगत तमासो  
 जाणखी रे जोगिया, मरजीचा है जिके पाय । समाधि म्हारे० ॥६॥  
 बकजो म्हारे वेगम पणो रे जोगिया, कोई न करे विश्वास । जो विश्वास  
 कोई कर लेवे रे जोगिया, तो देव रहे न कोई दास । समाधि म्हारे० ॥७॥

राम मैरवी । ताल तितला ॥

यह नहीं देश हमारा है, साधो यह नहीं देश हमारा है ॥ १ ॥  
 याही देशकी दुनिया दीयानी, मेरी गम किन हू नहीं जानी ।  
 यह नाया बीच विचारा है । साधो यह नहीं देश० ॥ १ ॥  
 याही देश में भेद भाव बहु, मेरी बात जाने नहीं हर कहु ।  
 भूले मति मन्द गवारा है । साधो यह नहीं देश० ॥ २ ॥  
 मेरे देश दिखस नहीं रसनी, जहां बिलभी है सुरवा सजनी ।  
 चन्द सूर नहीं तारा है । साधो यह नहीं देश० ॥ ३ ॥  
 मेरे देश का डंग निराता, होवे हँस रहे मत्वाला ।  
 जग से कीन किनारा है । साधो यह नहीं देश० ॥ ४ ॥  
 मानसिंह पड़े सुनो गुनिज्ञानी, वेद शास्त्र वहां है सब कहानी ।  
 अपना ही आप निहारा है । साधो यह नहीं देश० ॥ ५ ॥

राम मैरवी । ताल कैला ॥

क्या पृथ्वी हमें हम कहां से आये ॥ १ ॥  
 आय गये अब कैसे बतावें, या को अब कुछ बर्त पावे ॥ १ ॥  
 आना जाना है नहीं सुक में, बस भ्रम दुख की चंचल ॥ २ ॥

की, अपने दिल से लाग मिटाने रे । मेरा भेद० ॥१॥ भेदा मिले तो भेद  
 यताऊँ, नेक रखूँ नही दाने । जीवन मुक्ति पलक मे देऊँ, जैसे जल बिच  
 तरंग समाने रे । मेरा भेद० ॥२॥ मेरा भेद लखेगा बोही, हरदम रहे  
 मस्ताने । हस्तामलक ध्यूँ सब जग देखे, खुद नटवा बन खेल खेलाने रे ।  
 मेरा भेद० ॥३॥ मानसिंह कहे सुनो हो मित्रो, हम हैं मस्त दिवाने । या  
 मस्ती को बोही पावे, पाप पुन सुख दुख नहीं माने रे । मेरा भेद० ॥४॥

राग भैरवी, तर्ज 'कनैया नेरो करो' की । ताल कैरवा ॥

रहे मस्तान ऐसी घूँटी पाऊँ रे । रहे मस्तान० ॥टेरा॥  
 खुद मस्ती की घूँटी पाकर, जीवत मृतक बनाऊँ । काम क्रोध मद लोभ  
 मोह का, जड़ा मूल से खोज मिटाऊँ रे । रहे मस्तान० ॥१॥ मानो गयन्द  
 समान भूम रहे, ऐसी आनन्द दित्वाऊँ । हर्ष शोक से रहित होय फिर,  
 परमानन्द पद सहज मिलाऊँ रे । रहे मस्तान० ॥२॥ रंक हो जिसको कहूँ  
 बादशाह, दुर्मति दूर हटाऊँ । आय बादशाह चरण सिर नावे, ऐसी अद्भुत  
 खेल खेलाऊँ रे । रहे मस्तान० ॥३॥ कहे मानसिंह सुनो हो मित्रो, तन  
 से मन समझाऊँ । जीवन मुक्त कहूँ या तन मे, अजब अनोखी मौज  
 कराऊँ रे । रहे मस्तान० ॥४॥

राग भैरवी, तर्ज "बन्हेगा तेरो करो" की । ताल कैरवा ॥

पतङ्गो खेल पण्डित कहा मोहे सुनावे रे । पतङ्गो खेल० ॥टेरा॥  
 जेती बात मेरे पतङ्ग मैं, तेती तुम नही पावे । मम पतङ्ग आधार तुमारो  
 फिर फिर के तो पण्डित यही पर आवे रे । पतङ्गो खेल० ॥१॥ पतङ्गो खेल  
 बात कहे मगरी, आम्बि यूँ ममभावे । तेरी कही बात नही होवे, तो फिर  
 ईश्वर को बतलावे रे । पतङ्गो खेल० ॥२॥ तुम जो कहो ईश्वर रे पण्डित,  
 वो तो निजर नही आवे । मेरी कही मानले पण्डित, तो ईश्वर तोहे सहज  
 मिलावे रे । पतङ्गो खेल० ॥३॥ तेरो पतङ्गो जो यह पण्डित, बरस मे रद हो  
 जावे । मैं पतङ्गो तोहे ऐसो पढ़ाऊँ, आदि अनादि मे बचियो ही जावे रे ।  
 पतङ्गो खेल० ॥४॥ तब पतङ्ग मे एक जन्म की, बान जरा कट जावे । मम

पतङ्गे में अनन्त जन्म की, बात निजर जैसे आज दरसावे रे । पतङ्गे खोल०  
॥५॥ एक बात अन्ध रे पन्डित, मम पतङ्गे में पावे । इसको बाँच धारले रे  
पन्डित, यह तो दूर फिर जन्म न आवे रे । पतङ्गे खोल० ॥६॥ तू तो  
पन्डित बात कहे यह, मेरी समझ नहीं आवे । क्यों अन्धे की लकड़ी अन्धे,  
पकड़ के दोनों कूज गिरावे रे । पतङ्गे खोल० ॥७॥ मानसिंह कहे सुनो हो  
पन्डित, यह रस तुम में न आवे । तू तो मरे के बाँव मोल दे, हम तो जीवत  
मोल पठावें रे । पतङ्गे खोल० ॥८॥

राम मैरवी, तर्ज "कन्हैया तेरो कारो" की । ताल कैरवा ॥

मोहे चाहिये नाँय, मेरा तो मैं ही हूँ जापिया रे । मोहे चाहिये नाँय० ॥९॥  
अपना जप तो आपको करना, वेद और ग्रन्थ सुनावे । अवर भरोसे रहे  
आलसी, ऐसी आलस तो मोहे नहीं भावे रे । मोहे चाहिये नाँय० ॥१॥  
अन्धविश्वास तो छड़ गयो सगरो, समझ गयो मन माँई । जन्तर मन्तर  
जप और माला, ऐसी जेल अब चले यहाँ नाँई रे । मोहे चाहिये नाँय० ॥२॥  
देखो ये अन्नरज के ऊपर, बँठा मौज उड़ावे । ऐसे क्या भोंवूँ हम ही हैं,  
हम सो कमावें और इन्हें जीमावें रे । मोहे चाहिये नाँय० ॥३॥ रिपियों के  
रुद्रान्त देत हैं, वे तो ये निज जानी । बिना काम के दान न लेते, खुद भी  
थे वे तो देने के दानी रे । मोहे चाहिये नाँय० ॥४॥ ब्राह्मण संश्री वैश्य शुद्र  
ये, चारों एक समाना । गुण अनुसार करम सब बाँटे, वेद और गीता का  
देऊँ प्रमाना रे । मोहे चाहिये नाँय० ॥५॥ वैश्या पुत्र वशिष्ठ जो कहिये,  
सूत शुद्र सुत जाना । बालमीकि था भीम जाति का, स्वयम् राम के गुण  
जिन गाना रे । मोहे चाहिये नाँय० ॥६॥ काकुमुब्ध गरुड पक्षी थे, उनको  
भी सनमाना । बन्दर रींछ हृदय से लगाये, हाथ गयो कहाँ वह चिज्ञाना  
रे । मोहे चाहिये नाँय ॥७॥ बालक गुडियाँ खेल करे क्यों, ऐसी खेल  
मचायो । फूटे भाग इस भारत देश के, जब ही बुरो दिन ऐसी आयो रे ।  
मोहे चाहिये नाँव० ॥८॥ रुठ गयो भगवान देश से, छाई रात अंधारी ।  
नर नारी सब चल्तू हो गये, बड़े तो छल्लू है ये सन्त पुजारी रे । मोहे  
चाहिये नाँय० ॥९॥ देवनाथ गुरु दया करी जब, यह मद हमको दीना ।

की, अपने दिल से लाग मिटाने रे । मेरा भेद० ॥१॥ भेदा मिले तो भेद बताऊँ, नेक रखूँ नहीं छाँने । जीवन मुक्ति पलक में देऊँ, जैसे जल बिच तरंग समाने रे । मेरा भेद० ॥२॥ मेरा भेद लखेंगा बोही, हरदम रहे मस्ताने । हस्तामलक व्यूँ सब जग देखे, खुद नटवा बन खेलें खिलाने रे । मेरा भेद० ॥३॥ मानसिंह कहे मुनो हो मित्रो, हम हैं मस्त दिवाने । या मस्ती को बोही पावें, पाप पुन सुख दुःख नहीं माने रे । मेरा भेद० ॥४॥

राग भैरवी, तर्ज "कन्हैया तेरो कारो" की । ताल कैरवा ॥

रहे मस्तान ऐसी घूँटी पाऊँ रे । रहे मरवान० ॥टेरा॥  
खुद मस्ती की घूँटी पाकर, जीवन मुक्त बनाऊँ । काब कोश मद लोभ मोह का, जड़ा मूल से खोज मिटाऊँ रे । रहे मस्तान० ॥१॥ मानो गयन्द समान भूम रहे, ऐसी आनन्द दिलाऊँ । हर्ष शोक से रहित होय फिर, परमानन्द पद सहज मिलाऊँ रे । रहे मस्तान० ॥२॥ रंक हो जिसको कहें बादशाह, दुर्मति दूर हटाऊँ । आय बादशाह वरण सिर आवे, ऐसी अद्भुत खेल खेलाऊँ रे । रहे मस्तान० ॥३॥ कहे मानसिंह मुनो हो मित्रो, तन से मन समझाऊँ । जीवन मुक्त कर्छ या नन में, अनाव अनोखी मौज कराऊँ रे । रहे मरवान० ॥४॥

राग भैरवी, तर्ज "कन्हैया तेरो कारो" की । ताल कैरवा ॥

पतङ्गो खोल पण्डित कहा मोहे मुतावे रे । पतङ्गो खोल० ॥टेरा॥  
जैती बात मेरे पतङ्ग में, तेतो तुम नहीं पावें । मम पतङ्ग आधार तुमारो फिर फिर के तो पण्डित यही पर आवे रे । पतङ्गो खोल० ॥१॥ पतङ्गो खोल बात कहे भगरी, आखिर यूँ समझावे । तेरी कही बात नहीं होवे, तो फिर ईश्वर को बतलावे रे । पतङ्गो खोल० ॥२॥ तुम जो कहो ईश्वर रे पण्डित, वो तो निजर नहीं आवे । मेरी कही मान्ने पण्डित, तो ईश्वर तोहे सहज मिलावें रे । पतङ्गो खोल० ॥३॥ तेरो पतङ्गो जो यह पण्डित, बरस में रद हो जावे । मैं पतङ्गो तोहे ऐसी पढ़ाऊँ, आदि अनादि से बचियो ही जावे रे । पतङ्गो खोल० ॥४॥ तब पतङ्ग में एक जन्म की, बात जरा कट जावे । मम



ज्ञान को सूर्य उगायो अन्दर, तब यह तत्त्वमसि मद हम पीता रे । मोहे चाहिये नांय० ॥१०॥ मानसिंह उर भयो उजालो, अब ॥ अग्नेरे में जावें । उल्लू अपनी बकते रह्यो, हम तो उजाले में गौज उड़ावें रे । मोहे चाहिये नांय० ॥११॥

राग भैरवी, तर्ज "कन्हैयो तेरो कारो" की । ताव बैराग ॥

हैं ये गुलाम, कैसे भेद बताऊँ रे । हैं ये गुलाम० ॥१॥ जन्म जन्म तक करी गुलामी, ठाकुर कैसे बनाऊँ । गोरख कबीर ने दोल बजायो तो मैं इन बहरो को कैसे सुनाऊँ रे । हैं ये गुलाम० ॥१॥ ईश्वर जुदा जुदा खुद रहते, कैसे एक बनाऊँ । मांग मांग के उमर बितार्ह, इन मंगरो को कैसे माल दिलाऊँ रे । हैं ये गुलाम० ॥२॥ कोई पैकुण्ड समुद्र में डूँहे में क्यों गोते खाऊँ । कोई चौथे आसमान में दौड़े, इन डरपोकों से क्यों स्थान गमाऊँ रे । हैं ये गुलाम० ॥३॥ राजा मंगते परजा मंगते, मंगते देव बताऊँ । मंगतों का ईश्वर भी मंगता, इन मंगतों को मैं तो देग हंसाऊँ रे । हैं ये गुलाम० ॥४॥ देवनाथ दाता के दाना, नाथ के रूप समाऊँ । मान अनाथ कभी नहीं होवे, जो कोई बने उनको नाथ बनाऊँ रे । हैं ये गुलाम० ॥५॥

॥ दोहा ॥

मानसिंह मसार में, भरी है भूल अनन्त ।  
गिनती करता थक गया, दिनना कहिये पंथ ॥  
मानसिंह मसार के, कहिये मता अनेक ।  
एक से एक बढ़ता रहे, मारे एक को एक ॥  
मानसिंह मन मान ली, करड़े छते ली धार ।  
पोल पंथ में ना पजूँ, कर लो जतन हजार ॥  
बहुत दिनां तक फंस लियो, फंस कर म्याई मार ।  
पृथ पुन किरपा भई, उचड़्यो ज्ञान विचार ॥  
मनगुन मिल गये नावनी, ये वे मच्चे नाथ ।  
नाथ कियो नृप मान को, भेट दियो है अनाथ ॥

रग प्रभाती । ताल कैवा ॥

मेरी माला तू क्या फेर, अपनी आप मैं फेरूँ रे । मेरी माला तू ॥८॥  
माला जैसो काम जगत में, अवरों से कौन मोलावे रे । इतना ही काम होय  
नहीं हमसे, तो क्यों अनुप्य तन पावें रे ॥९॥ ऐसी माला फेर फेर कर,  
खयको आलसी कीना रे । भूठा घोखा दे दे जगत को, अपना घर भर  
लीना रे ॥१०॥ माला फेरबां लक्ष्मी आवे, माला सू दुख जावे रे । तू  
फिर क्यों यूँ फिरे मांगतो, क्यों इतना दुख पावे रे ॥११॥ तीन तांप सू  
शक्ति करसी तो, अपनी क्यों नहीं करले रे । आप दुखी हो फिरे जगत में,  
क्यों न दरिद्रता हरले रे ॥१२॥ माला जैसी चील जगत में, मांगी मिले  
उधारी रे । देखो ठगों ठगाई मांढी, पोल मचाई भारी रे ॥१३॥ ऐसी माला  
हमें न चाहिए, यहाँ मत पोल पलावो रे । ऐसी खुशामदी ईश्वर ल्हारो,  
उसको दूर हटावो रे ॥१४॥ इण माला सू तो यों ही आखा, मन आवे  
जहाँ जावें रे । खर्ग नरक जो मिले कोई भी, नहीं गुलाम रहावें रे ॥१५॥  
आठों पहर फिरत है माला, पलक ढील नहीं लावे रे । बिना सुमेर गाँठ  
बिन फिरती, मणिया कौन घिसावे रे ॥१६॥ सदा अजय हूँ, जय क्या बोले,  
जय की जय क्या होवे रे । कर कर पोल गोला इण जग में, क्यों तू जगत  
डुबोवे रे ॥१७॥ ऐसी पोल चले नहीं यहाँ पर, हम अपने अधिबारी रे ।  
मान मार पिछान के गोले, बिगड़े शान तुम्हारी रे ॥१८॥

रग प्रभाती । ताल कैवा ॥

ऐसो निरत करे ओ सय में, कथक निजर ना आवे रे ॥८॥  
जैसो निरत भाव से ही पूरे, रंती न कसर दिखावे रे ।  
भाव बरोबर देखे सब जग, तो ही न खोज लगवे रे ॥९॥  
देखे हँसे और नाचे गोवे, नई-नई तान सुनावे रे ।  
बाल वृद्ध और तरुण होय कर, नाना ख्यांग घर आवे रे ॥१०॥  
स्थावर जंगम सभी इसी में, नाना चरित चरितावे रे ।  
खुशी होय तो निरत करे यो, नहीं तो चुप हो जावे रे ॥११॥

रंग निरन्तरी रंग निरन्तरी देनटां, जुड़ि नांच छड़ावे रे ।  
 आर अरन्तरी देतो गदवे, सब ने नाच नचावे रे ॥४॥  
 बिना रूप रंग मात्र बचावे, बिन स्वर सुन्दर गावे रे ।  
 पांच पद्मीय भाव कथक के, एक दूर नहीं जावे रे ॥५॥  
 क्या मजान जो कोई पनटे, होरी हाथ रहावे रे ।  
 जो स्वर मंग कोई कर दे तो, पकड़ ठिकाने लावे रे ॥६॥  
 कट तो स्वांग धार लिया कथक, कई घागनो जावे रे ।  
 कना स्वांग फेर ओ घरमी, जिण रो अन्त न आवे रे ॥७॥  
 जो कथक ने स्वीकण जावे, पाछो जवाब न लावे रे ।  
 कथक रूप होय ने नाचे कथक में मिल जावे रे ॥८॥  
 देवनाथ गुरु कथक पूरे, कथनी कवन सिमावे रे ।  
 मानमिह कथक में मिलखो, बेर बेर कृण आवे रे ॥९॥

गग प्रभार्ता । ताल कैरा ॥

इण नट होर पकड़ सब जग री, अपने हाथ नचायो रे ॥१॥  
 जगन पूतली रूप सर्भा है, आप ही खेल खेलायो रे ।  
 मथ की आंख मोच दीधी नटवे, देखो भरम कैलायो रे ॥२॥  
 अचरज एक देख्यो इण नट रो, सो किम जाय बतायो रे ।  
 जेनी पुतली तेती में सब, एक ही नटवो गायो रे ॥३॥  
 धिन नटगणी नटवो नहीं रहवे, कैसे जाल बिझायो रे ।  
 इणी जाल सं जो नट निकले, नटवे रूप कहायो रे ॥४॥  
 काशी मथुरा गया द्वारका, जंगल पहाड़ फिरायो रे ।  
 फिर फिर करके पूजन रेह्यो, नट नो किछी ना बतायो रे ॥५॥  
 जहाँ जहाँ गयो डाल बाड़े में, मार्यो और धमकायो रे ।  
 लट लियो धन पास न रेयो, फिर आगो सरकायो रे ॥६॥  
 मारयो कुट्यो रोवण लागो, कोई दया नहीं लायो रे ।  
 इनने नाथ हाथ आय पकड़यो, दिल रो दरद पूछायो रे ॥७॥  
 किण कारण शिष्य फिर भटकतो, किण कारण दुख पायो रे ।

मन री चात खोलदी सारी, हृदय जमी भर आयो रे ॥७॥  
 कौण आधार जगत ओ नाचे, संशय भोय रंझायो रे ।  
 जगत नचावे देखू लख ने, यह मेरे मन चायो रे ॥८॥  
 रे रे मान भूलकर रह गयो, क्यों यह वक्त गमायो रे ।  
 तू ही नट जग तू ही नचावे, किण ने खोजण धायो रे ॥९॥  
 ज्ञान भान उगो रर अन्दर, पढ़दो कूर हटायो रे ।  
 आप आप लल आप हेस्यो मैं, आछो ठगन ठगायो रे ॥१०॥

राम टोडी । ताल दीपचन्दी ॥

हेला दे समझाऊं, कछु मैं गुप्त न राखू । हेला दे समझाऊं ॥देर॥  
 काम नहीं पढ़वे को यहाँ पर, सहज स्वरूप दिखाऊं । जो देखे सोई मित्र  
 हमारे, ब्रह्म में जीव मिलाऊं । कछु मैं गुप्त ० ॥१॥ भेदाभेद छेदकर  
 आवे ज्ञाने, ज्ञान अमीरस पाऊं । पी कर प्याला मस्त रहे नित, मन के  
 भरम भगाऊं । कछु मैं गुप्त ० ॥२॥ अन्व विस्वास मोय नहीं भावे, चौदे  
 दोल घजाऊं । आव पराई कछु नहीं देखू, तुरन्त ही घूल वषाऊं । कछु मैं  
 गुप्त ० ॥३॥ देवनाथ कबीर मिले गुरु, ओं पाई दरसाऊं । मान अज्ञान  
 निकट क्यों आवे, जब ज्ञान को भान घगाऊं । कछु मैं गुप्त ० ॥४॥

राम टोडी । ताल दीपचन्दी ॥

ठगन को कैसे जाय ठगायो ।  
 बहुत दिनों तक जाग्यो नाही, तब तक माल लुटायो ॥देर॥  
 भंग अफीम चरस में भर भर, बहुत दिनों तक पायो । बहुत दिनों तक डरयो  
 इनके डर, हाथ नहीं कुछ आयो ॥१॥ ब्रह्म राशिन में बहुत दिनों तक, इन  
 मोही अलुभायो । अक्के स्वर पढ़ी जेव मुकझे, सगरो विघ्न मिटायो ॥२॥  
 देवनाथ गुरु हाथ पकड़ के, पूरो साथ निभायो । मानसिद्ध सब ठग पाखंड  
 को, दे ठोकर ठुकरायो ॥३॥

राम टोडी । ताल दीपचन्दी ॥

अब हम मस्त भये क्या बोलें ॥देर॥  
 अपने आप की है ये मल्ली, शिर साटे ली गोले । भगन होयकर बैठ गये

हम, अब इन उत नहीं डोले ॥१॥ जा बैठे उस छाट के ऊपर, पी लिया मद  
अनतोले । पीने पीने हो गये मद धक, झूलत प्रेम हिंडोले ॥२॥ मगन भये  
भांकी एक देखी, परबत राई ओले । भांकी देखत मिल गये उममें, कौन  
ढंके कौन रोले ॥३॥ इस मस्ती में दाना न किसी का, होवे सो ही होले ।  
मानमिद कहे यह नहीं माने, जां अमृत में विष घोले ॥४॥

भग टोटी । ताल दीपचन्दी ॥

रहे हम उस रंग में मनवारे ॥टेरा॥

मेरे रंग की मैं ही जानूँ, क्या जाने भोले बेचारे । सब को रंग में रंग देते  
हैं, फिर रहते हैं न्यारे ॥१॥ एक ही रंग ढग एक मेरा, जो कोई इसे निहारें ।  
देखत देखत रंग में मिले हैं, फेर सुरत नहीं डारे ॥२॥ मेरो रंग देऊँ नहीं  
जीवन, पड़ले उसको मारे । मर रंगूरंग फिर करुँ जिन्दा, काल से भी नहीं  
हारे ॥३॥ मरके जीवे यह आशिष सबचा, देखे नैन निजारे । मानमिद कहे  
सुनो भाई साधो जो चाहो रंगत हमारे ॥४॥

रग मालकोश । ताल तिगाला ॥

देमा अर अमरकेश हम पाया ॥टेरा॥

यह मेरा कोश कभी नहीं खूटे, चाहे जितना बगटाया ।  
उ्यों चांटे उ्यों बढ़ता ही जावे, तरकर हाथ न आया ॥१॥  
अमरकोश के ताले अजब है, जिन खोला खुलवाया ।  
पर में पड़यो हाथ नहीं आवे, यों ही कगल रहाया ॥२॥  
जिनको चाह अन्हीं को मिलता, सतगुरु माल दिखाया ।  
जनम जनम भिक्षुक बन राजी, उनको नाँव पताया ॥३॥  
हमतो जन्म जन्म से मांगते, बहुतै हीरान हो आया ।  
जब भागन ते दुखी हुये हम, सगुरु अरज सुनाया ॥४॥  
अमरकोश माल का मिल गया, मालकोश तब गाया ।  
यही कोश को अकेला न राखूँ, सब को चांटे कर खाया ॥५॥  
देखू नाथ साथ कर मेरो, ऐसा विणज यताया ।  
मान चांगुणां लाम दियो हैं, मुपने कसर न आया ॥६॥

रग मालकोश । ताल तीताला ॥

जो पीते उन्हें पिलाते है । नहीं मुफ्त में है मद मेरा, नहीं खुशामद चाहते हैं ॥८॥

कीमत बहुत कछु नहीं कीमत, कंहो तो तुम्हें समझाते हैं । सिरफ एक शिर लेऊं उतारके, अपना उसे बनाते हैं ॥९॥ है दुकान चौड़े बजार में, नहीं किसको बतलाते हैं । जो हैं शौकीन आप ही आते, देके शिर ले जाते हैं ॥१०॥ अपनी धुन हम गाते रहते, नहीं बरें चुप हो जाते हैं । पीने वाले पीयें प्रेम से, गाफिल गोते खाते हैं ॥११॥ कहे मानसिंह मस्त हो कोई, मेरे यहाँ बल आते हैं । फिर नहीं चाहते पीड़ा जाना, पी यही पर सो जाते हैं ॥१२॥

रग सरंग । ताल रूपक ॥

आज रो आनन्द सजनी कैसे कहूँ बताय रे । गुरु न चेला हूँ अकेला, निर्भय रहूँ मन मांय रे ॥८॥

कौन किसी कहूँ गुलामी, कोई दाय न आय रे । एक अन्तर्यामी हूँ मैं, बट पटारयो समाय रे ॥९॥ नहीं कर्म और नहीं करणी, नहीं पंथ जलाय रे । कौन की है माला जपणी, हँसी रूप दिखाय रे ॥१०॥ चार वाणी चार खाणी वहाँ पहुँचे नांय रे । इन सभी को किया मैंने, मुझको कौन बनाय रे ॥११॥ चार वेद और शास्त्र पट सब, मोही ते उपजाय रे । ब्रह्मा विष्णु मोते उपजे, मेरे बीच समाय रे ॥१२॥ नित्य हूँ आनन्द हूँ सत् चित्त सबके मांय रे । नेति नेति निगम थाके कहे सके नहीं वाय रे ॥१३॥ हूँ स्वतन्त्र नहीं परतन्त्र अपने रूप के मांय रे । निजानन्द की अजब मस्ती, अक्षर लागे नांय रे ॥१४॥ हमी देवा हमी नाथं हमी जात अजाय रे । मान मान अमान हम हैं, हमी हमकी ध्याय रे ।

रग सरंग । ताल रूपक ॥

बीलरियों में कृष्ण न्हावे, प्रदयो समदां सीररे । भूलने कुण जहर पीवे, मिली सुन्दर सीर रे ॥ ८॥

ज्ञान गम रो ओढ़्यो दुशालो, अब कौण ओढ़े चीर रे ।  
 घर में धन और कौण मांगे, कौण बखो पत्कीर रे ॥ १ ॥  
 पथर पाथर कौण पूजे, स्वतः हैं हम गीर रे ।  
 आप अपना करे सब बुद्ध, क्या करे तकदीर रे ॥ २ ॥  
 जगत तो मति हीन हो गई, भूले दुख रे नीर रे ।  
 ज्ञान दियो गुरुदेव जी, जद दूट गई जजीर रे ॥ ३ ॥  
 मोक्षिया तकदीर न्हेतो, भया ज्ञान गम्भीर रे ।  
 ज्ञान रो दरियाव बलियो, समता शुद्ध समीर रे ॥ ४ ॥  
 हम गोपाल और गाय हम हैं, कौन बने अहीर रे ।  
 कपनो पय हम आप पीयो, पीयत भय बेपीर रे ॥ ५ ॥  
 नाथजी रो साथ कीनां, मैटी भूठी लकीर रे ।  
 मान लकीर ने सांप मान्यो, जिते न लगी तखीर रे ॥ ६ ॥

राम गारम । ताल रूपक ॥

भारी जीर्णो ने धाँपिया सां खुब मचाई रोल रे ।  
 एक एकी गली लांघी, निक्लान रो नहीं डौल रे ॥ १ ॥  
 चोर मिलिया चोर सेवी, मची कामर भोल रे ।  
 जीव बपुरा जायें नांही, गूढ अन्तर बोल रे ॥ २ ॥  
 कोई कहे कर वरन मिलमी, कोई पूजा जोर रे ।  
 कोई कहे नित मन्त्र जपयों, किन्ते नवलकिशोर रे ॥ ३ ॥  
 कोई कहे परयाय तुलसी, मिले हरिपुर ठौर रे ।  
 दोरो ने यूँ चोर लूँटे, खुब जमावे जोर रे ॥ ४ ॥  
 बृज बनड़ी ने पत्थर बनड़ो, मिली कैसी जोड़ रे ।  
 ब्याह क्या यह धनको लूट्यो, साग्या रहे चकोर रे ॥ ५ ॥  
 नाथ आपा सूखा जगाया, दिया वचन अमोल रे ।  
 दिव्य दृष्टि कर ओषध्यो डर, लियो अंटे तोल रे ॥ ६ ॥  
 तनूव की तुलसी गहारे, असि ठाकुर मोय रे ।  
 तनूव मिल असि होय, दूटा बन्ध कठोर रे ॥ ७ ॥

पीव प्यारी एक होया, बन्धा गाढा कोल रे।

मान मिल गयो पीव में, जद बज्यो जंगी डोल रे ॥ ७ ॥

राग सारंग । ताल रूपक ॥

अमर प्याला पियो अवधू, फेर मरगो नांय रे । शीश अलंगो मैल पीवे,  
व्याने हजम हो जाय रे ॥ टेर ॥

रात दिन मिल पीव रेवे, बैठो सुरत लगाय रे।

बठत बैठत हातस बोलत, पलक नहीं अटकाय रे ॥ १ ॥

अमर प्याला पी लिया वे, कहो क्यों मर जाय रे।

मरने जीवे जिके पीवे, रत्ना ब्रह्म समाय रे ॥ २ ॥

काल रा बण काल बैठा, काल किय विध स्थाय रे।

जीव थो सो ब्रह्म मिल गयो, कियेने जम लेजाय रे ॥ ३ ॥

पीया जिके तो अमर है, इण देखो जगरे सांय रे।

नहीं पीया जिके भूठा स्यांगी, फिरे स्थान बराय रे ॥ ४ ॥

पीया जिके तो मस्त हो गया, बैठा मौज वेशाय रे।

इन्द्र जैकी सायबी वे, ठोकर सू ठुकराय रे ॥ ५ ॥

नाथजी मस्तान मिलिया, बरजत दियो म्हांने पाय रे।

पीवतां तो दोरो लाग्यो, अब अजन आनन्द आय रे ॥ ६ ॥

बीज रो निज बीज जीयो, जगत सब इण मांय रे।

महा माया रहे इण में, इण बिना कोई नांय रे ॥ ७ ॥

ऐसा प्याला पीया अनुभव, रत्ना शुद्ध समाय रे।

चारू दिश सू निमट बैठा, जेमरी बही जलाय रे ॥ ८ ॥

मान मारग मिल्यो सीधो, कौन ऊजड़ जाय रे।

महान रूप समा रह्यो, अब चेतन एक दिखाय रे ॥ ९ ॥

राग सारंग । ताल रूपक ॥

जगत मंगता फिरे मांगत, मोय भावे नांय रे।

हर-किरी से मांगणों, म्हारे नहीं आवे दाय रे ॥ टेर ॥



गुरु मंगता चैला मंगता, मंगता भूष कहाय रे ।  
मंगतां आगे मांगे मंगता, हँसी इण री आया रे ॥ १ ॥  
काजी मंगता पंडित मंगता, मंगता पीर रहाय रे ।  
ब्रथा मंगता विष्णु मंगता, मंगता शंभु कहाय रे ॥ २ ॥  
देव मंगता मंगता पुजारी, मागत नहीं शरमाय रे ।

। रो मध मेलो मडियो, लूटा खोस मचाय रे ॥ ३ ॥  
मांगियो तो कुछ ना देवे, भूठा मांगो जाय रे ।  
आपरे खुद पास नहीं है, क्या देवे थाने लाय रे ॥ ४ ॥  
मैं भी मंगता नाथका, पण मांग्यो दियो मिलाय रे ।  
मिलायो जब मित्रो मांगख, अब निर्भय मौज उहाय रे ॥ ५ ॥  
बिना म ग्या देऊँ सबको, बाहे सौ लेजाय रे ।  
मांगण री ज्यारे पड़ी आदत, कैसे देऊँ लुहाय रे ॥ ६ ॥  
दातारां ने जाणे नांही, पास मगतों रे आय रे ।  
मानसिंह निर्भय भयो, म्हारे स्वर्ग्या खंडे नांय रे ॥ ७ ॥

गर्ज डके की । ताल कैरवा ॥

आलीजा थाने, कुंड लियो जग सारो रे ॥ टेर ॥  
कोई कहे चेदों पुराण में, कोई कहे ओ है कुराण में । कहे सब न्यारो ही  
न्यारो रे । आलीजा थाने ॥ १ ॥  
प्यारी म्हांने, क्यों नैं ओलबियो न्यारो ए ॥ टेर ॥  
घट घट में मैं परगट बोलूँ, रात दिवस मैं सब मे डोलूँ । आलस उह्यो  
नहिं थारो ए । प्यारी म्हांने ॥ २ ॥ अनन्य जन्म की नींद में सुती, जगह  
जगह गई जहाँ कुटी । कोई न मिल्यो बतावण हारो रे । आलीजा थाने ॥  
३ ॥ न्यारो हुये तो कोई बतावे, पर में हुये तो कौन दिखावे । क्यों न  
लह्यो उणियारो ए । प्यारी म्हांने ॥ ४ ॥ कोई चौथे असमान बतायो,  
कोई वैकुण्ठ पावल सुनायो । कोई कहे प्यारों में प्रीतम न्यारो रे ।  
आलीजा थाने ॥ ५ ॥ लोक कही नैं जाणी भूठी, जिय सूं थाने मारी

कूटो । जगरो आनन्द लाग्यो प्यारो ए । प्यारी म्हांने ॥ ६ ॥ गुरु मिल्यो सो  
 मित्रा स्वार्थी, कोई न म्हांने मिल्यो परमार्थी । बिछूँ रेयो अंधियारो रे ।  
 आलीजा थाने ॥ ७ ॥ भूठों री तें फल बहु करली, वेर वेर जनमी और  
 भरलो । अब क्या मलो है तुम्हारो ए । प्यारी म्हांने ॥ ८ ॥ देवनाथ है प्रीतम  
 मेरा, प्रण करके निश्चय कर हेरा । सगलोई जग लागे खारो रे । आलीजा  
 थाने ॥ ९ ॥ नाहि खारो और ना कोई फोको, नहि खटो और ना कोई  
 सीको । सब जग रूप तिहारो ए । प्यारी म्हांने ॥ १० ॥ मान आजान रेयो  
 नहि कोई, एककी निश्चय गुरु मुख होई । अनन्त भान वजियारो रे ।  
 आलीजा थाने ॥ ११ ॥

तब टंके की । साध कैला ॥

क्या पूछे सहेली, इसको आनन्द छल घर को ए ॥ टेरा ॥  
 छल घर री तो चाया प्यारी; कहियन अब ऐसी प्यारी; धारवा सूं मिट  
 जावे जगरो बड़को ए ॥ १ ॥ बीच सयाजा मिल्यो गुण खाना, आनन्द हो  
 गयो प्रगट पिछाना; पोखो मिठको है पर नर को ए ॥ २ ॥ गुणवीत है  
 ऐसी स्वामी, सब घट व्यापक अन्तर्बामी; मन और बाणी सूं परको ए ॥ ३ ॥  
 ऐसी सुन्दर सैज बिछाई, नारी पुरुष जहां दीखे नाई; मिट गयो देह अमि-  
 मान को घरखो ए ॥ ४ ॥ मान स्वल्प भयो है अमूर्त, छाया न धूर है निज  
 रूप; संग किणो अजर अमर को ए ॥ ५ ॥

तब टंके की । साध कैला ॥

ओ ब्रह्म मद प्यालो, सीरा दिवो जिन पीयो रे ॥ टेरा ॥  
 होय मरताना, सहज दिवाना, पायो ज्ञाना; सहज अभी रस लीयो रे ॥ १ ॥  
 चारु वाणी, चारु खाणी, त्याग दिवी सब जग की निराणी; चिन्ता प्राण  
 विन लीयो रे ॥ २ ॥ धो वेखटके, कहीं न अटके, भूल मरमरी मटकी पटके;  
 अजर अमर पद लीयो रे ॥ ३ ॥ मान सुवाना, ताही को गाना, जिनके  
 अजर आत्म ज्ञाना; घट घट दरसन दीयो रे ॥ ४ ॥

बधावो राग मगल । ताल दीपचन्दी ॥

आनन्द मिल्यो सो क्यों कर कहूँ हैजी होजी । मुख से कह्यो नहीं जाय ।  
आनन्द मिल्यो ॥ टेर ॥

कहदू तो कोई माने नहीं हैजी होजी; बात समझ मे नहीं आय ।  
भेद विद्वत्ता है सभी हैजी होजी, ज्यारे मन इचरज थाय ॥ १ ॥  
बहुत छटपटी बात है हैजी होजी, बिन पग पन्य चलाय ।  
जाये जिके तो चल सके हैजी होजी, औरों मूँ चलयो नहीं जाय ॥ २ ॥  
जगरी छटपट निमटे नहीं हैजी होजी; अधबिच गोता लाय ।  
छटपट भेट मटपट लखे हैजी होजी; जिके नर निज पव पाय ॥ ३ ॥  
आ छटपट कोई अलगी नहो हैजी होजी, छटपट है मन मांव ।  
मनड़े री छटपट छोड़ दो हैजी होजी; सर्व सुखी हो जाय ॥ ४ ॥  
महाने मिल्या सतगुरु नाथजी हैजी होजी; बलभक्त दिखी मुलभाय ।  
मान निराकिन सो भयो हैजी होजी; अथ नहीं कोई रे जगय ॥ ५ ॥

राग कानडा । ताल दीपचन्दी ॥

मुझ में जगम हुवा नहीं होई । होन मिटत मिथ्या है दोई ॥ टेर ॥  
गंधर्व नगर मिथ्या ही भासे, ऐसे ही जग है माना नमासे । नरुधर नदी  
मे नीर कहाँ जोई, वहाँ तो नीर मिले नहीं कोई ॥ १ ॥ तिमिर दीप ते  
अपर दिखावे, है तो कुछ और कुछ और बतावे । जैसे जल मे सूर्य घनेका,  
जल सूको मूरज भयो एका ॥ २ ॥ बालक छावा में भूत बतावे, समझ  
पड़ी जब भूठ दिखावे । रणजू मे सरण सीप में बाणदी, तैसे ही मन  
की भावना मानी ॥ ३ ॥ पाप और पुन कौन को लागे, जो सोये मो नींद  
से जागे । मैं चेतन भित रहत सदाई, जागृत मे नित जाग्रत पाई ॥ ४ ॥  
ना कोई पुरना ना कोई पुरिया, आव अलख शब्द नहीं जुडिया । मानसिद्ध  
लक्षी गम गुंजा । परम पवित्र आकाश के पुजा ॥ ५ ॥

राग कानडा । ताल दीपचन्दी ॥

मैं हूँ परम आस्तिक प्यारा । परम नास्तिक मजहबी सारा ॥ टेर ॥

कोई चौथे आसमान बतावे, कोई वैकुण्ठ समुद्र पुसावे । कोई मूर्त में ईश्वर समझावे, अपनी भक्ति बके न्यारा न्यारा ॥ १ ॥ कोई कहे ईश्वर वेद की वाणी, कोई कहे ईश्वर जेत निसाणी । न्यारी न्यारी करे लैचा ताणी, असल बात से किया है किनारा ॥ २ ॥ कोई कहे ईश्वर आनाहन से आवे, कोई माला और मंत्र जपावे । कोई ईश्वर को दानी बतावे, यों कर प्रपंच फैलावे अपारा ॥ ३ ॥ मेरा ईश्वर ऐसा है भाई, मैं खुद ईश्वर और न पाई । ज्ञान जान मेरे कुछ नाई, कौन मरे कौन धरे अवतारा ॥ ४ ॥ परम नास्तिक जग किचो नारा, गुहियां खेल ज्यों करत तमाशा । मेरा सब में प्रगट प्रकाश, आंख भीचे जद घोर अन्धारा ॥ ५ ॥ देवताथ गुरु अस्त्रियां खोली, मानने वस्तु अमोलक जोखी । अखिल ब्रह्माण्ड काटि धर तोली, मेरा रूप है अगम अपारा ॥ ६ ॥

राम कानका । कल दीपचन्दी ॥

मेरा मजहब मजहबों से न्यारा । मेरे मजहब में मजहब सारा ॥ १ ॥ सारे मजहबों में मोता खावे, हाथ क्षय करके थक जावे । दुख पावे रोवे चिन्तावे, मेरे मजहब में आनन्द अपारा ॥ २ ॥ अल्लाह अल्लाह कहे यदन चिल्लावे, मक्के जाय मदीने धावे । दोख बहिस्त जिनत फिर आवे, तो भी दुख को न पार न पारा ॥ ३ ॥ हिन्दू कर कर पत्थर पूजा, आपसे इतर देव कहे दूजा । अन्तर ओलख कभी नहीं सूझा, जाते फिरे जगमें भ्रमवारा ॥ ४ ॥ केते पितर और प्रेत पुजावे, केते सूरज को छोटा लगावे । केते गंग पवन होने जावे, तदपि न मिटी है चौरासी की धारा ॥ ५ ॥ केते वेद ईश्वर कृत पावे, कई ईश्वर निराकार बतावे । रूप वरण बिन कई जग ध्यावे, यों कर अलूक गया जग सारा ॥ ६ ॥ सब कुछ कर जब मुझमें आवे, मुझ में आव कहीं नहीं जावे । सब मजहबों को आग लगावे, जल चला कर हो जाय सब छाग ॥ ७ ॥ नहीं मैं हिन्दु मुसलमां हूं नाई । नहीं मैं जैन न बुध ईसाई । ये तो अरत प्रपंच के मांई, मैं हूँ इन सब का सरदार ॥ ८ ॥ ये हैं अपवित्र मैं पवित्र सदाई, ये शुद्ध हों जब मुझ में

आई । सुरनर सब का गुरु हूं मैं भाई, मुझसे इतर कहां जावन हारा ॥ न॥  
मान कहे मैं मानूं नाई, सब जग रही है मोय मनाई । है ये अभेद भेद  
न पाई, आंख धने फिर भी अन्धियारा ॥ ६ ॥

राग कानड़ा । ताल दीपचन्द्री ॥

सबसे ग्रहस्थ मेरो है भारी । अनन्त कुटम्ब ज्याँरो नहीं कोई पारी ॥ टेरा ॥  
एक ग्रहस्थ होय छोड़ के जाऊ, अनन्त ग्रहस्थ को कहैं छिटकाऊँ । जहाँ  
जाऊ वहाँ रहय न लारी ॥ १ ॥ अनन्त पुत्र मेरे अनन्त ही भाई, बाप  
अनन्त मेरे अनन्त हो भाई । और अनन्तो है मेरे नारी ॥ २ ॥ अनन्त  
कुद । और अनन्त ही भवना, अनन्त ही बन उपवन कियो गमना ।  
अनन्त मन्दिर और मठ लिये धारी ॥ ३ ॥ मैं ही धनी और मैं ही राजा,  
मेरे दश दश बाजे बाजा । सब मे नीच कंगाल हूँ भारी ॥ ४ ॥ हस्ती  
चींटी एक समाना, स्वान और गाय एक कर जाना । बाझण चान्दाल को  
एक विचारी ॥ ५ ॥ चाहे चान्दाल को गोद बैठाऊँ, चाहे विप्र को शीश  
उड़ाऊ । मार विप्र नहीं ब्रह्महत्यारी ॥ ६ ॥ जन्म आधार पर विप्र न  
मानूँ, ब्रह्म कर्म से विप्र पिछानूँ । कर्म प्रधान बरण लल चारी ॥ ७ ॥ मेरी  
गल लखे मुझसा होई, पाप ने पुन लगे नहीं कोई । मुपने न होवे दुख से  
दुखारी ॥ ८ ॥ मानसिंह ऐसे ग्रहस्थ संयोगी, आदू अजर अमर है योगी ।  
क्या जाने यह जगम विचारी ॥ ९ ॥

राग कानड़ा । ताल दीपचन्द्री ॥

अट पट है सन्तो घात हमारी । तीन लोक से है यह ग्यारी ॥ देर ॥  
मेरी घात लखे कीट सूर, लोक वेद से रहवे दूर । सब कुछ भोग रहवे  
ब्रह्मचारी ॥ १ ॥ सब कुछ करत रहन सम्याक्षी, मुक्ति जिनके धरण की  
दासी । जीवत भरन की करी जिन तैयारी ॥ २ ॥ नारी पुरुष यह भेद न  
जाने, इनसे परे जय होय पहिचाने । गुरु मुख होकर रूप निहारी ॥ ३ ॥  
विन पग पंख चढ़े सो छानी, केवल रूप की यह है निशानी । नहीं पहुँचे  
वहाँ वाणी चारी ॥ ४ ॥ मान आन अब कैसे माने, अपने रूप का हाल  
लखाने । क्या करही अब माया विचारी ॥ ५ ॥

तुर्ब एली की । ताल कैला ॥

किणने कहूं समभाय, बोली तो म्हारी अटपटी रे वाला ॥ देर ॥

मैं हूं गुंथा बोल न जाणूं, बोलूं तो समझे नांय, वाला मैं हूं गुंथा० ।  
जगत बिचारी आंख बिना रे, इणने तो नहीं दरसाय । बोली तो म्हारी०  
॥ १ ॥ जहां मैं पहुंचूं जग नहीं पहुंचे, पहुंचे बिन किम पाय, वाला जहां  
मैं० । पावे नहीं तो कैसे बतावे, फिर फिर गोवा लाय । बोली तो म्हारी०  
॥ २ ॥ मेरो स्वर है जग से न्यारो, मेला मिले न कोय, वाला मेरो रुवर० ।  
बिण सूं जगत मोहे पुरो बतावे, है जैसा हम होय । बोली तो म्हारी०  
॥ ३ ॥ मेरी बोली बोही समझे, आये बोली बोल, वाला मेरी बोली० ।  
तीन लोक ने फांटे ऊपर, धर धर लीनो तोल । बोली तो म्हारी० ॥ ४ ॥  
तीन लोक ने बो ही बोले, जल सूं ही रोमल होय, वाला तीन लोक० ।  
जल भी छहरी शोभा करे रे, पार न पावे कोय । बोली तो म्हारी० ॥ ५ ॥  
निर्मल रहे शुद्ध निशिबासर, जरा फलेश न थाय, वाला निर्मल० । मल  
विदेव आग्रहण सूंवे, हरदम दूर रहाय । बोली तो म्हारी० ॥ ६ ॥ मुक्त  
होय जोय निज आत्म, तभी खबर पड़ जाय, वाला मुक्त सा० । मानसिंह  
कहे अनुभव मेरा, नहीं आवे नहीं जाय । बोली तो म्हारी० ॥ ७ ॥

रेसत । ताल कयाली ॥

यहाँ तो रोकड़ी सीदा, इधर देना इधर लेना ॥ देर ॥

सिखाया कृष्ण ने हमको, तुरंत ही हाथ से देना । उधारी किस लिए रक्ता,  
इधर देना इधर लेना ॥ १ ॥ मरें के वाद जो लेवें, मिले या ना मिलेगा  
तो । जमा हम हाथ से करके, इधर देना इधर लेना ॥ २ ॥ हैं कहते बांधे  
मरने के, अमर हैं हम मरे ना कब । आश क्यों आगली करना, इधर देना  
इधर लेना ॥ ३ ॥ ठगों के देश में आकर, भरोसा क्यों करे हम भर ।  
जमा हूवे भरोसे में, इधर देना इधर लेना ॥ ४ ॥ दिया गुरु देवने हमको,  
अमोल्य वाक्य निज पद का । घरें हम शीरा चरखों में, इधर देना इधर  
लेना ॥ ५ ॥ करण आग्रम बढ़ा अभिमान, काटा शीश बो हमने । किया

गुरु देव के अर्पण, इधर देना इधर लेना ॥ ६ ॥ मिले जब नाथजी ऐसे,  
किया स्वीकार मेरा सिर । मफाया मान दम भर में, इधर देना इधर लेना  
॥ ७ ॥

राग सोरठ, तर्ज बाणी की । ताल रूपक ॥

अवधू देवो भूल मिटाय । अवधू देवो भूल मिटाय, जठ निज आत्म  
दर्शण पाय, अपने आप बीच समाय । अवधू देवो ॥ १ ॥  
जगन जोग मोय एक दीखे जी; ए तो दोय निजर न आय । किणने त्यागू  
किणने पकड़ू, मोरी ममक मे नांय । अवधू देवो ॥ २ ॥ जद जग त्यागू  
कोई दूजो दीखे जी; ओ तो मैं ही खेल खेलाय । खेल मेरो दोष किणने,  
क्यों मैं भागू जाय । अवधू देवो ॥ ३ ॥ मैं ही जोगी मैं ही भोगीजी, मै  
हूँ सब रस नांय । नरक स्वर्ग भी मैं ही कहिये, किण ने दुख गुख धाय ।  
अवधू देवो ॥ ४ ॥ हमी काम और रति हम हैं जी; अब किण मू डरें  
बराय । करें खुशी से भोगें खुशी से; हम पर दूजो नांय । अवधू देवो ॥  
५ ॥ हम ही ज्ञानी हम अज्ञानी जी, अखिल जग मुक्त नांय । चाहे जैसा  
खेल करारूँ, चाहे रुदन हँसाय । अवधू देवो ॥ ६ ॥ ऐसो योग कोई करे  
योगी जी; यो असली संत कहाय । एक करके दोय मेटे, देवें भरम उदाय ।  
अवधू देवो ॥ ७ ॥ नाथ जी रो साथ कीयो जी; भानि दीवी जुगति  
बताय । मानसिद्ध मन बीच समभयो, नहीं आवे नहीं जाय । अवधू देवो  
॥ ८ ॥

राग सोरठ, तर्ज बाणी की । ताल रूपक ॥

अवधू बाहर रंग मत लाय । अवधू बाहर रंग मत लाय, जिण मूँ काल  
हरसी नांय । अवधू बाहर रंग मत लाय ॥ १ ॥  
नांयलो मन रंगो जोगी जी, रंग्योँ उत्तरे नांय । झाठ पहरी यूँ ही रहसी,  
देख जम डर जाय । अवधू बाहर रंग ॥ २ ॥ अन्तर दागा मेट अवधू जी,  
जनम मरण मिटाय । फेर जनमण फेर मरणो, नित रो कुछ दुख पाय ।  
अवधू बाहर रंग ॥ ३ ॥ बिरह धूँषी करो अन्दर जी, जिणमे नृपणा  
इच्छा जलाय । ग्सी तपत्या ताप अवधू, जोग सिद्ध हो जाय । अवधू बाहर

रंग० ॥ ३ ॥ शिखर घर में अमृत बरसे जी, बिन सुख होकर पाय । तीन  
चौकी त्याग के तू, चौथे वास बसाव । अबधू बाहर रंग० ॥ ४ ॥ ज्ञान  
भान जद कगसी जी, तिमिर कम छड़जाय । तिमिर उड़ बजियाला होया,  
सम्मुख रूप दिखाय । अबधू बाहर रंग० ॥ ५ ॥ कुछ नित धोखे रंगे कुछ  
सित जी, ओ तो कचो रंग लगाय । मान कहे रंग लग्यो पक्को, मगन राहुं मन  
सांय । अबधू बाहर रंग० ॥ ६ ॥

रंग सोठ । ताल दीपचन्दी ॥

फकी । मन मगहरी छोड़ । मन मगहरी मिटी न मनसुं, भेष घर रचो  
छोड़ ॥ टेर ॥  
हां, अगर भेष रंगाया भगवां, फर रचो होडा होड । क्यों रा केरा मुंढाया  
न मन सुं, क्यों ये मुंढांयो है भोड ॥ १ ॥ हां, जैसे पूठ दिवी यें जगने,  
मनने पाछो भोड़ । समझ विचार सार लख अन्तर, दिकरी दुविधा ने छोड़  
॥ २ ॥ हां, ब्रह्म विचार भार डर अन्दर, भान्धो भरम रो कोड़ । चेतन होय  
बोय ने लो दे, धस करले चित चोर ॥ ३ ॥ हां, देवनाथ गुरु साथ कियो  
जब, मिल गई साची ओट । मानसिंह घर बैठा फकीरी, पदकी कर्मों री  
पोट ॥ ४ ॥

तुर्जे पण्डित जी । ताल कैरवा ॥

भक्ति रस कोई विरजा पीवे; बिन जारयां जग प्यासा रे ॥ टेर ॥  
कोई मूरत में कोई तस्वीर में, ये सथ करत तमासा रे । मेरी साथबं सभ  
बट दीखे, रहत सबी के पास रे ॥ १ ॥ जैसे मृग के नाथ कस्तूरी, सुंपत  
भन मांय चासा रे । कोई चौथे असमान बतावे, सुन सुन आवे हांसा रे  
॥ २ ॥ कोई मरव हनुमान मनावे; कोई देवी के दासा रे । खोजत फिरे  
हाय नहीं आवे, फिर फिर होत उदासा रे ॥ ३ ॥ सबमें ठाकुर सभ ठाकुर  
में, ऐसी है आनन्द बिलासा रे । मानसिंह वे सुशी है सदाई, भया ब्रह्म  
परप्रासा रे ॥ ४ ॥



तर्ज पणिहारी की । ताल कैरवा ॥

भक्तों सम मंगता नहीं कोई, कर निश्चय मन मांई रे ॥ टेर ॥

मांगत मांगत नीन्द आय गई, मांगे सुपने मांई रे । आंख खुली फिर मांगण लागे, देखो क्या मंगताई रे ॥ १ ॥ पग पग पर ये मांग रहे है, कैमी है नकटाई रे । देवणहार या भूँभी नकटो बुद्ध भी देवे नांई रे ॥ २ ॥ घेठा मांगे पोता मांगे, लक्ष्मी आश न जाई रे । देवण हार या रो केणो मान ले, तो घर ही तार गुमाई रे ॥ ३ ॥ स्वर्ग मांग चैकुंठ मांगलियो, रो ही आश गई नाई रे । मांगत मांगन खुद ने मांग लियो, लक्ष्मी रोवे घर मांई रे ॥ ४ ॥ आ मंगतों रो भक्ति संनो, म्हारे मन नहीं भाई रे । मांगो ऊमर भर मिल्यो कहु नाई, ज्यों आया ज्योंई जाई रे ॥ ५ ॥ देवनाथ गुरु से नहीं मांग्यो, भेंट दिया मंगताई रे । अखिल बिश्व को शाहनशाह मै, ऐसी मौज उड़ाई रे ॥ ६ ॥ नाथ के साथ नाथ होय बैठा, अब न अनाथ रहाई रे । मानसिंह निज शुद्ध भक्ति लख, इनको धूड़ वगाई रे ॥ ७ ॥

तर्ज पणिहारी की । ताल कैरवा ॥

कर्मयोग करले मोई योगी, सो साचा सन्धासी रे ॥ टेर ॥

निश्चय धार करम करे सब कुछ, तोड़ी अविधारी पंसी रे । कर रयो करम अकमी रहवे, नहीं भुगत चौरासी रे ॥ १ ॥ नीति छोड़ अनोति बरते, चाहे ग्युं कर दिखलासी रे । कारण समझ काज कर लेवे, अगंरी न होवे हांसी रे ॥ २ ॥ भोगे नारी रहे भद्राचारी, नहीं कुछ भोग विलाभी रे । समय प्रमाण अशुभ शुभ जाण्यो, वह नहीं होय उदासी रे ॥ ३ ॥ सधमें मिल्यो सरख सू न्यारो, निजानन्द को दासी रे । नाथ रूप जग खेल समझने, आप सदा अविनाशी रे ॥ ४ ॥ घर में रहे मोह नहीं घर सू, ताही जाण बनवासी रे । जगहिन करम करव हे सुशी से, आप पूरण परकासी रे ॥ ५ ॥ देवनाथ को साथ कियो सू कर्मयोगता आसी रे । मानसिंह लख एक अनेको, स्वतः ही आप विलासी रे ॥ ६ ॥

तब लावणी की । ताल कैरवा ॥

रस रसिक होय पीते हैं । यह कायर के क्या काम का ॥ टेढ़ ॥

रस पीते हैं रखिया नामी; सबमें पायो अन्तर्गामी; नहीं किसी की करत गुलामी । नहीं बन्धन खुदा और राम का; वे मर करके जीते हैं ॥ १ ॥ कोई नास्तिक कहे उसको क्या; कोई आस्तिक कहदे परवाह क्या; धर्म अधर्म की उसे चाह क्या । यह वासी है निज धाम का; अपना सुमरन लेते हैं ॥ २ ॥ वेद शास्त्र को यह क्या जाने; और पुराणों को वह क्यों माने; वेद शास्त्र तो उसे बखाने । वह स्वामी विश्व तमाम का; नहीं कुछ सुख को सीते हैं ॥ ३ ॥ शोभा निन्दा कुछ भी करलो; उसका कुछ भी तुम नहीं हरलो; अपने भाव की गठड़ी भरलो । परवाह न नाम बहनाम का; वे नहीं भरे रीते हैं ॥ ४ ॥ मान कहे ऐसे हैं ज्ञानी; चारों खान की हैं वे खानी; उनमें कुछ खानी नहीं जानी । खाक है वस्तु तमाम का; वे नहीं ढोले पीते हैं ॥ ५ ॥

तब लावणी की । ताल कैरवा ॥

वे जीवत जग के माँई । कुछ करते पर उपकार हैं । ॥ टेढ़ ॥

जोड़ जोड़ धन कट्टा करते; ज्यों आये ज्यों ही वे मरते; पाप पुन से जरा न हरी । वे रह्येंगे हार में; यों भटक चौरासी माँई ॥ १ ॥ दिन और रात तके पर नारी; पर धन वस्तु लागे प्यारी; बात खान की लागे खारी । इन लोगों को धिक्कार है; जो करते निंदा पराई ॥ २ ॥ उनके जीवन सार्थक कहिये; सचसे मिल कर शामिल रहिये; घुरा किसी का मुख से न कहिये । घर में खान विचार है; उनके राग द्वेष मन नाई ॥ ३ ॥ सतबका नित रहत सो खानी; हर्ष शोक मनमें नहीं खानी; ब्रह्म स्वरूप सकल को खानी । भेटे द्वैत धिक्कार है; अमृत पीते और पाई ॥ ४ ॥ जग व्यवहार कुशल से करते; अपनी निरक्षय मन में धरते; मान कहे वे ही यम से लड़ते । यम के बन्ध निवार के; वे ब्रह्म स्वरूप सदाई ॥ ५ ॥

तर्ज हेली की । ताल कैरवा ॥

नित प्राप्त प्राप्ती कहा हे हेली । यह मोहे हांसी आय ॥ ढेर ॥  
 म्बन. प्राप्त आप है हे हेली । किणने खोजण जाय । आप खोजी ने आप  
 खोज है हे हेली । क्या गुमियो क्या पाय ॥ १ ॥ आप ही एक अनेक है हे  
 हेली । आप हसे आप रोय । आप आपने भूलगयो हे हेली । आप ही दर-  
 भे दीय ॥ २ ॥ नित प्राप्त ने जाण ले हे हेली । तो खोजण नहीं जाय ।  
 कर को कगण बांय चरुयो हे हेली । निजर पड़ी जद पाय ॥ ३ ॥ गोदी को  
 बालक गोद में हे हेली । खोयो भरम रयो होय । निजर पड़ी जद गोद में  
 हे हेली । गयो आयो नहीं कोय ॥ ४ ॥ उयो कुंभक भान्डा घडे हे हेली । धर  
 धर नाम अनेक । भान्डा फूट कर चूर हुआ हे हेली । जो वस्तु है वो ही देय  
 ॥ ५ ॥ मोना आदि मध्य अन्त है हे हेली । नाना भूषण कीन । गाल दियो मोनो  
 भयो हे हेली । सोई उण कीमत लीन ॥ ६ ॥ इण बिध सबमे आतमा हे हेली,  
 नाना दृष्टान्त पहिचान । मान कहे दृष्टा आप है हे हेली । भई है दृश्य की  
 हान ॥ ७ ॥

तर्ज हेली की । ताल कैरवा ॥

चपड़े मे चेतन मित्यो हे हेली । कुण जइ खोजण जाय ॥ ढेर ॥  
 पुरुष बोलसो प्रत्यक्ष लखयो हे हेली । अणबोली ने कुण ध्याय ।  
 पूजा करो फिर बोले नहीं । हे हेली कुण फिर समय गुमाय ॥ १ ॥  
 गार्थो रोवो तो बुझ ना कहे हे हेली । मुक्ति हाथ न आय ।  
 मरियो पीछे मुक्ति देवे । हे हेली । मोहे तो भरोसो नांय ॥ २ ॥  
 गुण अवगुण खोजे नहीं हे हेली । करत पराई आस ।  
 सुपने मुक्ति नहीं पावसी हे हेली । होय पथरों का वास ॥ ३ ॥  
 बात कहूं ममभाय के हे हेली । वो तो सुणे कोई नांय ।  
 मानमिह चौड़े चौक में हे हेली । नहीं देखे दुन पाय ॥ ४ ॥

तर्ज हेली की । ताल कैरवा ॥

जगत सूतो ने जोगी जागतो हे हेली । नीन्द निकट नहीं आय ॥ ढेर ॥

जगत स्वप्न में रो रयो हे हेली । जोगी तो मौजू रहाय । जोगी देखे निज रूप ने हे हेली । यो किण विध दुख पाय ॥१॥ मरने जीवें जिके जोगिया हे हेली । मौत रो भय कुछ नांय । मरण-दरे तो जोगी नहीं हे हेली । कायर जीव कहाय ॥२॥ साधु सूता सुख नीन्द में हे हेली । है चेतन मन मांय । गाफल पल घर रहे नहीं हे हेली । काल देख गभराय ॥३॥ पलक एक परतन्त्र नहीं हे हेली । रहत स्वतन्त्र सदाय । मान कहे मन जानली हे हेली । क्या कहूं कयो नहीं जाय ॥४॥

॥ दोहा ॥

ऐसी बेगम नीन्द में, सुणे न जगरी हाय ।

जगत योंही शकती रहे, मेरी जगे बलाय ॥

॥ चौपाई ॥

मोह नीन्द सोषत नहीं जोई । सोय नीन्द जोगी नहीं होई ॥ १ ॥

आलस भय प्रमाद नहीं आवे । कामदेव जाको नहीं सतावे ॥ २ ॥

सदा सन्तोषी निरमल बैना । सार्ची देत अमोलक सैना ॥ ३ ॥

मान कहे वे सन्त सुलदाई । बिना भेष भक्त ग्रहस्थ के माई ॥ ४ ॥

॥ खेया ॥

केशव भापी है गीता के मांही सो गीता को रहस्य पहिचानो ।

जगत सोवे जब साधु जगे और जगत जगे जब साधु धुरानो ॥ १ ॥

जगत और जोगी को खेल है उलटो साची बात यह भूठ न मानो ॥ २ ॥

जगत करे जो साधु करे नहीं साधु को खेल तो और ही ठानो ॥ ३ ॥

देव हू नाथ कृपा करके उलटो जो हतो सुलटो सुलभाओ ॥ ४ ॥

मान ॥ गाई को गाई है यह जैसी कही करके दिखलाओ ॥ ५ ॥

॥ कुंठलिया ॥

मानसिंह वृष देश री, बात न माने कोय ।

जिण रे होसी आवणो, धरज्यो रहे न सोय ॥

बरज्यो रहे न सोय, बरजतां आही जावे ।  
 बरजो लोक अनेक दूजों रो दाय न आवे ॥  
 लोकायन डरता रहे, वे बैठेला रोय ।  
 मानसिंह उण देश रो, वान न माने कोय ॥

राम देश-मोरठ । वाल कैग्या ॥

नोगी हूं उण देश रो रे जोगिया, सकल देश उण मांय ॥६॥  
 साग द्वीप नखड सभी रे जोगिया, बसे जोगिये रे डर मांय ।  
 जोगी खावे ने जोगण फाडले रे जोगिया, अचरज खेल दिखाय ॥१॥  
 जागी अमर जोगण नहो मरे रे जोगिया, ए मिलकर खेल रचाय ।  
 जैसे धीज में वृत्त है रे जोगिया, यो जोगण छिप जाय ॥२॥  
 जोगी अनन्त तो जोगण रो रे जोगिया, कहो अन्त कुण पाय ।  
 कब हु तो जोगण ऐसी करे रे जोगिया, जोगिये ने गटकाय ॥३॥  
 साचा सनगुरु जद मिले रे जोगिया, पकड़ ने पाछो लाय ।  
 अपना अपणा दास है रे जोगिया, जीते सो ले जाय ॥४॥  
 नाथ को साध जो मैं कियो रे जोगिया, दीना दास मिटाय ।  
 मानसिंह निर्भय भयो रे जोगिया, मिट गई सकल बताय ॥५॥

॥ स्वेया ॥

मैं हूं जोगी और इच्छा है जोगण, सातों द्वीप नव खण्ड बसायो ।  
 ब्रह्म में जगत् ममाय गयो, इच्छा जब ही यह उपाय लगायो ।  
 एक के बहुत होन को चाहत, यों कर जग पाछो पुर आयो ।  
 माया प्रयत्न बन्दी जब ही तब, ब्रह्म मिथ्यो और जीव बणायो ।  
 देव हु नाथ दया करके, जो भेद हुतो सो सभी समझायो ।  
 मान तो बाजो हारयो यो, गुरुदेव दया करि फिर जीतायो ॥

सर्ज डके की । वाल कैग्या ॥

हाँ समझ निज देश दिखावो, प्रेम पियाला भर भर पावो । जावे जिकों ने  
 जावण दो खुशी सूं, आवे जिकों ने लावो । निज देश दिखावो ॥६॥

आदत पड़ गई छूटे नांव; होय गया हरयाई गाय ।  
पोल पंथ रा जूत खवत है, उण में ई मौज बतावो ।

निज देश दिखावो ॥१॥

यों कुतड़ा चाणव है हाड; योंही कुटावे आपणी टाट ।  
कही सुणी ये कदेई न माने, कहदो कि भलाई कूटावो ।

निज देश दिखावो ॥२॥

चौरे नही है एक जवान; पत मत करज्यो यांरी जाण ।  
नकटा दण यह समाज बडावे, समज्या मत नाक कटावो ।

निज देश दिखावो ॥३॥

कमी तो कहे नन्दजी रो जायो; कमी कहे ईश्वर अणजायो ।  
कमी ये कहे तकदीर हमारे, डव पड़तो ज्योंही गावो ।

निज देश दिखावो ॥४॥

नहीं माने वे खासी मार; समझावो कर जतन हजार ।  
एक मनुष्य री कैसे माने, माने नहीं मझा समझावो ।

निज देश दिखावो ॥५॥

दुर्योधन भोषम समझायो; कृष्ण जाय उपदेश सुणायो ।  
स्थूल पणो नही छोडे मूरख, ये क्यों समच गुमावो ।

निज देश दिखावो ॥६॥

पगों बिनारा नीचा रहसी; पापी पाप कर्म सुख लेसी ।  
दीन गुलाम जिके करत गुलामी, वाँ ने परा ठुकरावो ।

निज देश दिखावो ॥७॥

देवताथ कहे सुन तू मान; अपण्ये तो कदेय न रेणो अणजाण ।  
अपणो स्वरूप विश्व सारी में, मिलावो चावे जिकों ने मझावो ।

निज देश दिखावो ॥८॥

तब डंके की । ताल करवा ॥

हां देख निज मंदिर मांई; क्यों छरपे देखत परछांई ।  
परछांई ने ईश्वर माने, अकल मांग क्यों लाई ।

निज मंदिर मांई ॥ छेर ॥

बालकवत बुध हो गईं जोय, दीनो जन्म मुक्त ही खोय ।  
जन्म गमायो हाथ न आयो, बैठी है मूल ठगई ।

निज मंदिर मांई ॥ १ ॥

मूल मिहो निज मारग आय; मारग आयों दुख है नांय ।  
अपणो में आप खोज कर हेली, बाहिर भटक दुख पाई ।

निज मंदिर माई ॥ २ ॥

भरम भूत अज देनो छोड़, असली आतम में मन जोड़ ।  
नहीं आवे और नहीं वह जावे, रहस्य अचल सदाई ।

निज मंदिर माई ॥ ३ ॥

जगह जगह पर सीस कुटाय; अज हूँ सखी आई नांय ।  
पूज पूज पत्थर पाथर को, नाहक स्यान गुमाई ।

निज मंदिर माई ॥ ४ ॥

देवनाथ सम समधी पाय; असल पिया सु श्रीनो व्याह ।  
मान आन दुख भूली म्हारी मुरता, समझपाँ पीव मिलाई ।

निज मंदिर माई ॥ ५ ॥

राग सारंग । ताल रूपक ॥

जाग रे मन ईमझा तूँ चाल निर्भय देश रे । सुब रे सागर झूलणो ठंठ  
दुब रे । नहो लय लेश रे । जाग रे मन हसला ॥ टेर ॥

साची कैवे सन्तजन व्यांरा धार डर उपदेश रे । धारियों सूँ धीरज आवे,  
मिठ भरम सग्वेह रे ॥ १ ॥ मिथ्या मोह में उलझ बैठो क्यों खोसावे केश  
रे । सत्य जाको ओलख उर में, परा धाम प्रवेश रे ॥ २ ॥ देवनाथ गुरु  
महर कीनी, पायो अलख अचज्ञेश रे । मान ओलख आप भे, यूँ रहन  
मगन हमेश रे ॥ ३ ॥

राग माड-आसावरी । ताल दीपचन्दी ॥

अमराणे निज देश, चालो रे मना अमराणे निज देश ॥ टेर ॥  
हाउ अमराणे रे देश में रे, पहुँच्या सन्त सुरेश । इसड़ा नर पदोधि नहीं रे

ज्यां शिर तकली भेष । चालोरे० ॥१॥ सात सुन्न रे पार है रे, जहां तुम  
कर हो प्रवेश । जमरो दाव लागे नहीं रे, नित रहे निर सन्देह । चालोरे०  
॥२॥ जन्म मरण जहां है नहीं रे, नहीं-दुखरो लव लेश । उण वर जो नर  
पहूँचिया रे, अमर रहत हमेश । चालोरे० ॥३॥ देवनाथ सस-गुरु मिल्या  
म्हाने, साबो दियो उपदेश । मान ओलख्यो आपने रे, आप ही करत  
आदेश । चालोरे० ॥४॥

राम मंगल । ताल दीपचन्दी ॥

सैंया ए म्हारी अलबेला रे देश कोई अलबेला आवे हे ॥ देर ॥  
उलमयोड़ा जीव सुमननो न आवे हे । सैंया ए म्हारी लख बौरासी रे  
धीच जिकाने फल खारा भावे हे ॥ १ ॥ होय अलबेला सब खदपद मेटी  
हे । सैंया ए म्हारी करता अकरता होय जिकाने जम नांय सतावे हे ॥ २ ॥  
भूत भविष्यत सगला खोया हे । सैंया ए म्हारी आदि अन्त लियो पाय अबे  
नहीं आवे न जावे हे ॥ ३ ॥ भूमरथा निज अपने आपमें हे । सैंया ए  
म्हारी चवदे भवन रा नाथ आप वे तो आप कहावे हे ॥ ४ ॥ मानसिंह  
अलबेला पेसा हे । सैंया ए म्हारी भयो हे काल रो काल काल म्हां सूं डर  
जावे हे ॥ ५ ॥

राम मंगल । ताल दीपचन्दी ॥

बालाजी म्हारा जगत वहकावण वात नरेश्वर म्हांने नहीं भावे हो ॥ देर ॥  
चवदे भवन रा नाथ कैसे कहिये हो । बालाजी म्हारा थारे तो मरुधर एक  
दूजो म्हारे निजर न आवे हो ॥ १ ॥ काल को काल कैसे तुम्हें मानू  
हो । बालाजी म्हारा दिन दिन घटत शरीर काल थाने नित प्रति लावे हो  
॥ २ ॥ ईश्वर के ईश्वर कैसे तुम हो हो । बालाजी म्हारा जो ईश्वर कर देय  
थांसू सुप्ने नहीं थावे हो ॥ ३ ॥ चात आपरी निपट अनोखी हो । बाला  
जी म्हारा वंक कहे हो भूप म्हारी बुद्धि चकरावे हो ॥ ४ ॥

राम मंगल । ताल दीपचन्दी ॥

बालाजी म्हारा मन्द जिकां हा भाग वात म्हारी दाय न आवे रे ॥ देर ॥



निजानन्द री सुध नहीं ज्यांने रे । बालाजी म्हारा वण रया ब्रह्म सूं जीव  
 खान मुख छाड चबावे रे ॥ १ ॥ आत्म आप सदा परिपूरण रे । बाला  
 जी म्हारा देह दृष्टि उरधार दीन हो के ललमावे रे ॥ २ ॥ जिण ईश्वर को  
 खोज मुर नहीं है रे । बालाजी म्हारा छण सू डरे दिन रात पते यिन  
 सिमरया ही जावे रे ॥ ३ ॥ कोर् कहे जीव ईश्वर दोनों घट मे रे । बाला  
 जी म्हारा जीव जिंकारो दास ईश्वर उण पर हुकम चलावे रे ॥ ४ ॥ घट  
 है ठोस अवकाश जहां नांही रे । बालाजी म्हारा इतनी जगह कहां पाय  
 जठे जीव ईश्वर मावे रे ॥ ५ ॥ जो अणुअणुत कमी होय जावे रे । बाला  
 जी म्हारा होय परस्पर युद्ध फेर पांने कौण छुड़ावे रे ॥ ६ ॥ दास भोलायो  
 जो काम करे नहीं रे । बालाजी म्हारा ईश्वर काड दे बाहर जीन पाछे कठे  
 जावे रे ॥ ७ ॥ किसेरे लोभ सूं जीव करे नौकरी रे । बालाजी म्हारा  
 किम्बो स्वारथ सिद्ध होष गुलाम जिण सू जीव रहावे रे ॥ ८ ॥ खान  
 पान ईश्वर जो देवे रे । बालाजी म्हारा खान पान में समाय ईश्वर ने जीव  
 कैसे खावे रे ॥ ९ ॥ नौकर जो मालक ने खावे रे । बालाजी म्हारा किणरो  
 नौकर फिर होय इण री म्हांने हांसी आवे रे ॥ १० ॥ म्हारे तो मालक  
 ईश्वर नहीं कोई रे । बालाजी म्हारा मालक नौकर जिके होय वा पर म्हांने  
 दया जो आवे रे ॥ ११ ॥ मव कुछ हम और हम में सब है रे । बालाजी  
 म्हारा हमसे भिन्न कुछ नांय मान नहीं आवे ना जावे रे ॥ १२ ॥

राग मंगल । ताल दीपनन्दी ॥

सैयाण म्हारी चहुं दिश मच रयो शोर, सांवरियो क्यों नहीं आयो हे ॥ १ ॥  
 राग रागणी में मुखी जन गावे हे । सैयाण म्हारी खान उपज करे शोर,  
 प्रभुजी ने भजन सुणावे हे ॥ २ ॥ कई एक भगत नाचे और रुंदे हे ।  
 सैयाण म्हारी नाच मंजीरा बजाय, हरीने चण्णई रिंकावे हे ॥ ३ ॥ भूखे  
 मरे कई लकड़ा घाले हे । सैयाण म्हारो कर कर कई एक खांग, नाना  
 विध भाव दिलावे हे ॥ ४ ॥ क्या तो भगत भूठा क्या हरि नहीं है हे  
 सैयाण म्हारी क्या दब गयो भूकम्प रे मांय, ममन्दरों मे जाय दुबायो हे

॥ ४ ॥ मान कहे म्हारी सुख को नाथजी हो । सैंया ए म्हारी इछरी संशय  
मन मांय, महर कर खोल बतावो हो ॥ ५ ॥

राग मंगल । ताल दीपचन्दी ॥

सैंया ए म्हारी इछ कारण नहीं आयो, सांवरियो रुज्यो यां सूं हे ॥ देर ॥  
नाम तो भगत ए नास्तिक पका हे । सैंया ए म्हारी ऊपर वाले सैण काम  
दुश्मण रो दिखावे हे ॥ १ ॥ एक हरी रा टुकड़ा कीना रे । सैंया ए म्हारी  
फंफर जिता शंकर होय, जिकररे किसड़ो रामजी आवे हे ॥ २ ॥ भूठो  
फलक ए वेचे उछने हे । सैंया ए म्हारी इछ कारण वेने कान आपणो सुख  
न दिखावे हे ॥ ३ ॥ महायोनेश्वर कृष्ण कहीजे हे । सैंया ए म्हारी कहवे  
व्यभिचारी ने चोर, भारत माता शरमावे हे ॥ ४ ॥ विश्व प्रेमी भगवान  
कहायो हे । सैंया ए म्हारी मजहबों रो बार न पार, जिके सूं हरि नहीं  
आयो हे ॥ ५ ॥ कृष्ण बुलावो तो सब मजहब मेंट दो हे । सैंया ए म्हारी  
कादो इछ कचरे न बार, हरी भट दरश दिखावे हे ॥ ६ ॥ श्याम रिभावण  
करे न कोई भक्ति हे । सैंया ए म्हारी जगत रिभावण काज, नाचे और  
गावे बजावे हे ॥ ७ ॥ हरिते रिभावण मान तेवड़ियो हे । सैंया ए म्हारी  
दिया सब धर्मों ने छोड़, स्वधर्म आपणो निज पायो हे ॥ ८ ॥

राग मंगल । ताल दीपचन्दी ॥

सैंया ए म्हारी अनन्त गोप्यों में गोपाल, रास जियरो कबो नहीं जावे ए ॥ देर ॥  
नाम ने रूप सकल है गोर्षा ए; सैंया ए म्हारी चेतन एक गोपाल, सभी  
मांय नाथ नचावे ए ॥ १ ॥ इसड़ो रास तो कोई नहीं देखे ए; सैंया ए  
म्हारी झूदे ज्यूं चेतान, काम केरी आग जगावे ए ॥ २ ॥ स्वारथिया सब  
जगत यहकावे ए; सैंया ए म्हारी खोव दीवी निज लाल, खोयोड़ी फिर  
हाथ न आवे ए ॥ ३ ॥ इसड़ो रास कोई देखण आवे ए; सैंया ए म्हारी  
हरतो रेवे ज्यांस काल, आगेसूं ऊमो शीश नचावे ए ॥ ४ ॥ इसड़ो रास मैया  
ने देलायो ए; सैंया ए म्हारी यशुमति मुख ने टपाड़, देखतं ज्यांरो मन  
अकुलावे ए ॥ ५ ॥ इसड़ो रास पारथ ने दिखायो ए; सैंया ए म्हारी देखो

देखो गीता सम्भाल, राम नहीं छाने जिपावे ए ॥६॥ अखिल ब्रह्माब्द में  
मन ने जोड़ो ए, मैया ए म्हारी साख्ययोग उरधार, जदे वह निजरां आवे  
॥७॥ मानसिंह पेसो रास रमायो ए, सैया ॥ म्हारी सतगुरु मिलिया  
दलाल, आनन्द ज्याने अनुभव आवे ए ॥८॥

तजे डके की । नाल कैग्या ॥

॥ प्ररन ॥

भूपति यह मन होंसी आत्य, कैसे कृष्ण मे विश्व समाय ॥ देर ॥  
कृष्ण हतो जो एक शरीर । थो थो एक हलधर को बीर ।  
कैसे दीनो जगत दिखाय । कैसे कृष्ण मे० ॥१॥

॥ उत्तर ॥

कवि यह कर मत जुन्म अपार, देह दृष्टि मन मे मत धार ॥ देर ॥  
कृष्ण नहीं हलधर को बीर । अखिल विश्व को एक शरीर ।  
योग दृष्टि चित राख प्रचार । देह दृष्टि मन में० ॥२॥  
क्या उन योग समाधी कीन ; क्या उन बकनाल मग लीन ।  
इतनी समय बहों थी पण नांय । कैसे कृष्ण मे० ॥३॥  
स्वतः समार्थ स्थित गोपाल । रहत एक रस मे हर हाल ।  
नही जाये नर भूट गजार । देह दृष्टि मन में० ॥४॥  
फिर वह योग अवर क्या थाय । सो हम को दीजे समभय ।  
जब मेरे मन मे पत आय । कैसे कृष्ण मे० ॥५॥  
जगत अनन्त परिाष्ट बताय । सो है अपने मन के मांय ।  
राम सुन्यो यह चार ही बार । देह दृष्टि मन मे० ॥६॥  
यो ही कृष्ण विराट स्वरूप । देखो पारय अपणो रूप ।  
मिट गया जिण रा द्वैत बिचार । देह दृष्टि मन में० ॥७॥  
बंक कहे दोनों कर जोड़ । शुद्ध भूर्दे भूपति मति मार ।  
लीयो रूप विराट ने पाय । कैसे कृष्ण मे० ॥८॥

पाय लीयो सो दीयो नहीं खोय । आप ही अपणो रयो तू सोय ।  
 आप ही दी है नींद उवार । देह दृष्टि मन में ॥६॥  
 मान कहे अब ही पहिचान । गई सो गई रही पर ध्यान ।  
 तो उत्तरे भव जल से पार । देह दृष्टि मन में ० ॥ ०॥

तर्ज डंके की । ताल कैरा ॥

सुण सुण अमर पियाजी री नार; किण कारण भटके तू बार ॥ ६॥  
 जिण से प्यारी तू नेह लगाय । ये तो अन्त रहन के नाय ।  
 तेरो सो अमर सदा भरतार । किण कारण भटके तू बार ॥ १॥  
 अमर पिया ने शीनो त्याग । भुखदों संग में रही तू लाग ।  
 सुरसो द्वैत रो लीनो सार । किण कारण भटके तू बार ॥ २॥  
 अस्तल पिया ने गई तू भूल । नकली मांय रही तू भूल ।  
 धार विषय को तन शृंगार । किण कारण भटके तू बार ॥ ३॥  
 जिनको तू अपना कर माने । जिन से हेत अति तू ठाने ।  
 ये सब हैं दो दिन के बार । किण कारण भटके तू बार ॥ ४॥  
 सुख सुख करती गोता लाय । सुख तो है तेरे घर के मांय ।  
 क्यों बाहर कर रही व्यभिचार । किण कारण भटके तू बार ॥ ५॥  
 नहीं बालक नहीं वृद्ध जवान । नहीं दाना और नहीं नादान ।  
 सदा एक रस सुख सरदार । किण कारण भटके तू बार ॥ ६॥  
 देवनाथ नित तोय समझाय । मान भूल में तू दुख पाय ।  
 महान मिल्या विन पड़सी भार । किण कारण भटके तू बार ॥ ७॥

रग भैरवी । ताल तिताला ॥

भार बड़ी अलबेली; मिली एक नार बड़ी अलबेली ॥ ६॥  
 काहू की बेटी न काहू की, न वो काहू की बेली ।  
 हरदम रहे वो साथ पुरुष के, पलक न रहत अकेली । मिली ० ॥ १॥  
 अजय विचित्र स्वभाव भार को, नहीं सखी नहीं बेली ।  
 नाच नचाव अपने मन चाये, बरजी नांय रहेली । मिली ० ॥ २॥

इण नारी प्रीतम वश कीनो, होई फिरे रंग छेली ।  
 परणी कंवारी कुद नहीं कहिये, भोगत भोग नवेली । मिली० ॥३॥  
 भोग भोग सब जग उपजायो, फिर निकलक रहेली ।  
 जानन चाहे कोई याके पावको, तो पहिले इन मति लेली । मिली० ॥४॥  
 देवनाथ गुरु दया करी जद, समझी गुरव सहेली ।  
 मानसिंह ले राह हम इनकी, ब्रह्म राह फिर भेली । मिली० ॥५॥

रग माइ । ताल दादरा ॥

पीणो तो घृत ही पीणो, मरके जीणो, छाछ तो पीणी नाय ।  
 पीणो जितनो हजम होय आय ॥ टेर ॥  
 वेद शास्त्र को दूध दुयो तुम, राखो बुद्धि गाय ।  
 नित्य विचार के माद जमायो, जरणा को दकण लगाय ॥१॥  
 मांग्यो ड्यारो घृत पिये कुण, फिर फिर पाछो चुकाय ।  
 भ्राम उरवास विलोय अहम् पद, तुरिये घर रे मांय ॥२॥  
 मन बाझड़िये ने सबलो रातो, जब दूजेला गाय ।  
 ब्रह्म विचार रो देखो बांटो, जद निन आनद आय ॥३॥  
 नत्थमसि री आग तपायो, छाछ सभी जर जाय ।  
 घृत निकाल के खोट न आवे, पीयन अमर होय जाय ॥४॥  
 जीय पण्हेरी है कमजोरी, धीरे धीरे मिट जाय ।  
 संकल्प त्रिकल्प रोग लग्या है, कमजोरी मांय सताय ॥५॥  
 सतगुरु सग्या भेट ने पीजो, सत वां सुं मिल जाय ।  
 कुड़े गुरु सुं कंदई मत पीजो, पीयोडो गुण नहीं आय ॥६॥  
 नाथजी पायो मोय समझायो, जुगती दी दरसाय ।  
 मान महान लग्यो दीरघ रोग यह, हमके दियो मिटाय ॥७॥

रग माइ । ताल दादरा ॥

म्हे तो नित परयो न्हावों, मौज उडावों, बाहर कुण म्हारे जाय ।  
 म्हाने जम रो डर नहीं आय रे । म्हे तो नित परवी० ॥टेरा॥

नित सोमोती ने नित संक्रांति, एक जैसी दरसाय ।  
 क्या जो मकर की क्या जो कुम्भ की, मेप की कौन कहाय रे ॥१॥  
 कुण जय बोले ने कुण न्हावे गंगा, कुण न्हारे विपत उठाय ।  
 आशा नृपणा गंगा में दूबने, कुण न्हारे जनम धराय रे ॥२॥  
 कुण न्हावे कुम्भी ने कुण अर्थ कुंभी, कुण न्हारे भीड़ मगाय ।  
 ब्रह्म महन्त री निकसी सशरी, नित उठ दरसण पाय रे ॥३॥  
 मन हस्ती पर ब्रह्म सशरी, अनहद वाजा बजाय ।  
 ज्ञान के घाट में न्हावण कीनो, आनंद काँधो नहीं जाय रे ॥४॥  
 हिमगिरी सँ गंगा चाली, भारत भूतल मांय ।  
 सागर ताँही पहुँची जितने, अनन्त ही नगर तिराय रे ॥५॥  
 एण गंगा सँ निपजी अनन्तो, भूतल वस्तु अपार ।  
 जिण सँ भारत उधरयो सारो, भयो भूख सँ पार रे ॥६॥  
 देह की मुक्ति अन धन करके, इण गंगा सँ होय ।  
 जीव की मुक्ति पावे जद ही, ज्ञान गंगा न्हावे जोय रे ॥७॥  
 नाथ को साथ भयो जद न्हारे, अमर स्नान कराय ।  
 मान फेरे पेसी गंगा में न्हायो, नाथ स्वरूप समाय रे ॥८॥

॥ सबैया ॥

भरत श्रेष्ठ रघुकुल सगर-जिनके, सुत का गंग कीन उदारी ।  
 श्री मन्नागवत देव प्रमाण है सो तुम भूठ कहो किन सारी ।  
 बक कहे यह बात जो बाँकुरी तहाँ नहीं पहुँचत मुखि हमारी ।  
 के तो नरेन्द्र हमें समझावो नहीं तर मूठी यह बात तुम्हारी ॥

॥ सबैया ॥

रे कवि बाबरो है तू तो अब बात लखे नहीं अन्तर मेरी ।  
 एक बेर को कइ कहूँ समझाय दियो तोहे बेर ही बेरी ।  
 भूल गयो कवि फेर कहूँ तोहे जीम घसे कुल भी नहीं मेरी ।  
 उन इन गंग को अर्थ कहूँ तू देके देखले दिल में फेरी ।

मान कहे फिर भी नहीं मानहि ना अपने दिल अन्दर हैरी ।  
तो मेरो कुछ दोष नहीं कबिराज होवेगी भूल जो तेरी ॥

॥ दोहा ॥

सगर गुनन के कारणे, भागीरथ गंग लाय ।  
सो कबिराज भूठी नहीं, परनक देत दिखाय ॥  
रुक्ति भई इष्ट कारणे, विवर सोच विचार ।  
सगर के सुत बधरे कहा, भारत डियो उद्धार ॥

तर्ज बाणी की । ताल कैरवा ॥

साधो भाई तन धोया मन मैला होजी । तन धोयां सूँ काम नहीं चलसी,

जमरा डण्डा पड़ेला रे । साधो भाई तन धोया ॥८६॥

समता रो सावन ज्ञान नीर कर, करणी री कुन्बी हँला होजी ।  
श्यासोरवास मार फटकाया, सुरत शिला, रगडेला रे ॥८७॥  
ममतारो मैल मेढ भया बजला, गमरी गेरु रंगेला होजी ।  
बे किचरी री लगी फिटकड़ी, दिन दिन दूखो घुटेला रे ॥८८॥  
जब तक मन मैलो रहे मांही, जब तक चोँही भटकेला होजी ।  
साचे गुरु बिन मैल कृष्ण धोवे, दुविधा नांय हटेला रे ॥८९॥  
समस्त विचार सार लख ३२ मे, गुरु मुख ज्ञान सुणेला होजी ।  
सुन कर ज्ञान ध्यान सूँ धारे, बे नर नांय बरेला रे ॥९०॥  
ऐवनाथ को साथ कियो जद, अब क्या सहाय रहेला होजी ।  
मान दधान कियो मुरधनी पर, निभय निसाण बजेला रे ॥९१॥

॥ दोहा ॥

बंक कहे सुन भूपति, कौन है जमको दण्ड ।  
जम तो कुछ भी है नहीं, यह क्यों कहो पाखण्ड ॥

सचैया

जात तो सत्य है मूठ नहीं, ना जम है थौर ना दण्ड जो छोई ।

अपनी करणी आप संकल्प कर, आप खडो जम करके जोई ।  
 संकल्प मांय भयो जम राजा, संकल्प पाप कियो दुख सोई ।  
 संकल्प में पुनि दंड मिले, और संकल्प में दुखी होय के रोई ।  
 मान कहे जव ज्ञान भयो, जमराज गयो तब दंड भी खोई ।  
 अपना खेल यह आप करे, और आप ही एक हुयो है दोई ॥

राम भावुली की । ताल दीपचन्दी ॥

साजो भाई म्हारी छिल रही प्रेम तलाई । सत रो सावण भाव  
 घरयो भादू; अब जल मावे नाई ॥ ८८ ॥  
 शील सन्तोष पाज गजयूती; दूटे नहीं लाख उपाई ।  
 निश्चय रा वृक्ष चारों दिस ठाढ़ा; होय रही असख नित आई ॥ ८९ ॥  
 करुणा कमल नीर पर छाया; फूल सम्या बेफिकर आई ।  
 छाई विचार बेल बहो दश दिस; सत्तरी कसोद सवाई ॥ ९० ॥  
 चित चौकीदार खडो रहे हरदम; चौकस राखे सवाई ।  
 कुम्भ रा काग आवण नहीं देवे; ममता री मछियां कड़ाई ॥ ९१ ॥  
 आशा ने कृष्णा, काम्पण लागी; समता इनमें समाई ।  
 तत्त्वमसी धुन कोयल बोली; कैसी छटा छवि छाई ॥ ९२ ॥  
 अगम सिंहासन सतगुरु बैठा; भूले और भूलाई ।  
 धुति स्मृति निरति नार मिल; भीठा मंगल गाई ॥ ९३ ॥  
 आवण जावण रा फल दोय छोड्या; अब में लेजे नाई ।  
 शीश नारेल चंदायो जिनको; तत्त्वं परसादी पाई ॥ ९४ ॥  
 भाव भादू के अन्त मांयने; यूँ एकदशी भ्याई ।  
 हे इग्यारह व्रत यूँ यापीया; अब छिलके मुलके नाई ॥ ९५ ॥  
 गो अतीत गोपाल संग में; रावे संग प्यारे आई ।  
 मान चरित्र देख्यो हम ऐसो; दीनो है मान गुमाई ॥ ९६ ॥

राम परज । ताल घमाल ॥

यामें वही नर नहावे, भरयो है दधि जो अनन्त रे ॥ ९७ ॥



देली निर्भय भई है डंके चोट । अब पाप पुन सब गया है खूट ।  
 रंग प्रीतम प्यारी रया है घोल ॥३॥  
 अब मेट दिया भली जीव जीव । अब जहाँ देखूँ जहाँ पीव पीव ।  
 जब लियो है आप में आप खोल ॥४॥  
 स जी चहुँ दिश देख्यो मान मान । अब मान बिना कोई मिल्यो न आन ।  
 सखी मान मान तज लियो है मोल ॥५॥

राग काफ़ी । ताल दीपचन्दी ॥

मना अब स्थिर होय बैठो, नाच थक्यो दिन रात ॥६॥  
 जब नक भनवो नाचग्य लागो, कियरी सुनी नहीं पात ।  
 आप सुनी न सुनन नहीं देखो, हाकोई हाक मचात ॥७॥  
 यह तो नाचे पर हम नहीं नाचें, बिध बिध किया उत्पात ।  
 यह थाक्यो अब हम नाचेंगे; खुद मस्ती सुख पात ॥८॥  
 हम नाचें अथ उन मुन धुन में, जहाँ मन आव ॥ जात ।  
 मेरे पीच मन मोल सके नहीं, चुप गूंगे गुड खात ॥९॥  
 मैं मेरो जहाँ मन नहीं पहुँचे, चारो वेद थक जात ।  
 मन धुरो अब क्या जोवेगो; सुपने न आऊँ या के हाथ ॥१०॥  
 जब तक इण मन को बरा पूगो, तब तक रयो अनाथ ।  
 नाथ के साथ तज्यो सग मन को, हो गयो मान सनाथ ॥११॥

राग काफ़ी । ताल दीपचन्दी ॥

अब हम असल न्यौपारी, ऐसे बने हैं बजाज ॥६॥  
 मेरी वस्तु मिले न किसी में, सब वनियों के सरताज ।  
 मेरी दुकान बन्द नहीं होवे, होवे तो बिगड़े काज ॥७॥  
 मेरे यहाँ कमी नहीं कछु भी, जो चाहे ले साज ।  
 मेरा भेद लखे कोई भेदी, फरत तुरीय पद राज ॥८॥  
 मुझसे वनिज बड़ी कर सकता, छोटे जगत की लाज ।  
 सब धर्मों को मुझ में मिलावे, तोड़ धर्म की पाज ॥९॥

खरे दलाल मिले मोहे ऐसे, देवनाथ महाराज ।  
मानसिंह इस विश्व समुद्र में, निर्भय चले मेरी बहाज ॥१॥

राम काफ़ी । ताल कैरवा ॥

रंगीलो चण कोई आवे; छत्र पर डोलूँ रंग ॥टेरा॥  
मेरो रंग चढो नहीं खरे; जाणो मत रंग पतंग ॥१॥  
समस्त विचार धार कोई आवे; मरजीबों के संग ॥२॥  
जागूँ लुटो ही रँग मेरो कहिये; दूटे सिध्या प्रसंग ॥३॥  
जो कोई आया क्यौने पूछो; सब सूँ होय निशंक ॥४॥  
मान यूँ साथ नाव रो कीयो; बाजी है अनुभव चंग ॥५॥

राम काफ़ी । ताल दीपचन्दी ॥

रंग घरसे चहुँ ओर; भीजे कोई तार सुभागी ॥टेरा॥  
रंग को छोड़ कीच बिच जावे, देखे कर्म कठोर ।  
जन्मो जन्म कीच पण चाहत, होय रही मति-भोर । भीजे कोई० ॥१॥  
जो लागी सो लाग गई रे, जैसे चन्द्र चकोर ।  
लाल ग में होय रही लाली, होय रही चित ओर । भीजे कोई० ॥२॥  
ऐसे पिया संग खेली होरी, नहीं कोई बाह फिशोर ।  
प्रौढ़ और धृढ़ कछू नहीं सजनी, रूप अवर को और । भीजे कोई० ॥३॥  
देवनाथ गुरु हाथ पकड़ के, ले लियो अपनी ओर ।  
मानसिंह निर्भय की होरी, मिट गयो जम को ओर । भीजे कोई० ॥४॥

राम काफ़ी । ताल दीपचन्दी ॥

नाथ मैं अखण्ड कुमारी, रंग मत छोरो मोय ॥टेरा॥  
मैं हूँ कुमारी वाला विचारी, भेद न जानूँ कोय ।  
रंग मत छोरो जगत हंसेगो, समझाऊँ मैं तोय ।  
आई हूँ मैं शरख तुम्हारी । रंग मत छोरो मोय ॥१॥  
बावरी क्यौं मन शंके, फिक्कर देय सब खोय ॥टेरा॥

तू है कुमारी बाला बिचारी, तो हम परणो नहीं कोय ।  
 आज तोय हम एक करोगे; देगे दोय को खोय ।  
 हमी है ऐसे ढग के । फिकर देय सब खोय ॥२॥  
 तुम हो पुरुष और मैं हूं नारी, दूर रहो मो से सोय ।  
 यह ससार जाने नहीं तुमको; मेल मोय पर होय ।  
 लगे जिनको डर भारी । रंग मत डारो मोय ॥३॥  
 नारी पुरुष भाव तेरे मन के, भेट देऊँ सब खोय ।  
 भेद मिठाव एक रंग करदूँ; आन मिलाऊँ तोय ।  
 रहूँ नित ही विन अंग के । फिकर देय सब खोय ॥४॥  
 धरजत बरजत रंग तुम डारयो, रंग में दीनी डुबोय ।  
 भली बुरी सो है सब तुमको; मैं तेरे रंग गई होय ।  
 भूल गई सुध दुध सारी । रंग मत डारो मोय ॥५॥  
 कहाँ है जगत कौन है कैसो, नाहक रही क्यों रोय ।  
 तू ही है तू अब और सप मिट गया; मेल दिया सब धोय ।  
 होय गई रंग मेरे रंग की । फिकर देय सब खोय ॥६॥  
 ले दरपण अपनो मुस देख्यो, पिय में मिल गई सोय ।  
 पीव जीव और जीव पीव भयो; न्यारो रयो न कोय ।  
 नाथ थारी जाऊँ बलिहारी । रंग मत डारो मोय ॥७॥  
 पीव और प्यारी न्यारी कहाँ अब, भेद रयो नहीं कोय ।  
 देवनाथ ऐसे एक रंग होनो; बुरी कहे नहीं कोय ।  
 डरो नहीं जम के जंग से । फिकर देय सब खोय ॥८॥  
 एका एक भेद सब छेक्या, जीव ब्रह्म में पोय ।  
 मान मिट्या अब मान भयो है, अपणी रूप जग जोय ।  
 भेट दी न्यारी न्यारी । रंग मत डारो मोय ॥९॥

रंग काफ़ी । ताल दीपचन्दी ॥

होरी में सुरता गोरी, अब अटकेगी नांय ॥टेरा॥

खेतन को निकसी जद-घर से, पुरो भाव जमाय ।  
 जो आवे कोई मुझसा कहंगी, एक रंग बीच लुहाय ॥१॥  
 पंथा पंथ के डफर बापुरे, कैसे सकेंगे बजाय ।  
 ज्ञान को डोल बजेगा मेरो, सब की शान गमाय ॥२॥  
 मंग शराब नशे घड़ी दोय के, इनकी त कव नाय ।  
 ब्रह्मानन्द मद जरपो निकरूँ, कोई मद नहीं ठहराय ॥३॥  
 पामर जीव भेड़िये बपुरे, मेरे निकट ना आव ।  
 ऐसी धाक कहूँ बाघन सी, फाट फलेजो जाय ॥४॥  
 देवनाथ गुरु सिंह शरोबर, उन संग मंगल गाय ।  
 सानसिंह कहे सुरत सहेजो, अबर ताप सहे नाय ॥५॥

रग काँची । ताल धमाल ॥

अब देखी रे सम होय कर रेणो; सारों सूं मिलने बेणो रे ॥देर॥  
 अपणो रूप समझ सारे जग ने, कटुक वचन नहीं केणो । सारा सूं ॥१॥  
 भेदाभेद छेद कर मन सूं, दुख सुख सिर पर सेणो । सारों सूं ॥२॥  
 हरदम निर्मल मैल नहीं राखो, मारग सीधे निव बणो । सारों सूं ॥३॥  
 मान कहे मानो ना मानो, मेरो तो सब ही से केणो । सारों सूं ॥४॥

रग काँची । ताल धमाल ॥

अब जागो रे समझकर जागो; मारग निज लागो रे ॥देर॥  
 पन्थापन्थ में बहुत दिन भटक्या, अब तो अलगो त्यागो । मारग ॥१॥  
 होय स्थायीन-निसंक रहो-नित, तोड़ मरमता रो धागो । मारग ॥२॥  
 परायीनता में बहुत दिन बीता, बिछुड़ गयो निज सागो । मारग ॥३॥  
 भाग-भाग कर फित भटकतो, यो ही देखेला निरभागो । मारग ॥४॥  
 नाथ को साथ मान मन मान्यो, मिल्यो जिस सोनो सुहागो । मारग ॥५॥

रग काँची । ताल धमाल ॥

यो नोको रे बड़ा सद नोको; भीठो नहीं फोको रे ॥देर॥

ओ तो ब्रह्म मद ऐसो कहिये, प्राण सदा शिवजी को । मीठो० ॥१॥  
 चार वेद पद शास्त्र उपनिषद, है मन्त्र ही को टीको । मीठो० ॥२॥  
 ओ मद पिया जिके सब दुख त्याग्यो, भाव मिटायो मनसुं जी को । मीठो० ॥३॥  
 शीरा छतार कोई ओ मद पीवे, होवे हजम मन ही को । मीठो० ॥४॥  
 मानसिंह ऐसो मद पीयो, आनन्द लियो है धामी को । मीठो० ॥५॥

रग कापी । ताल चमाल ॥

कोई चढ़िया रे ज्ञान घोड़े चढ़िया; बार कई चढ़िया रे ॥टेरा॥  
 पढ़ गुड़ कर असवार हो गया; जाय काल सुं अढ़िया । बार कई० ॥१॥  
 होय अलबेला तोड़ सब बंधन; तुरिये पद ने खढ़िया । बार कई० ॥२॥  
 जीवत मरे जिके नर चढ़िया; शीरा काट कर धरिया । बार कई० ॥३॥  
 जीवत मरने जीय गया वे, फिर किये सुं ई नही मरिया । बार कई० ॥४॥  
 मानसिंह असवार एक रत; मोह मोह की करिया । बार कई० ॥५॥

रग कापी । ताल चमाल ॥

आनन्द आयो रे अमर सुख पायो; कपट बिसरायो रे ॥टेरा॥  
 नित्यानन्द ने भूल दुखी भयो; अपणो भान भुलायो । कपट० ॥१॥  
 निज को भूल देह बन बैठो; अवर अवर नित गायो । कपट० ॥२॥  
 अपणी अवर पड़ी है अबके; चूर नरो बिच दायो । कपट० ॥३॥  
 कृष्ण कलाल ले ज्ञान भट्टी सु; अजब अरक निकसायो । कपट० ॥४॥  
 मोई अरक अर्जुन निज पीयो; फिर धनु हाथ बढायो । कपट० ॥५॥  
 सो यदुमाथ नाथ रूप होय; मान को निकट गुलायो । कपट० ॥६॥  
 बरजत बरजत पायो ब्रह्म मद; देह को भाव छुढायो । कपट० ॥७॥  
 मानसिंह भयो ब्रह्म दिवानो; कोई आवे ताही फेर बनायो । कपट० ॥८॥

रग गारगलूवर । ताल बैरवा ॥

हेड़ी झग ने अमर बीन्द परणायो रे । सुरसा ने ॥टेरा॥  
 मत्त बचनो भूँ करलो सगाई । सम सन्तोष सदा मन मांही ।

हेजी अब निश्चय नारेल मलाओ रे । सुरता ने ॥१॥  
 पांच विषय रो टीको दे दो । पंच कोश के गांव भी दे दो ।  
 हेजी अपणे चित मांय चँवरी मंडाओ रे । सुरता ने ॥२॥  
 विवेक बरी ज्याने षण्णी सुहावे । बागो विचार बीद मन भावे ।  
 हेजी ज्यारे आनन्द मुकुट सजावो रे । सुरता ने ॥३॥  
 बेफिकरी रा फूल बणावो । सुगन्ध सेवरा खुब सजावो ।  
 हेजी ह्यों दोनों रे गल पहनावो रे । सुरता ने ॥४॥  
 मन हस्ती ज्यारे आगम अम्बारी । ब्रह्म बीद ज्यारी निकसी सवारी ।  
 हेजी उठे अनहद बाजा बजावो रे । सुरता ने ॥५॥  
 पांच तत्त्वों पर तोरण बन्धावो । उतरवो बीद चौक में आयो ।  
 हेजी ज्यणे निरती निरल सरावो रे । सुरता ने ॥६॥  
 गुरु आश्रय चवरी में आया । माया ब्रह्म रा हाथ जुड़ाया ।  
 हेजी उठे वृत्ति मंगल गावो रे । सुरता ने ॥७॥  
 तत्त्वमसि का मन्त्र सुणाय । तूही है तूही है यह सुण पाया ।  
 हेजी जद अन्तर आनन्द आवो रे । सुरता ने ॥८॥  
 शीन्द बियाह आया जनवासा । तुरिया महल में किया निवाहा ।  
 हेजी जद हँस घूँघट उचड़ावो रे । सुरता ने ॥९॥  
 उपहुँचा घूँघट पट हो गया एका । आप ही आप और नहीं ।  
 हेजी फिर प्रीतम बीच समावो रे । सुरता ने ॥१०॥  
 सुरता प्रीतम हो गया भेला । बिखर गया सब ।  
 हेजी अब सब अपने घर जावो रे । सुरता ने ॥११॥  
 मानसिंह अब फास सब तोड़ी । ना कोई ।  
 हेजी अब जगत् ब्रह्म दरसावो रे । सुरता ने ॥१२॥

हेजी ज्यांने जम रो खर नहीं आयो रे । मद् छकिया ॥१॥  
 चूर नरो में कुछ नहीं सुके । अपणो आप आने बूके ।  
 हेजी ज्यांने दुजो नहीं दुसायो रे । मद् छकिया ॥२॥  
 अपणो आप में लागी होरी । सामी मिल गई सुरता गोरी ।  
 हेजी तब भट एक रंग बनायो रे । मद् छकिया ॥३॥  
 गली तो सांकड़ी में मावे नहीं दोई । पीछी धिरे सो अति दुख होई ।  
 हेजी अब चौड़े लाज उड़ायो रे । मद् छकिया ॥४॥  
 एक बरोबर मिल गई जोड़ी । माया ब्रह्म री दुविधा तोड़ी ।  
 हेजी अब माया ब्रह्म मिलायी रे । मद् छकिया ॥५॥  
 हो गया एक छेक दी दुविधा । जीव भाव री भिट गई कथधा ।  
 हेजी अब अपणों ही मंगन गायो रे । मद् छकिया ॥६॥  
 मद् छक भया अब कुछ नहीं चोले । अखिल विश्व ने कांटे तोले ।  
 हेजी अब विश्व विजय पद पायो रे । मद् छकिया ॥७॥  
 मान कहे मैं सग अलबेला । ना कोई गुरु और ना कोई चेला ।  
 हेजी अब जल बिष तरंग समायो रे । मद् छकिया ॥८॥

राग सारंग-लहर । ताल वैरवा ॥

हेजी म्हांने निजपुर फग खेलागे रसिया; ले चालो ॥१॥  
 काम क्रोध म्हे तो सब ही त्याग्या । कुलद्वन्द्व म्हार सुणवांई भाग्या ।  
 हेजी म्हांने प्रेम पियाला भर पावो रसिया । ले चालो ॥ १ ॥  
 आदि सनातन सुणियो तुमारो । जिण सूं जीय ललपाय हमारो ।  
 हेजी म्हांने जीय सूं म्द्र बनायो रसिया । ले चालो ॥ २ ॥  
 तुम सो पाव न मुम्ह सी नारी । औरन के सग जिमे न यारी ।  
 हेजी म्हासूं अब के भेद मिटावो रसिया । ले चालो ॥ ३ ॥  
 यांसु तूवर पणी सुहावे । और भेद सगला मिट जावे ।  
 हेजी म्हांने अपणे बीच रलावो रसिया । ले चालो ॥ ४ ॥  
 मैं हूं कुमारी ये ब्रह्मचारी । आदि अनादि प्रीत हमारी ।

हेजी म्हांने अबके मत्त छिट्कावो रसिया । ते चालो ॥ ५ ॥  
 न्हे थारे संग घूमर लेसां । थारे मुँह में न्हे मिल रहसां ।  
 हेजी अब भाया ब्रह्म भेद मिटावो रसिया । ते चालो ॥ ६ ॥  
 आपां दोई छल नगरी रा बासी । जहाँ पर रहत मुँह नित दासी ।  
 हेजी अब भूलां ने फेर बत्तायो रसिया । ते चालो ॥ ७ ॥  
 मान फेइ रहूँ नित अलबेली । नाथ साथ बिन रहूँ न अकेली ।  
 हेजी म्हांने अब भव दूर हटावो रसिया । ते चालो ॥ ८ ॥

राग सारंग-लखर । ताल कैरवा ॥

हेजी थाने कौन करी म्हांस न्यारी दुख पायो ॥ १ ॥  
 न्यारो भेद दोय में आयो । जेद ये संगलो जगत रचायो ।  
 तू ही बणी पुरुष नारी । दुख पायो ॥ १ ॥  
 तब-मम घूमर होत सदाई । अखिल बिदेव भूमे इण भाई ।  
 तू भूल भई छोड़ि दुख भायी । दुख पायो ॥ २ ॥  
 नित लखर तुम हम संग लेवो । जगत खेल में ज्यों सित देवो ।  
 तेरी मेरी अमर नारी । दुख पायो ॥ ३ ॥  
 आदि सनावन फदे न दूटे । ऐसी मौज कोई ज्ञानी लूटे ।  
 क्या जाये मर व्यभिचारी । दुख पायो ॥ ४ ॥  
 निजपुर निश्चय कर मन मोई । ही सर्वत्र आपे तू सोई ।  
 अपणें आप बखी तू न्यारी । दुख पायो ॥ ५ ॥  
 तू ही है नाथ नाथ हे तो में । मैं हूँ तुम में तू हे मो में ।  
 जैसे महदी में खाला इकसारी । दुख पायो ॥ ६ ॥  
 देवनाथ गुरु रात मिटाई । मान-महल मान डेरसाई ।  
 दूर कियो विष रस खाते । दुख पायो ॥ ७ ॥  
 राग सारंग-लखर । ताल कैरवा ॥

हेजी येतो समझ सैन घर आवी सज्जनी । घर आवो ॥ ८ ॥  
 चोर नगरिया फाहे को जावो । पोल-पन्थ में क्यों शान गमावो ।



राग मारंग तर्ज होली के रसिये की । ताल कैम्बा ॥

हारे खेलण आई रे, दुनिया री राका दूर हटाई रे । खेलण आई रे ॥८॥  
 लौक लाज कुज री मरयादा सबने दिवी मिटाई रे ।  
 प्रेम पीताम्बर पहर सखी मन में समगाई रे । खेलण० ॥९॥  
 सतगुरु मिलिया सामने स जद आगे होय धतलाई रे ।  
 आज फगण रे चौर में न हण हिमत बंधाई रे । खेलण० ॥१०॥  
 सतगुरु शब्द सुण्या जद सुरता मंद मंद मुक्काई रे ।  
 भर पिचकारी मार शब्द री तर होय जाई रे । खेलण० ॥११॥  
 गाय पिचकारी भीजी रँग में ज्ञान गुलाल उड़ाई रे ।  
 लाल ही लाल दूजा रँग मिट गया एक रँग माई रे । खेलण० ॥१२॥  
 वाद-विवाद-छूटे पिचकार-यां तन-मन सुध बिसराई रे ।  
 धर धर धर धर कप रही मनकी सुधि नाई रे । खेलण० ॥१३॥  
 बचन धिलास थाक गया सगला मुख से ओले नाई रे ।  
 बे-गम होय गुरु चरणों में जा लिपटाई रे । खेलण० ॥१४॥ --  
 शरण जाण सतगुरु यूँ उणने अपनी गोद बिठाई रे ।  
 गोद बैठाय भेल अन्तर में मेठ जुदाई रे । खेलण० ॥१५॥  
 मान बहे मेटी सब ममता दना भेद भगा रे ।  
 आप आप में आप भई अब आव न जाई रे । खेलण० ॥१६॥

राग मारंग तर्ज होली के रसिये की । ताल कैम्बा ॥

हारे सुरता गैली रे, हो गई रे आ मनडेरी चेली रे । सुरता गैली रे ॥८॥  
 भरम फग विच रात दिवस-आ होय रही अलवेली रे ।  
 अकलहीण री आकूनी-मुट्टी भर ले ली रे । सुरता० ॥९॥  
 वण आश्रम री भूल भंग हण भर भर प्याली पी ली रे ।  
 अपने आपने भूल संग जीव रो कर चाली रे । सुरता० ॥१०॥ --  
 भूठ भगवे री मोली लेने होय गई अलवेली रे ।  
 अन्या धुन्ध री गुलाल छण मोली में ठेली रे सुरता० ॥११॥

देवनाथ गुरु बड़े परिश्रम-सँ सुरता से मेली रे ।  
 दौड़ दौड़ कर बाहर जाती ने घूर में लेली रे । सुरता० ॥४॥  
 मानसिंह कहे अवे रेवे ध्यू जो आ रहती पहली रे ।  
 तो जन्म मरण रा बन्ध तोड़ हो जात अकेली रे । सुरता० ॥५॥

रंगे सँ रंगे तर्ज होली के रसिये की । ताल कैवा ॥

हारे हा निज अपणो रे, ममता रो अवके नाश करणो रे । रूप निज० ॥६॥

घणा जन्म हो सुफल गमाया, अवके नहीं गमायो रे ।

झपुरी रो पटो लिखा कर राज जमायो रे । रूप निज० ॥७॥

घणा दिवस तक मरणा ने जनम्या अब नहीं आयो जायो रे ।

निज आनन्द मित्या पीछे नहीं और दिखायो रे । रूप निज० ॥८॥

जीव जीव को भगदो पड़ियो ओ अवके निमटायो रे ।

ब्रह्म स्वरूप निजानन्द भाई चट मिल जायो रे । रूप निज० ॥९॥

दूध में घृत और मीठो खाँह में जल में तरंग समायो रे ।

बुरफ बली ध्यू पाणी हो पाणी बह जायो रे । रूप निज० ॥१०॥

ममता नार नखराली इण तो जीव रो भाव जमायो रे ।

देह भाव मिट निज में करणो ठौढ़ ठिक्कायो रे । रूप निज० ॥११॥

मत्त मन उलझ रयो जग सारो मनरो खोज बढाओ रे ।

वे फिकरी में होय हमेशा फागण गाओ रे । रूप निज० ॥१२॥

देवनाथ गुरु हाथ गहो जद पल में कियो पयाओ रे ।

मनसिंह चढ सोहन शिखर पर दोल घुराओ रे । रूप निज० ॥१३॥

तर्ज रंगे के गीत की । ताल कैवा ॥

धूमे मतवालो आप निरालो दुनियाँ मांय ने । आप निरालो दुनियाँ मांयने,  
 ए हाँ हाँ हाँ हाँ । धूमे मतवालो० ॥६॥

बिना देह बिन देव है सरे, ना कोई श्वास शरीर । हाँ हाँ बिन० ।

खेल अत्रिन्दत खेल रयो स, इण भव सागर रे तीर । हाँ हाँ खेल० ।

सब कुछ खेल रहे नित भग्यो तेने तेने । धूमे मतवालो० ॥१॥

तरह तरह के साज बजावे आप रयो नित गाय । हां हां तरह तरह० ।  
 नाचे निरन करे ओ अंग बिन, देखे कोई कोई पाय । हां हां नाचे० ।  
 जो देखे सो देखे 'छणने, जीवतदो मर जाय रे । घूमे मतवालो० ॥२॥  
 जीव ही ब्रथ ब्रह्म सो जीव है, यों करके कोई जाये । हां हां जीव ही० ।  
 मान गुमान भेट कर सगला, मन चिन्ता नहीं आये । हां हां मान गुमान० ।  
 जद घगुधैव कुटम्बकं जाणे, निर्भय मौजां मांणे रे । घूमे मतवालो० ॥३॥  
 अपणो आसंक आप हैस ओ, रीके आप के मांय । हां हां अपणो० ।  
 आप आपने भूल गयो स ओ, जीव होय दुख पाय । हां हां आप आपने० ।  
 आप आपरी लखर करी जद, दूजो दरसे नांय रे । घूमे मतवालो० ॥४॥  
 नहीं नारी नहीं पुरुष है स ओ, नहीं गृहस्थ सन्यास । हां हां नहीं नारी० ।  
 मय घट उण मै रहत है स कोई, सब घट छणरोवास । हां हां सब घट० ।  
 जैसे कुभ जलो जल बैठो, जल ही जल में बास रे । घूमे मतवालो० ॥५॥  
 देवनाथ सतगुरु मिल्या स म्हांने, दीनो परम विवेक । हां हां देवनाथ० ।  
 मान ओलखो आपने स अब, मार देख पर मेख । हां हां मान० ।  
 घर बैठों ही मिल गयो स म्हांने, कौण घरे अब भेष रे । घूमे मतवालो० ॥६॥

तजं गरबा गुजराती । काल हैरवा ॥ ... ..

ओ तो अमर बनदे ने सुरता पावियो रे । घर मांही अपणे  
 पीब ने रीमबियो रे । टिरे ।

दे तो कइयक मरिया ने कइयक जन्मिया रे ।

दे तो रोखे हंसणे मे दुख पावियो रे ॥१॥ ... ..

आ तो 'मरब' सुहागण सुरता हो रही रे ।

ओ तो सुपने, दुहाग नहीं आवियो रे ॥२॥

इण तो दूखो कियो है सुरता ज्ञान रो रे ।

इण तो पीया ने हंस 'स गले लगावियो रे ॥३॥ ... ..

अब जाय ने बसिया है उण लोक में रे ।

उठे काल नेड़ो नहीं आवियो रे ॥४॥

ओ तो प्यालो पीयो है प्रीया प्रेम-रो रे ॥  
 अब दुनिया रो भरम उड़ावियो रे ॥५॥  
 एतो मल विचेप आवरण तोड़िया रे ।  
 जद गूगट रे भट ने उघड़ावियो रे ॥६॥  
 पिय प्यारी ने प्यारी पिय एक है रे ।  
 जद चारों दिश आनन्द छावियो रे ॥७॥  
 ओ तो मान बलिहारी जावे नाथरी रे ।  
 म्हांने नाथ स्वरूप मिलीवियो रे ॥८॥

तर्ज गरवा गुनगती । ताल कैरवा ॥

कोई हिम्मत होवे तो म्हा रे सामो देखीजो । ओ तो मरजीवों रो  
 ज्ञान कोई आंयने ले लीजो ॥९॥

म्हे तो पहला भारों ने फेर जीवाय दो जी ।  
 कोई मरनो दुबे तो इण में पांव दे दीजो ॥१॥  
 अठे जीव प्यो रो कोई काम नहीं है जी ।  
 कोई जीव-होवो तो म्हासू अलमा रहीजो ॥२॥  
 ओ तो प्यालो पावों म्हे पूरण ज्ञान रो जी ।  
 उठे देह तणे रो समलो भाव तन दीजो ॥३॥  
 कोई म्हा रे तो सामो देखे कोई म्हा जिसा रे जी ।  
 कोई पछे वो म्हा रे नांय रलने रहलीजो नाथा ।  
 कोई मरजीवा मिलिया म्हांने नाथजी रे जी ।  
 यांने मरजीवा होणो तो पहला शीरा दे दीजो ॥४॥  
 ओ तो मरने जीयो है वीर मानसी रे जी ।  
 पण भारग करदो है धात साची मुण लीवो ॥५॥

तर्ज गरवा गुनगती । ताल कैरवा ॥

कोई मत आवो मन मुददो रे निज गांव में रे । कं  
 लेवूला शीरा उवार ॥६॥

कोई जीवतां रो जरा अठे नहीं काम है रे ।

ये तो जाबोला प्राणों ने द्वार ॥१॥

कोई पय मुड़दारो सब मूं न्यारो है रे ।

ऐ तो न्यारा है मुड़दो तणा विचार ॥२॥

ऐ तो मुड़दा जिहां ने मन परया निही रे ।

ऐ तो जाणे जग सगली ने उजाड़ ॥३॥

ऐ तो इन्द्रादिक ने ही जाणे रक सा रे ।

ऐ तो पणिया रेवे सारांरा सिरदार ॥४॥

ऐ तो मिलिया मन मुड़दा सतगुरु नाथजी रे ।

ज्यारो मान लियो है शरणो धार ॥५॥

तन भरवा गुम्फाजी । ताल कैरवा ॥

सतगुरु सुरमेरी डब्बी तो म्हारे हाथ दे दीजो ।

सुरमो सार्यों पाछे तो थोटी पाछी ले लीजो ॥६॥

ओ तो मोह अन्धियारो म्हारे छायांरयो रे ।

जिण स सतरो । सुरमो ये डब्बी मांय भर दीजो ॥७॥

सुरमो सार्यों ने सब को मन मोवियो रे ।

जैसे सजय ने कीयो ऐसे म्हांनि कर दीजो ॥८॥

ओतो न्यारा न्यारा स म्हांनि दूर कर दीजो ।

भासे अपणोई रूप ंमी दृष्टि दे दीजो ॥९॥

आतो गीता उपनिषद् डब्बी सोवणी रे ।

म्हारे हृदय में आप सतगुरु सही धर दीजो ॥१०॥

ओतो मान । सुरमे ने ऐसो सारियो रे ।

म्हारा जन्म मरण रा दुख दूर दूर लीजो ॥११॥

तन ब्रज के रसिये की । ताल कैरवा ॥

ऐसो अजर अमर रस पाऊ, पीकर फिर नहीं आते हैं ॥६॥

यह रस तो चढ़े, पीते, आग, से, मिट, आते, न्हे ।

लग से मिटकर जगमें रहते बाहर न जाते हैं ॥१॥  
 जैसे दरंग मिले जल भीतर, यों मिल जाते हैं ।  
 करम करे नहीं डरे करम से मौजू उड़ाते हैं ॥२॥  
 मेरा रस तो वे पीते जिन्दे मर जाते हैं ।  
 हर्ष शोक और राग द्वेष का मूल मिटाते हैं ॥३॥  
 मेरा रस जिसने पीया नहीं स्वांग जमाते हैं ।  
 गुण वाच वे कुछ नहीं रज्जुते डोल बजाते हैं ॥४॥  
 सुकी दुकान लौके बजार में नहीं बिपाते हैं ।  
 जितको पीना फिर घर पीते यांही समाते हैं ॥५॥  
 जोर जबर नहीं करें किसी से सही बताते हैं ।  
 जितको मना इसमें ज्ञाया कलमारी पी जाते हैं ॥६॥  
 छरी सुतारक कपड़ ल राख वे सुन जाते हैं ।  
 मरने से डरते नहीं मनमें वे दौड़ के खाते हैं ॥७॥  
 मान कहे हमने तो पीया और सब को पिलाते हैं ।  
 सब कुछ करें करें नहीं कुछ भी नीन्द घुसाते हैं ॥८॥

॥ तब कोरे कानलिये की । ताक कैरवा ॥

ओ जालम बडो जलाल, कृष्ण मुरारी रे ॥१॥  
 लीला फरे न्यारी न्यारी । आप सभी लीलाधारी ।  
 ओ खेल रयो गोपाल, कृष्ण मुरारी रे ॥२॥  
 आपही जगत् रचाय रयो । सवने भरम भुलाय रयो ।  
 ओ खेले अजब धमाल, कृष्ण मुरारी रे ॥३॥  
 सन्त मुनीजन हार गया । नेति नेति वेद क्या ।  
 यांदी लीला अजब विशाल, कृष्ण मुरारी रे ॥४॥  
 देवनाथ-गुरु जान लियो । सोही मान पहिचान लियो ।  
 ओ हे लालन को लाल, कृष्ण मुरारी रे ॥५॥

। तर्ज करे पात्रलिये की । ताल कैरवा ॥

सन्तो हो जावो तैयार रंग भर खेलण ने ॥८॥  
 भरम भूत ने त्याग देवो, मनमें त्याग वैराग लेवो ।  
 निकलो नी घर सू बारें । रंग भर खेलण ने ॥९॥  
 पाच पचीमू जौ आवें; देखन ही मन खर जावे ।  
 बारे भारो शैबंद री मार । रंग भर खेलण ने ॥ १० ॥  
 चौड़े चौक में खेल बन्यो; हिल मिल जोत जगाय रयो ।  
 वह हृद बेहृद सू पार । रंग भर खेलण ने ॥ ११ ॥  
 आ जवरी हे ममता नारी; इण सू मनवे रीं यारी ।  
 आ ठेठ चर्ही ले पहाई । रंग भर खेलण ने ॥ १२ ॥  
 पाच विषय तीं हे खोटा; मद में भर्गोड़ा है मोटी ।  
 उयो कर्द्यों री शान बिगाड़ । रंग भर खेलण ने ॥ १३ ॥  
 मान कहे मत चूकीजो; अपणो रूप ने खेल लीजो ।  
 हरदम रहीजो हुशियार । रंग भर खेलण ने ॥ १४ ॥

तर्ज करे पात्रलिये की । ताल कैरवा ॥

प्यारी बंधो भंडके तू'बार, घर में आय परी ॥८॥  
 प्यारी इत दून किय ने जोय रही तू'खड़ी, रूखी ।  
 धावे घर मांही सरदार । घर में आय परी ॥९॥  
 ओ खेल बिलाड़ी खेल रयो खुद इकरसरी ।  
 ओ मधुर बजावे धार । घर में आय परी ॥१०॥  
 प्यारी निज घर अपणो खोज्यो नही तू'वाहर फेरी ।  
 अब घरमें घटु संभार । घर में आय परी ॥११॥  
 प्यारी देव अनेको पूजिया जंद मार पड़ी ।  
 अब पाय ले निज मरतार । घर में आय परी ॥१२॥  
 प्यारी मान कहे री यावरी फट्ट खरी मरी ।  
 नही तो फेर पड़ेला मार । घर में आय परी ॥१३॥

मजन । ताल कैरा ॥

म्हाने मत-पूछो रे म्हे आया रे कठे सू, चालणो होवे तो कोई चालो रे ।

ओतो मन मरजीवो रे देश-दिरी ॥

आवण जावण न्हारे है नही कोई, आओ तो नही है रोकण चालो रे ।

ओतो ॥१॥

आदि अन्त नही है उण धर रो, जाये कोई जाणन हारो रे ।

ओतो ॥२॥

न्हारे देश में पुरुष विदेही, नही गोरो नही कालो रे ।

ओतो ॥३॥

घड़ी रे एक सही वों रेवे अकेलो, पुरुष लड़ो है नखरालो रे ।

ओतो ॥४॥

संतत रक्यो किह रेवे न्या जगमें, रेवतो भक्तो है नित्यलो रे ।

ओतो ॥५॥

मानसिह उण देश में पहुँच्यो, हठमन रेवे मनुचालो रे ।

ओतो ॥६॥

बिना रे पते है देश जो धारो, चालता जीव धबरोवे रे ।

ओतो नहो भवि एहो देश ॥दिरी॥

आवण जावण जद है नही उण में, तो भीड़ घणी हुय जावे रे ।

ओतो ॥१॥

इसही भीड़ मांय जाय कई करसो, कुण इसहो दुख पावे रे ।

ओतो ॥२॥

देह बिना जद पुरुष बिराजे, वो कई न्हाने वचन सुणावे रे ।

ओतो ॥३॥

उठे रे जाय कई कोरे न्हारी छुरा, जठे पाय सम्भक्त नही आवे रे ।

ओतो ॥४॥

सय कुद खेले और खेले ना कुद मी, खिण सु सुख प्रीत लगाने रे ।



इसड़े देश में तो आप ही बिराजो, म्हारो तो चित नहो चावे रे ।  
ओतो० ॥६॥

कहे बंक भूपति हैं विकट भग, म्हासुं तो चाल्यो नहीं जावे रे ।  
ओतो० ॥७॥

आप ही चाल सको इसड़े भग, समरध चाहे सो दिखावे रे ।  
ओतो० ॥८॥

~\*~

तर्ज "नागजी" की । ताल कवाली ॥

कवि कर आलस मत सोय रे, तने लैमूं सग धोहूं नहीं, हो हो लालजी ॥६॥  
दूर न जाणो कोय रे कवि, देश दिखाऊं तने मायने; हो हो लालजी ॥७॥  
तू ही है बिंदही आप रे कवि, मुपने जन्म नांव रे; हो हो लालजी ॥८॥  
आतो माया है धारी धाय रे कवि, जा तुम सुं न्यारी नहीं; हो हो लालजी ॥९॥  
आवण जायण उठे नांव रे कवि, उठे कोई भेलो हुवे नहीं, हो हो लालजी ॥१०॥  
आदि अनादि खेल रे कवि, खेल वल्यो नहीं आज सु; हो हो लालजी ॥११॥  
केलण चालो है एक रे कवि, ओतो नहीं धापेइय खेल सुं; हो हो लालजी ॥१२॥  
कवि पीय पीय अब पीय रे ओतो, व्यालो है पूरण प्रेम रो; हो हो लालजी ॥१३॥  
कवि पीताई चढ़ जाय रे ओतो, देखे आनन्द बग देश रो; हो हो लालजी ॥१४॥  
कवि पावुद मन सांय जाय रे, कोई बरजे जिर्का ने ई पवणो; हो हो लालजी ॥१५॥  
कहे मान यह बात प्रचार रे कवि, ब्रह्म धन नांय जिपावणों, हो हो लालजी ॥१६॥

तर्ज बाणी की । ताल कैरवा ॥

साधो भाई मुझमें जग बिलया होनी । नहीं जग होयो नहीं जग होवे,  
सब यह मेरी माया ॥६॥

मैं ही जीव ईश सो मैं हूं, आदि अनादि थाया होजो ।

मैं ही मुझको जान गया जब, नाम और रूप मिटाया ॥१॥

मैं ही नाना मैं किर कृत्र ना, ऐसा खेल रचाया होजो ।

मैं ही खेज्या और मैं ही देख्या, मैं ही रोय दसाया ॥२॥

होने मिटन मिथ्या ये दोनो, भूब भरम दुम पाया होजो ।

आप को भूत अपर को जोया, फिर फिर गोता खाया ॥३॥  
 जैसे घट जल मरिया होवे, सूरज अमृत दिखाया होजी ।  
 दरपण हिले मूरत हिल जावे, ना कोई हिल्या हिलाया ॥४॥  
 दया भूत डरे ज्ये बालक, मिथ्या ही दरसाया होजी ।  
 साप में चान्दी रख में भर्या, कल्पित भाव डराया ॥५॥  
 दुपने भर्या फाष्ट में लल गथा, जाम्या-या ज्यू थाया होजी ।  
 ऐसे ही जान ब्रह्म में श्रुष्ट, नहीं धड़िया न समाया ॥६॥  
 फाशी मगहर दोनो मिथ्या, आप ही बन्ध्या छुड़ाया होजी ।  
 वहां है न मुक्ति वहां नहीं बन्धन, मान जान विसराया ॥७॥

राग भैरव । ताल दीपचन्दी ॥

क्या कर सकी है मुक्ति हमारा, मुक्ति को मुक्ति हूँ देने द्वारा ॥देर॥  
 हरिहार आऊँ नहीं फाशी, भेष न धरूँ न बन्धूँ सन्यासी;  
 मैं रहूँ शामिल और सबसे न्यारी ॥१॥  
 मुक्ति करे नित मेरी चाह, मैं हूँ अलन्मा और अचाही;  
 मेरे अन्दर है जग सारा ॥२॥  
 मेरी राह सकल से न्यारी, जो जाने कोई असल व्यापारी;  
 जिसने मन निज मन कर द्वारा ॥३॥  
 मानसिद्ध कहे सुनो गुनि बानी, मिला रहूँ जैसे बरफ में पानी;  
 धूप पड़ी जल हो गया सारा ॥४॥

राग सोरठ, तने बानी की । ताल रूपक ॥

पायो मैं तो निज सर्वगी रूप, ऐसा महा भूपन को भूप;  
 सर्वगी ओलख्या रे लाल ॥देर॥  
 हे सर्वगी लखे सब में, जिखने जाणे नहीं संसार ।  
 शृणु सर्वगी ने जाण ले तो, बतर जावे पार । सर्वगी ओलख्यो ॥१॥  
 समी अंग ने खोजे पहिला, पिन्ड ब्रह्मण्ड ओलखाय ।  
 पिन्ड में ब्रह्मण्ड दरसे, सर्वगी पद पाय । सर्वगी ओलख्यो ॥२॥

गण जोवण फिर न आया, मिल्या सबैगी रे मांय ।

दोय नहीं जय कैसे आवे, अपणो आप केवाय । सर्वगी ओलख्यो० ॥३॥

जीव ब्रह्म ने एक कीया, ज्योरे माया निजर नही आय ।

माया ब्रह्म और ब्रह्म माया, दूजो कौन दरसाय । सर्वगी ओलख्यो० ॥४॥

नाथ जी सर्वगी मिलिया, दियो अंग प्रत्यंग बताय ।

एक पिन्ड अनन्त ब्रह्मह है, सब मेरी इच्छा मांय । सर्वगी ओलख्यो० ॥५॥

यो सर्वग पद हूँ तेवे, सो हो जावे निहाल ।

अष्ट मित्र नथ निधि हाजिर, हाजिर मन बैताल । सर्वगी ओलख्यो० ॥६॥

मान कहे निज रूप अपणो, आपही लियो विचार ।

शू नबं ॥ होय आवे तो, पूजे सब संसार । सर्वगी ओलख्यो० ॥७॥

एग सोरठ, तब फकीरी की । ताल दीपचन्दी ॥

सो जाणे बैराग्य, अघोरी रो. सो जाणे बैराग्य

पंथ अघोर में यो नर आवे, घोर नोद देवे त्याग । ॥ टेर ॥

हो जन्म अनन्त नींद में सूता, सां भइक उठ्या अब जाग ।

ज्ञान गुहा में आसण धरियो, स्वप्ने न उज्जे राग । अघोरी रो० ॥ १ ॥

हो आशा कृष्ण मन सूं त्यागी, खेले ब्रह्म सू फाग ।

सब रंग में खेलके खेलते, पण लगण देवे नहीं दाग । अघोरी रो० ॥ २ ॥

हो यह सर्वगी सब का सगी, बन्धारे जात पांत नहीं साख ।

पथा पंथ भेद सब छेड़या, बाल जाल कर दिया राख । अघोरी रो० ॥ ३ ॥

हो ममता निज ही बाट रवे जोती, वा रेवे बडावती काग ।

आशा कृष्ण पांच विषय पर, धर दीवी खड़े आग । अघोरी रो० ॥ ४ ॥

हो देवनाथ गुरु मिल्या अघोरी, जिण लगई पड़ी लाग ।

मान कहे नही पड़ पोल मे, बंधारी बाट जोबो इकनाक । अघोरी रो० ॥ ५ ॥

राग विदाग, तब बागी की । ताल बैराग्य ॥

एक दिन राम भयो रे बैरागी रे । पार बैराग्य भाग सुख छोड्या, अरब  
जहर ज्यू लागी रे ॥ टेर ॥

दशरथ घर में हृन्द भोग सुख, सो सब दिया छिटकाई रे ।  
 होय निगश सकल तन सूख्यो, जीवन वृथा लखाई रे ॥ १ ॥  
 मुनि वशिष्ठ और विश्वामित्र ये, दशरथ घर चल आया रे ।  
 मुन्या बैराग्य त्याग रघुवर को, अपने पास बुलाया रे ॥ २ ॥  
 उत्तर प्रश्न बनेको कौन, कबो रयो नहीं धाक्यार ।  
 मुनि वशिष्ठ ऐसे वनको रगड़यो, भावों भरम रो फड़का रे ॥ ३ ॥  
 छः प्रकरण विधि विधि कह्ये, कियो राम निगधी रे ।  
 त्याग को त्याग राम को दीयो, भयो बैराग्य बलवाणी रे ॥ ४ ॥  
 नकली बैराग्य राम को उड़ गयो, असली बैराग्य उण लानो रे ।  
 है सो बड़ा जगत कुछ नहीं है, ऐसो अवृत्त पानो रे ॥ ५ ॥  
 सत कहूं बंक भूठ मत नाखो, योगवशिष्ठ पद लीजे रे ।  
 पदजे सुणजे समझ बिचारजे, फेर प्रसन्न मोखूं काजे रे ॥ ६ ॥  
 त्याग ग्रहण को छटको मेटयो, रामचन्द्र अलखेला रे ।  
 लखूपण गवख आदि मारे, जाइयो जगत सब खेला रे ॥ ७ ॥  
 ऐसो बैराग्य बंक तूं ले ले, तो भव सैं तिर जावो रे ।  
 मानसिइ अनमोल रतन ने, ठो सैं मती रे ठगवो रे ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

त्याग बैराग्य को खन्दते, सो नृप नये सुहाय ।  
 गोरल भरतु से वीर नर, त्याग से अमर कहाय ॥

॥ चौपाई ॥

रे जग कैसी भूल भूलाई । असल त्याग को जाने नाई ॥  
 भूप भरतु त्यागी नारी । विक्रम भूप रह्यो घरचारी ॥  
 घर में रह्यो बांहर नहीं धायो । लोक सेवा कर राज कमायो ॥  
 पर दुख दरुण विक्रम सो राजा । निज स्वाराय नहीं कीनो काजा ॥  
 भूप भरतु को लो कोई कोई गावे । विक्रम सम्बत मिलो नित आवे ॥  
 सो कविवर अव मोय घटावो । भरतु वदो कि विक्रम कहावो ॥

भूप दीप पूजा करी हो सन्गुरु चरणगृत कियो पान ।  
तो ज म गुना में कर दियो ॥ सत्गुरु सेवक कयो रे जवान ॥ ३ ॥  
शिष्टाचार तो होत है हो गुरुवर भाषे वेद पुराण ।  
इस कारण मैं आपरो हो सत्गुरु सेवक कहे नृप मान ॥ ४ ॥

राग माट-मलार तंत्र "सोदेयमरे" की । ताल कैरा ॥

भो मन मे एक उपजी रांक महान नरपति म्हारा हो ।  
कोई शंका तो भिटाओ आपणे शिष्य री हो; म्हारा राज ॥ १ ॥  
भूप भरत समभयो ज्ञान विज्ञान नरपति म्हारा हो ।  
दग्न फिर क्यों घर छोड़ लियो सन्यास ने हो; म्हारा राज ॥ २ ॥  
राज थकां तो पिपवन मांय कुभाय नरपति म्हारा हो ।  
घो होघो रे सन्यासी जद सुख पावियो हो; म्हारा राज ॥ ३ ॥  
उय ग्रहस्थ थकां तो देखी पिगला नार नरपति म्हारा हो ।  
कोई चण रे जालों ने घो नहीं खाणियो हो; म्हारा राज ॥ ४ ॥  
जिको भूप किम समभयो ग्रह वेदान्त नरपति म्हारा हो  
कोई नारी रे दुलड़े सू घर ने छोड़ियो हों; म्हारा राज ॥ ५ ॥  
आ शंका म्हारो लारो छोड़े नाँय नरपति म्हारा हो ।  
कोई आप ना मिटाओ तो कौण मिटावसी हो; म्हारा राज ॥ ६ ॥  
सुनी बात जय हंसिया गन ही नरेश नरपति म्हारा हो ।  
कोई शंका तो कर दीवी आगे नाथ ने हो; म्हारा राज ॥ ७ ॥  
नाथ कहे थासु द्विपी नहीं कुछ मान नरपति म्हारा हो ।  
कोई भारो तो कयोको भट पट मानसी हो; म्हारा राज ॥ ८ ॥  
तुम तो नरपति चवदे विद्या निधान नरपति म्हारा हो ।  
कोई म्हारे को विद्या एक आत्म ज्ञान री हो; म्हारा राज ॥ ९ ॥  
आत्म विद्या सारों री सिरताज सत्गुरु म्हारा हो ।  
कोई जिण सूँ लख पायो हे सुत्र मानसो हो; म्हारा राज ॥ १० ॥

तंत्र मारणकी "दीजे" की । ताल धमाल ॥

चनुर कवि धंक हे रे वारी और कोई गम जाये नाँय ॥ देर ॥

तू तो जाणो सगली वारता रे कविवर फिर मोहे पूछण चाय ।  
 लोकोपकार रे कारणे रे कविवर मो सूं लग्यो रे कहाय ॥ १ ॥  
 चवदे विद्या तो भरतु जाणनो रे कविवर एक कमी थी उण मांय ।  
 ब्रह्म विद्या सूं अलगो रयो रे कविवर जिण सूं रयो दुख पाय ॥ २ ॥  
 ब्रह्म विद्या गोरख दिवी रे कविवर जद आयो साचो ज्ञान ।  
 असली रूप पहचानियो रे कविवर जद भयो उण ने भान ॥ ३ ॥  
 जद जांयतो वेदान्त ने रे कविवर जद होयो उण ने हास ।  
 पछे तो चणोई पळतावियो रे कविवर कृपा ही लियो सन्यास ॥ ४ ॥  
 स्वांग धरयो नही पलट सक्यो रे कविवर लाजे ब्रह्मो री रीत ।  
 इण कारण पलट्यो नही रे कविवर मन मांय भयो रे निचीत ॥ ५ ॥  
 शिष्य भरतु नही मूढिया रे कविवर नही रे बघायो भेष ।  
 आप पायो निज रूप ने रे कविवर राखी भेष री टेक ॥ ६ ॥  
 गीता भाष्य पीछे कियो रे कविवर जब ले लियो सन्यास ।  
 आंधो भेलो आंधो नां भयो रे कविवर सही सही करदी प्रकास ॥ ७ ॥  
 पेर शंक हो तो कैय दे रे कविवर सो मैं देऊं रे मिटाय ।  
 अथ की शंक मछ राख जे रे कविवर बसणो ब्रह्म रे मांय ॥ ८ ॥  
 मान कही सो मान ली रे कविवर नही तो गुरां री ले ले साख ।  
 असृत पीणो कठिन ई रे कविवर भर भर प्याला चाल ॥ ९ ॥

॥ सवैया ॥

शब्द के शेल सहे नही शीरा पे, बैठे यूही बातें बनाई ।  
 एक ही शेल ला लात गयो तब, पार कलेजे के पहुँच्यो जाई ।  
 दातन फास बने कहु नाहीं, धातन में संघ लोग ठगाई ।  
 मान फड़े छुड़ करके चले, जग बीच में वो नर नाम कमाई ॥

॥ सवैया ॥

ब्रह्म वैराग्य धरयो हर में जब, धाय रही दिह में एकताई ।  
 चित्त को अपने किया चेला, मिथ्या अहंकार को दीन बहाई ।

धूप दीप पूजा करी हो सन्गुरु चरणभृत कियो गन ।  
तो जग गुनार मैं कर दियो हो सत्गुरु सेवक कयो रे जवान ॥ ३ ॥  
सिद्धचार तो होत है हो गुस्वर माप वेद पुण्य ।  
इए कारण मैं आचरो हो सत्गुरु सेवक कहे नृप मान ॥ ४ ॥

जग माह-मलार तर्ज "सोदेसुमरे" की । ताल कैरा ॥

सो मन में एक उपजी शंक महान नरपति म्हारा हो ।  
कोई शंका हो भटारो अपणे शिष्य री हो; म्हारा राज ॥ १ ॥  
भूप भरत समभयो ज्ञान विज्ञान नरपति म्हारा हो ।  
उण फिर कयो घर छोड़ लियो सन्यास ने हो; म्हारा राज ॥ २ ॥  
राज थका तो विषयन मांय दुभाय नरपति म्हारा हो ।  
वो होयो रे सन्यासी जइ सुख पावियो हो; म्हारा राज ॥ ३ ॥  
उण महेश थका नो देखी पिगला नार नरपति म्हारा हो ।  
कोई वण रे जालों ने वो नहीं जाणियो हो; म्हारा राज ॥ ४ ॥  
जिको भूप किम समभयो जह वेदान्त नरपति म्हारा हो  
कोई नारी रे दुखइ सूं घर में छोड़ियो हो; म्हारा राज ॥ ५ ॥  
आ शंका म्हारो लारो छोडे नांय नरपति म्हारा हो ।  
कोई आप ना मिटाओ तो कौण मिटावसी हो; म्हारा राज ॥ ६ ॥  
सुनी बात जब हंसिया मन ही नरेश नरपति म्हारा हो ।  
कोई शंका तो कर दीवी आगे नाथ ने हो; म्हारा राज ॥ ७ ॥  
नाथ कहे धाम्नु त्रिपी नही कुज मान नरपति म्हारा हो ।  
कोई पारो तो कथोहो भट पट मानसी हो; म्हारा राज ॥ ८ ॥  
हुम तो नरपति चउदे विद्या निधान नरपति म्हारा हो ।  
कोई म्हारे वो विद्या एक आत्म ज्ञान री हो; म्हारा राज ॥ ९ ॥  
आनम विद्या सारो री सिरदाज सगुरु म्हारा हो ।  
कोई जिण सूं लग पायो है सुन मानसी हो; म्हारा राज ॥ १० ॥

तर्ज मारवाही "सोदे" की । ताल धमल ॥

चतुर कवि वंश है रे थारी और कोई गम ज्ञाने नांय ॥ टेर ॥

तू तो जाये सगली वारता रे कविवर फिर मोहे पूछण चाय ।  
 लोकोपकार रे कारणे रे कविवर मो सूं लग्यो रे कहाय ॥ १ ॥  
 भवदे विद्या तो भरव जाणनो रे कविवर एक कमी थी उण मांय ।  
 ब्रह्म विद्या सूं अलगो रयो रे कविवर जिण सूं रयो दुख पाय ॥ २ ॥  
 ब्रह्म विद्या गोरख दिवी रे कविवर जद आयो साचो ज्ञान ।  
 असली रूप पहचानियो रे कविवर जद भयो उण ने भान ॥ ३ ॥  
 जद जाण्यो वेदान्त ने रे कविवर जद होयो उण ने हास ।  
 पछे तो चणोई पद्धतावियो रे कविवर कृपा ही लियो सन्यास ॥ ४ ॥  
 स्वांग धरयो नहीं पलट सक्यो रे कविवर लाजे नदों री रीत ।  
 दूण कारण पलट्यो नहीं रे कविवर मन मांय भयो रे निचीत ॥ ५ ॥  
 शिष्य भरव नहीं दूखिया रे कविवर नहीं रे बघायो भेष ।  
 आप पायो निज रूप ने रे कविवर राखी भेष री टेक ॥ ६ ॥  
 गीता भाष्य पीछे कियो रे कविवर जब ले लियो सन्यास ।  
 आंधो भेलो आंधो नां भयो रे कविवर सही सही करवी प्रकास ॥ ७ ॥  
 फेर शंक हो तो केय दे रे कविवर सो मैं देऊं रे मिटाय ।  
 अब की शंक मत राख जे रे कविवर बसयो ब्रह्म रे मांय ॥ ८ ॥  
 मान कही सो मान ला रे कविवर नहीं तो गुरां री ले ले सास ।  
 असुत पीयो कठिन है रे कविवर भर भर प्याला चाख ॥ ९ ॥

॥ सवैया ॥

शब्द के शेल सहे नहीं शीश पै, बैठे यूही बातें चलाई ।  
 एक ही शेल जा लाग गयो तब, पार कलेजे के पहुँच्यो जाई ।  
 दातन काम घने कहुं नाही, दातन में सब लोग ठगाई ।  
 मान कहे कुछ करके चले, जग बाँच में वो भर नाम कमाई ॥

॥ सवैया ॥

ब्रह्म वैराग्य घरयो घर में जब, छाया रही दिह में एकताई ।  
 निज को अपने किया चेला, मिथ्या अहंकार को दीन चढ़ाई ।



वृत्ति नार को मूढ करी चेली, निर्भय रहे इस नगर के माई ।  
भाँव अखण्ड दिवी गुरु देव ने, सो कवडू नहीं खुटे खाई ।  
नाथने क न कृपा हम पे तब, असल सन्यास की युक्ति बताई ।  
मान सन्यास सज्यो अस सुन्दर, ता इत उत अब भटकूँ नाई ॥

रंग धनधन । ताल बैरवा ॥

ना, पुनपा रो संग; करारे कोई बाँ पुरुषों रो संग ॥८॥  
भली दुरी सचका दुःख लेवे । घन पू बाँ उत्तर नहीं देवे ।  
ओध न व्यापे अंग । करोरे कोई बाँ पुरुषों रो संग ॥९॥  
सन्त स्वभाव ज्ञान भठारी । ऊँच न नीच सभी एक सारी ।  
न्यावे ज्ञान फेरी गंग । करोरे कोई बाँ पुरुषों रो संग ॥१०॥  
मन के वचन के पाप कर्म के । सचित प्रारब्ध सकल मरम के ।  
जल जाय जेमे पतल । करोरे कोई बाँ पुरुषों रो संग ॥११॥  
देवनाथ देवे परगट हंसा । अगम पथ में सूर खेला ।  
१५ नित मान नितग । करोरे कोई बाँ पुरुषों रो संग ॥१२॥

रंग मंगल । ताल दीपचन्दी ॥

हेली ए अखि रे मरडन रे माँय, सूरज उगायो हे ।  
हेली ए जागी ए सुहागण नार उठ मंगल गायो हे ॥८॥  
हेली ए जीव मरु दीया खोय, एक है अनामी हे ।  
हेली ए नदी ज्यारे नाम और गाम, है अन्तर्यामी हे ॥  
हेली ए बिना ही रूप स्वरूप, सभी मे समायो हे । जागी ए ॥९॥  
हेली ए दिन घर अवर स्थान, रेवे अलबेलो हे ।  
हेली ए न्याली गोली ज्यारे नांय, रेवे आप अलबेलो हे ।  
हेली ए आज काल सूर नांय, अनादि कहायो हे । जागी ए ॥ १० ॥  
हेली ॥ हो कोई मरजीवा सन्ध, जिकों ने मिल जावे हे ।  
हेली ए मरने सँ डरत होय, निजर ज्यारे नदी आवे हे ।  
हेली ए बाँ मुइदों रो मित्र, वेद यूँ गावे हे । जागी ए ॥११॥

हेली ए सो मैं अपणो ही आप, अब कियेने वताऊँ हे ।  
 हेली ए भरम नौद देवे छोड़, तो मुझ में मिलाऊँ हे ।  
 हेली ए हम ही जीव हम पोव, हम आप समायो हे । जागीए० ॥४॥  
 हेली ए कियो है नाथजी रो साथ, भरम सब सेल्यो हे ।  
 हेली ए मान अगम घर माँय, निर्मय होय खेल्यो हे ।  
 हेली ए सब जग अपणे माँय, न्यारो न दरसायो हे । जागीए० ॥५॥

राग मङ्गल । ताल दीपचन्दी ॥

हेली ए मारया रे शब्द रा तीर, पार होय आया हे ।  
 हेली ए पहिले ले लिया प्राण, पीछे पद पाया हे ॥ टेर ॥  
 हेली ए छठी है विरह री आग, मानो कोई होरी हे ।  
 हेली ए अणमें जल निकल जाय, जिकारी मिले जोरी हे ।  
 हेली ए आठ पहर दिन रात, सोलवाँ गाया हे । हेली ए ॥१॥  
 हेली ए मनबो भयो हे इक रंग, दूजो नहीं आवे हे ।  
 हेली ए धोयाँ ही उतरे नांय, जिको किय विध जावे हे ।  
 हेली ए रोम रोम रग रग माँय उजाला थाया हे । हेली ए० ॥२॥  
 हेली ए रवि शशि बिना प्रकाश, जोत एक जागी हे ।  
 हेली ए दूजो नहीं आवे म्हारे दाय, सुरत जाय लागी हे ।  
 हेली ए अमर बियाजीने पाय, दूजो कुण अब आवे हे । हेली ए० ॥३॥  
 हेली ए भया है भेद सूँ सिंह, अखण्ड बन जोया हे ।  
 हेली ए सब जग मेरे आधार, मैं सुख भर सोया हे ।  
 हेली ए जाग आततायी जीव, भटक दुख पाया हे । हेली ए० ॥४॥  
 हेली ए नाथ मिल्यो है रणधीर, जिन मोय सिस्त्रायो हे ।  
 हेली ए अखिल ब्रह्मांड रो हूँ भूप, यह तिलक लगायो हे ।  
 हेली ए मान रयो मन मान, महान में समायो हे । हेली ए० ॥५॥

तर्ज एलीकी । ताल कैरवा ॥

केओ मान ले ए प्यारी, जव रीफे नवल किशोर ॥ टेर ॥

पी प्याला होजा भतवारी, जमरो चले न जोर, एली पी प्याला० ।  
 अगम पंथरी सेरी मांकड़ी, नेणा करोनी चित चोर ॥१॥  
 असली पथ जदं नू पावे, तोड़े बन्ध कठोर; एली असली० ।  
 आठ पौर चौसठ घडा रे, लगी रहे जैसे चकोर ॥२॥  
 पाँचू चोर पगों तले दं जे, मेढो मनरो सोर; एली पाँचू चोर० ।  
 ज्ञान को भान उदय जद हावे, जर मुख दीसे तार ॥३॥  
 दूजा बन्ध मेल सब अलगा, पकड़ आनखी डार, एली दूजा० ।  
 जयप्रीतन का दरमख करसी, दुबनही व्यापे कोई और ॥४॥  
 देवनाथ गुरु नित पमभावे, कशों रहो तू डोर, एली देवनाथ० ।  
 मान कहे री अजड़ मानले, भरम हंडिया ने फोड़ ॥५॥

राग कालिगङ्गा । ताल कैरवा ॥

मुनरे भंर सैलानी, घात मेरी मुनरे मंर सैलानी ॥ टेर ॥  
 और तो बातें बहुत सुनी हैं, इबर उधर की कशानी ।  
 अब मेरी बात सुनोरे मेरे भंवर, कहे साची सैनाखी । घात० ॥१॥  
 काची कली को रस क्या पीवे, पीवत जाय कुमलानी ।  
 जय रस खूटे सब दुख पावे, मन ही मनमे गिलानी । घात० ॥२॥  
 एक कली तोहे ऐसी कृताऊँ, हरदम रम टपकानी ।  
 उस रम से मय जगत रच्यो है, पी जीवे सब प्राणी । घात० ॥३॥  
 वह रम पीवें सकल दुख छूटे, खुद मस्ती छिकजानी ।  
 जगत विषय रस मिथ्या लागे, जीवित मोक्ष दिखानी । घात० ॥४॥  
 मानसिंह कहे कहूँ मैं कय तक, माने न जगत दीखानी ।  
 जन्मो जन्म जहर फल खावे, स्वाद अमी कश पिछानी । घात० ॥५॥

राग कालिगङ्गा । ताल कैरवा ॥

इते दिन भूल में रह गये रीत ॥ टेर ॥  
 प्रिय हमारे हम ये निर्मय, यों ही भये भयभोग ।  
 अबर मान मार नित खई, यों ही सहे फजीवा ॥ १ ॥

राधे कृष्ण गोविंद जप्यो जप, जप्यो राम और सीता ।  
 अवर ही जाप आप लख्यो नाहि, अपण्यो जाप नहीं कीता ॥२॥  
 साचो कृष्ण राम मिल्यो साचो, जब पढ़े वशिष्ठ और गीता ।  
 नित्य को पाय अनित्य त्याग दिये, नहीं हारा नहीं जीता ॥३॥  
 नाथ को साथ कियो जब हमने; जगसे चले विपरीता ।  
 मानसिंह सभ कर्म जाल दिये, लेकर ज्ञान पलीता ॥४॥

राग भैरव । ताल दादरा ॥

जगत दह जाण धन्दे, समझ बिणज कीजे ॥ टेर ॥  
 याही बीच ठग अपार, दीजे मत पूजो हार ।  
 वस्तु को नहीं है पार चहिये सो लीजे ॥ १ ॥  
 द्रष्टा में हारे अनेक, जीत मी गये कई एक ।  
 जाने गही रावद टेक, टेक ते गहीजे ॥ २ ॥  
 नाना भरे हैं बिकार, ऊपर दीखे अंगार ।  
 समझ भूत खोज करे, फेर मन पतीजे ॥ ३ ॥  
 जाण जहर नहीं खाय, ओलख-ले मन के माँय ।  
 भूठी वह जग की छाँय, या में मत रींके ॥ ४ ॥  
 इसमें जो काच कथीर, जामें एक असल हीर ।  
 आत्म आनन्द खसो, और को तजीजे ॥ ५ ॥  
 देवनाथ साथ कीन, ब्रह्मानन्द पीजे ।  
 मानसिंह आप आप, बीच निच भीजे ॥ ६ ॥

राग बिहग, तर्ज बागरी की । ताल कैरवा ॥

साधो भाई धर्म रीति कछु न्यायी रे ।  
 धर्म अधर्म को खयाल करे नहीं; वर्या धरम अवतारी रे ॥ टेर ॥  
 धर्म नीति ने अर्जुन मूल्यो, बाहि बाहि पुकारी रे ।  
 असली धर्म कृष्ण समझायो; पारध लियो बिचारी रे ॥ १ ॥  
 धर्म पुत्र युधिष्ठिर बलियो, सो दियो धर्म बिसारी रे ।

हारी नार जुवा में देखो; खोया धर्म और नारी रे ॥ २ ॥  
 भीष्म द्रोण धर्म ने भूल्या, कौरव सभा मंझरी रे ।  
 नार नगन करती ने देखी; भूल गती गई मारी रे ॥ ३ ॥  
 ये तो भूल्या श्याम नहीं भूख्यो, पल में लिखी उबारी रे ।  
 राखी घात याद भारत में; फिर से लिखी ड्यारी रे ॥ ४ ॥  
 उण ही दुशासन रा हाथ काटिया, उयों बुधन की डारी रे ।  
 कह्यो कृष्ण वो ही है यह नर, नगन करी जिए नारी रे ॥ ५ ॥  
 ऐसे धर्मी आज दिखै है, जरा न करत विचारी रे ।  
 आतताई जब दुष्ट घनेरा; जिन पर दया करता री रे ॥ ६ ॥  
 कंराव बास्य सजें नहिं हम तो, देवें पार उतारी रे ।  
 भूनि भार दुष्ट जन कहिये; जिन पै सङ्ग हमारी रे ॥ ७ ॥  
 दुष्टों ने दण्ड देणों ही धर्म है, कह गये श्याम मुरारी रे ।  
 आत्म रूप लख करे हम सेवा; सब ही विश्व समारी रे ॥ ८ ॥  
 नर नारायण फरक नहीं कोई, गीता प्रगट पुकारी रे ।  
 होय नारायण आततायी पण, दिल सँ देवे निकारी रे ॥ ९ ॥  
 देवनाथ गुरु धर्म बंलायो, चाल्या खोंडे री धारी रे ।  
 मानसिंह कहे कृष्ण कही सो, रती रती लीन विचारी रे ॥ १० ॥

तब बाणी की । ताल बैरवा ॥

साधो भाई यों एकादशी कीजे होजी । दश के ऊपर मन श्यावरं, याको  
 एक रस काजे रे ॥ टेर ॥

पांचो विषय पांच प्रकृति, पकड़ कैद मांही लीजे होजी ।  
 कर्म इन्द्रियां तो जड़ नित कहिये, यां मूँ न काम सरीजे रे ॥ १ ॥  
 भूला मरो भरम मांहि बैठा, यों नहीं श्याम पतीजे होजी ।  
 ब्रह्मानन्द में रत मन करलो, जड़ ग्हारो प्रभुजी रंभे रे ॥ २ ॥  
 मन ने मार चुर कर देषो, नित उठ मंगल कीजे होजी ।  
 ये तो प्रत एक दिन राखो, ओ तीमूँ ही दिन वरतीजे रे ॥ ३ ॥  
 करो क्यों पाप पुन क्यों खोजो, ओ दुम्ह परे हरीजे होजी ।

पाप नहीं तो पुन कौन को, क्यों दुःख सुख मानीजे रे ॥४॥  
 बहुत नहीं खाणों भूखों नहीं मरणां, पड़दो दूर करीजे होजी ।  
 ये इश्वारे होय वश आपणे, तो निश्चय मौज करीजे रे ॥५॥  
 सातों बार तीस ही तिथियां, भेरे तो एक कदीजे होजी ।  
 मानसिंह कहे अमर रवि ऊगो, क्योंकर रैख भुग लीजे रे ॥६॥

॥ दोहा ॥

चोबीसों एकादशी, जुदा जुदा फल होय ।  
 फल भुगते कछु ना रहे, फित तो बैठो रोय ॥  
 ताते फल को छोड़दो, कीजे ब्रह्म विलास ।  
 जाय समाधो रूपमें, फिर नहीं आश्चर्यकी आस ॥

॥ खैया ॥

केते ही व्रत उपवास करो तुम केते ही व्रत निराहार जो कीजे ।  
 पर एक न भरत रुपे मनमें तब तक केते ही भूल मरीजे ।  
 निज निश्चय रो भरत रोप मन सतगुरु के गम ते चढ़ लीजे ।  
 अलिल विषय तुझमें दीखे ऐसो व्रत करणो तो कर लीजे ।  
 मान कहे जो ख्याल करो तुम ये दुःख सब ही परे दूरीजे ।  
 तेरो स्वरूप सदा तुम में उसकी निश्चय कर स्थिर रहीजे ॥

तब बाखी की । ताल कैरवा ॥

साधो भाई फल कारण जग आवे होजी । आगे गयों तो फल कैसो ही मिलसी,  
 पाछो अवाव न आवे रे ॥ टेर ॥

कहीं पे पकड़ धन्धी है एकादशी, कहीं पर व्रत बतावे होजी ।  
 आप ही पड़ी है बन्वन में जापड़ी, वां चाने क्योंकर छुड़ावे रे ॥१॥  
 वन्धिया अज वन्धियों रे आगे, क्यों कर वन्धिया छुड़ावे होजी ।  
 अन्धा प्रवच और दिव्य ज्योति कहे, कहतां शरम नहीं आवे रे ॥२॥  
 प्रथम तो स्वर्ग मिले ही नाहीं, जो जो मिले तो विनसावे होजी ।

मिले और बिनसे ऐमो क्यों चाहो, उलटो दुग्व होय जावे रे ॥३॥  
 मन रो मैल जो साफ करो तो, साचो व्रत कहावे होजी ।  
 व्रत नाम है साचो निश्चय, पकड़्यो पार हो जावे रे ॥४॥  
 मान कहें हम ऐमो व्रत कीनो, भूला न अधिक कुछ खावें होजी ।  
 एक धार पर चढिया गिरे नहीं, शुद्ध स्वरूप समावें रे ॥५॥

नर्ज वार्या की । ताल करवा ॥

सायो भाई कर्मकाण्ड जग भूला होजी । असली करम तो करयो भूलग्या  
 कैसे भयें मनि स्थूला रे ॥टेरा॥

गुरु कर्मकाण्डी ने शिष्य कर्म काण्डी, दोऊ मिल रोल मचाई होजी ।  
 आगे तो पग मेल्यो नहीं जावे, क्योंकर रूप दरसाई रे ॥१॥  
 नहीं शिष्य पूछे नहीं गुरु कहवे, अधापुण्य मांही जावे होजी ।  
 गुरु लालच सेवा में अतृप्त्या, शिष्य पूछण नहीं आवे रे ॥२॥  
 नित्य कर्म करो कोई मन छोड़ो, आगे तो ध्यान कर लीजे होजी ।  
 बैठा रहेबोला कर्म मांही अरण्या, निज तत्त्व किम ओलबीजे रे ॥३॥  
 कर्मकाण्ड नहीं एक तरफ रो, लाया ही जुगती लगाई होजी ।  
 जेता ही पंथ कर्म तेता ही, जिण मूँ गिलानी मन आई रे ॥४॥  
 कई तो जन्मोई कई ले कन्ठी, कई रुद्राक्ष पहनावे होजी ।  
 केतारु बाम जीवणा केता, गिणतां गिणन थरु जावे रे ॥५॥  
 ब्रह्म बिद्या रो कर्म है साचो, वण आवे तो कीजे होजी ।  
 सागला पथ अनन्त छोड़ कर, अपनो पंथ पकडीजे रे ॥६॥  
 मान कहे मैं कर्म ही कीया, जब तक छवण अधाया होजी ।  
 टूटा बन्ध फन्द सब मिटिया, कर्म मोहे नहीं भाया रे ॥७॥

राम भैरवी । ताल करवा ॥

यों कहा भोग लगावे, पुजारी यो कहा भोग लगावे ॥टेरा॥

अमो रक्तन सीर झिझकावे, ता पड पांय धरावे ।

हाड मांस और मल है तन में, क्योंये साथ ले जावे ॥१॥

१ धुर सुधा रस भोजन तेरो, जिन आगे पधरावे ।  
 कण हू एक छटावे नांही, भूटो ही नाम लगावे ॥२॥  
 कहे तू देव सुगन्धी भूखे, यह हांसी मोहे आवे ।  
 आवे सुगन्धी करत रसोई, तू क्यों भर थाली लावे ॥३॥  
 ये सब फन्दे तेरे ही मनके, तू ही जगको मुलावे ।  
 तेरो जी चाहे सो करले, चेतन विन कृण लावे ॥४॥  
 जो हे बेचारे मनके भोले, तुमको माल लुटावे ।  
 मान कहे मेरी कही माने तो, तेरे निकट न आवे ॥५॥

तर्ज मारवाड़ी डके की । ताल कैरवा ॥

धर्म झोट में चोट करे ए खग चलभानें रे, टीकला कह्यो न माने ॥६॥  
 मन आवे क्यों धर्म बताय । असल धर्म सो कहवे नांय ।  
 फर दरवाजा बन्ध आप फिर चौकी लगाने रे । टीकला कह्यो ॥७॥  
 लांबा लांघा तिलक बनाय । कहीं पड़ा है घसमी रमाय ।  
 माया जारे गुरम्यां व्यूँ वे धूम मचाने रे । टीकला कह्यो ॥८॥  
 बने रहें धरमी महाराज । रतियन ज्ञाने धरम की लाज ।  
 भीड़ पड़े धरमी लुटीजे जड़ दूर भग तेरे । टीकला कह्यो ॥९॥  
 विश्व धरम ने दियो विसार । जद होयो ओ अत्याचार ।  
 भारत भूमि खेत गधों ने क्यों जो खसाने रे । टीकला कह्यो ॥१०॥  
 सत्य धरम को कियो आख्यान । अर्जुन आगे श्री भगवान ।  
 लंपट रोल मंचाय डन्ही को घूड़ मिलाने रे । टीकला कह्यो ॥११॥  
 देवनाथ शुद्ध धर्मी पाय । मान न बारे हाथे आय ।  
 अपने धरम विचार नाथ के रूप समाने रे । टीकला कह्यो ॥१२॥

राम पीलू । ताल कैरवा ॥

आंख छते ये अन्धे है, बाबा आंख छते ये अन्धे हैं ॥६॥  
 पुन और पाप गुण सब इनके, चलते ही चलते धन्धे हैं । बाबा आंख छते ॥१॥  
 इश्वर अनेक और धरम अनेको, कैसे छूटे खुद धन्धे हैं । बाबा आंख छते ॥२॥



जिस इश्वर से मुक्ति मागे, वे भी किसी के बन्दे हैं । बाबा आंख छते ॥१॥  
 चार जार को गिम्ना मणि ईश्वर, कैसे खयाल इनके गन्दे हैं । बाबा आंख छते ॥४॥  
 परतक बोले उसे नहीं ते, ने भाग जिन्हों के मन्दे हैं ' बाबा आंख छते ॥५॥  
 मानसिंह अब नाथ कृपा से, हम तो हुवे स्वधन्दे हैं । बाबा आंख छते ॥६॥

॥ दोहा ॥

बुरा जो कुंडल में गया, बुरा न पाया कोय ।  
 जो भिल खोज्या छाफणा, तो रुक सा बुरा न होय ॥

॥ सवैया ॥

बुरा ही बुरा मय कहत चलै पर पार बुरा जो निजर नहीं आया ।  
 मुझने बुरा कोई है ही नहीं सबसे ही बुरा तो मैं ही कहाया ।  
 आपने आप को भूल गया मैं सिंह छतों यों भेड बताया ।  
 आपने तप को रद किया फिर मुझ से बुरा निजर को आया ।  
 मरुधर पनि मान सभी से बुरा ऐसा जो बुरा फिर होन न पाया ।  
 मैं जो भला हूं तो जगन भजा है मेरे ही रू। तो जगन दिखाया ॥

तर्ज सिक्करे की । तल बैरबा ॥

अरे हां ओ सिकरो डराय रयो, ओ डराय रयो रे,  
 देखो; नित उठ माने नांय ॥८॥

इण सिकरे री तप सूं रे, देखो; डर रया तीनू ई लोक ।  
 ओ सिकरो जालम बणो रे, देखो, सबने है इणरो शोक ।  
 अरे हां ओ धाक जमाय रयो, नित्य डराय रयो रे ।  
 देखो, नित उठ माने नांय ॥९॥

इण सिकरे ने पकड़ने रे, देखो; किया है जतन हजार ।  
 पर बिन रूप धिन उड़ रयो रे; देखो, बिन मुख करत संहार ।  
 अरे हां ओ धूम मचाय रयो, नित उठ लाय रयो रे ।  
 देखो; नित उठ माने नांय ॥१०॥

बड़ा बड़ा रिखी हारिया रे, देखो; यकिया चौबीस अवतार ।  
 इण सिकरो सु तो सब डरे रे, देखो; सबने भान लिखी हार ।  
 अरे हां ओ गुप्त पकड़ाय रयो, छिप छिप लाय रयो रे ।  
 देखो; नित चठ माने नांय ॥३॥

ओ सिकरो घड़ी काल है रे, देखो; तन धन रेवेशा न काय ।  
 त्यागो अभिमान इण देह रो रे, देखो; जन्म मरख मिट जाय ।  
 अरे हां घेदान्त सुणाय रयो, क्यांने बिसराय रयो रे ।  
 देखो; नित चठ माने नांय ॥४॥

वेद को अन्त न आप है रे, देखो; वहां सिकरो पहुँचे नांय ।  
 अतह पंख धूँ रेखयो रे, देखो; सिकरो देख डर जाय ।  
 अरे हां यू भ्रम उड़ाय रयो, निज रस पाय रयो रे ।  
 देखो; नित चठ माने नांय ॥५॥

देवनाथ गुरु दया करी रे, देखो; सिकरो सु बिखे बचाय ।  
 मान हुतो जिते मारियो रे, देखो; महान बप्यों नहीं आय ।  
 अरे हां ओ नीन्द उड़ाय रयो, शुद्ध समाय रयो रे ।  
 देखो; नित चठ माने नांय ॥६॥

राम मैली । ताल-केरका ॥

है तू अनादि सदाई रे, बाबा है तू अनादि सदाई रे ॥६॥  
 तू न फही से आभा गथा है; जग उगने तेरे मांही रे ॥१॥  
 गहरे से गहरा मोटे से मोटा; बाहर कोई नहीं पाई रे ॥२॥  
 हलके से हलका भारी से भारी; तोल्या कवन बिष जाई रे ॥३॥  
 सब कुछ बोले और कुछ नहीं बोले; बायीं जहाँ बाई जाई रे ॥४॥  
 तेरी व्याख्या तू ही करत नित; तू मे मैं मिल जाई रे ॥५॥  
 मानसिद्ध फहे मैं तू मिटका है व्यों रदयो समाई रे ॥६॥

## वाणी संग्रह

॥ वाणी आसाभारथी जी महाराज की ॥

आज सतगुरु भेटिया म्हारे भलो ऊगो भाण । दीन ऊपर दया कीनी,  
दास अवणो जाण ॥टेर॥

गुरु अभय दान जो आपियो, जिन कापियो कर्माणि ।  
सोहं ब्रह्म समापियो, सो व्यपियो चडूं खाण ॥१॥  
गुरु ज्ञान भान जो भयो, गयो अज्ञान तिमिर खिसाण ।  
प्रगट पूरण हृदय हरमैं, दरस्यो परम दिवाण ॥२॥  
दिग्यायो सो दयाल चिदूघन, मया कर महाराण ।  
जीव ईश्वर लियो जामैं, हरंग बुद बुद जाण ॥३॥  
थाक मन ऊब धिर धयो, गहो एक ब्रह्म अबाण ।  
होय निज मन निरत निर्मय, मिल्यो पंद निर्वान ॥४॥  
एक सुधा समुद्र पूरण, कछो गुरु परवाण ।  
अनन्त फोटि ब्रह्मन्ध सब ि, ताकी किलोल समान ॥५॥  
उपज्यो आनन्द किलोल जामैं, ताहि मांय बिलान ।  
ब्रह्म उदक अगाध अविचल, डूबूं को तू पदियान ॥६॥  
गुरु पनित पावन पार कीनो, बहो जात अजाण ।  
कहे आसाभारथी, 'तन' मन थारूं प्राण ॥७॥

२

ऐसो एक सन गुरु भेद बनायो हो होजी । भेदत भेद आप भयो आपी,  
जिन माया अंक मिटायो ॥टेर॥

खोजन खोज फित है उदामी, वृथा बनवास करायो हो होजी ।  
खोजे सो आप खोज में ही खोजी, बन होय बन में रह्यो ॥१॥  
जब तप नेम प्रतादिक वीरथ, इन करि मुक्ति मनायो हो होजी ।

जीवत मुक्त आप में ही आपी, वृथा दश दिश घायो ॥२॥  
 बुद्धि विचार करे चित्त करके, कल्पित मन ही दौड़ायो हो होजी ।  
 बुद्धि होय बोध चित्त होय चित्तवत, मन होय मनन करायो ॥३॥  
 भेदत वंश चक्र घट छेदत, दशवों द्वार दिखायो हो होजी ।  
 देखे दिव्यावे आप आप को, वहां और नहीं आयो ॥४॥  
 दश प्रकार अनहद धुनि गुन सुन, धारण ध्यान धरायो हो होजी ।  
 धारण ध्यान धरे सो ही आप ही, आप ही नाद बजायो ॥५॥  
 दरपण में अपनो मुख दरसे, तहां नही आन दिखायो हो होजी ।  
 तैसे ही जान भास चेतनको, जीव और नहीं आयो ॥६॥  
 दरपण दूर दूर भयो दूजो, एक ही मुख ठहरायो हो होजी ।  
 जब भव भास कल्पना भागी, निराभास पद पायो ॥७॥  
 ज्यों रवि एक अनेक नयन मिल, अनन्त ही रूप दिखायो हो होजी ।  
 रवि करि नयन नयन गहे रूपा, रवि करि रवि दरसायो ॥८॥  
 यों अपनो तेज आप ही चेतन, आप को आप दिखायो हो होजी ।  
 आसाभारथी भेद असंभव, कहन गहन में नहीं आयो ॥९॥

३

गुरु बिना, भागे न भ्रम अन्धेरा रे; हो अन्धेरा रे । भेद बिना भौंद सब  
 मोही, भूल्योड़ा फिरे बहुतेरा रे ॥ १ ॥  
 सोलह गुन पर तकिया बत्तावे केवे, खेत कमल बिच डेरा रे; हो डेरा रे ।  
 खेत न पीत न रक्त न सायनो, परिपूरण चौकटा रे ॥ १ ॥  
 माया पेल अनन्त फल ईन्डा, एक एक में डेरा रे; हो डेरा रे ।  
 ईन्डरु में मीढक ज्यू बोले, केवे अगम घर मेरा रे ॥ २ ॥  
 जैन मत साध हूँ दिव्या, धखी न चारे जेरा रे; हो जेरा रे ।  
 करता बिना करम को माने, मन का करे मकेरा रे ॥ ३ ॥  
 राम रंग राचे, और नहीं जाचे, केवे पतिजन धर्म मेरा रे; हो मेरा रे ।  
 मेरा तेरा मान रखा मूरख, आत्म तत्व नहीं देरा रे ॥ ४ ॥

## वाणी संग्रह

॥ वाणी आसाभारथी जी महाराज की ॥

आज सतगुरु भेटिया ग्हारे मलो ऊगो भाख । दीन ऊपर दया धीनी,  
दास अपणो जाण ॥टेर॥

गुरु अभय दान जो आपियो, जिन कापियो कर्माण ।  
मोहं ब्रह्म समापियो, सो ज्यवियो चडूं खाण ॥१॥  
गुरु ज्ञान भान जो भयो, गयो अज्ञान तिमिर खिमाण ।  
प्रगट पूरण वदय डर, मै, दरस्यो परम दिवाण ॥२॥  
दिखायो सो दयाल चिद्घन, मया कर महाराण ।  
जीव ईश्वर तियो जामे, तरंग बुद बुद जाण ॥३॥  
थाक मन जय धिर थयो, गह्यो एक ब्रह्म अबाण ।  
होय निज मन निरत निर्भय, मिल्यो पंद निर्वान ॥४॥  
एक मुधा समुद्र पूरण, बह्यो गुरु परवाण ।  
अनन्त कोटि ब्रह्मन्ड सब टी, ताकी किलोल समान ॥५॥  
उपश्यो आनन्द किलोल जामे, ताहि मांय बिलान ।  
ब्रह्म उदक अगाध अविचल, ज्यूं को त्यूं पहिचान ॥६॥  
गुरु पतित पावन पार कीनी, बह्यो जात अजाण ।  
कहे आसाभारथी, 'तन' मन वाहं प्राण ॥७॥

ऐसो एक सन गुरु भेद बनायो हो होजी । भेदत भेद आप भयो आपी,  
जिन माया अंक मिटायो ॥टेर॥

खोजन खोज किरत है उदासी, वृथा बनवाम फरायो हो होजी ।  
खोजे सो आप खोज में ही खोजी, बन होय बन मे रहयो ॥१॥  
जय तप नेम व्रतादिक तीरथ, इन करि मुक्ति मनायो हो होजी ।

जीवत मुक्त आप में ही आपी, वृथा दशू दिश धायो ॥२॥  
 बुद्धि विचार करे चित करके, कल्पित मन ही दौड़ायो हो होजी ।  
 बुद्धि होय बोध चित होय चितवत, मन होय मनन करायो ॥३॥  
 भेदत घंठ चक्र घट छेदत, दशवों द्वार दिखायो हो होजी ।  
 देखे दिखावे आप आप को, वहाँ और नहीं आयो ॥४॥  
 दश प्रकार अनहस धुनि तुन सुन, धारण ध्यान धरायो हो होजी ।  
 धारण ध्यान धरे, सो ही आप ही, आप ही नाद बजायो ॥५॥  
 दरपण में अपना मुख दरसे, तहाँ नही आन दिखायो हो होजी ।  
 तैसे ही जान भास चेतनको, जोय और नहीं आयो ॥६॥  
 दरपण दूर दूर भयो दूजो, एक ही मुख ठहरायो हो होजी ।  
 जब भव भास कल्पना भागी, निरामास पद पायो ॥७॥  
 ज्यों रवि एक अनेक नयन मिल, अनन्त ही रूप दिखायो हो होजी ।  
 रवि करि नयन नयन गहे रूपा, रवि करि रवि दरसायो ॥८॥  
 यों अपना तेज आप ही चेतन, आप को आप दिखायो हो होजी ।  
 आसिभारधी भेद असंभव, कहन गहन में नहीं आयो ॥९॥

३

गुरु बिना, भागे न भरास अन्वेरा रे; हो अन्वेरा रे । भेद बिना भौंर भव  
 माही, भूल्योड़ा फिरे बहुतेरा रे ॥ १ ॥  
 सोलह सुन पर तकिया बतावे केवे, खेत कमल भिन्न डेरा रे; हो डेरा रे ।  
 खेत न पीत न रऊ न सायबो, परिपूरण चौफेरा रे ॥ १ ॥  
 माया खेल अनन्त फल ईन्डा, एक एक में डेरा रे; हो डेरा रे ।  
 ईन्डक में मीडक व्यूँ बोले, केवे अगम पर मेरा रे ॥ २ ॥  
 जैन मत साध हंडिया, धणी न धारे जेरा रे; हो जेरा रे ।  
 करता बिना करम को माने, मन का करे मकेरा रे ॥ ३ ॥  
 राम रंग राखे और नहीं ज्ञाचे, केवे पतिव्रत धर्म मेरा रे; हो मेरा रे ।  
 मेरा तेरा मान रया मूरख, आत्म तत्व नहीं डेरा रे ॥ ४ ॥

सोही पति सकल में व्यापक, अनन्त रूप उण केरा रे; हो केरा रे  
 अनन्त ही रूप एक अविनाशी, दे हृद बेहृद पर फेरा रे ॥५॥  
 भैरु भूत देवी देव मनावे केवे, पुत्र जीवाया इण मेरा रे; हो मेरा रे।  
 जन्म मरण उन ही के हाथे, सो सायब सब केरा रे ॥६॥  
 करता भरता हरता ईश्वर, तीनों ही रूप उण केरा रे; हो केरा रे।  
 ईश्वर अंश ब्रह्म का कहिये, ताका सकल पसेरा रे ॥७॥  
 मन मुख ज्ञान, कथे कलजुग में, पाखण्ड मत है घणोरा रे; हो घणोरा रे।  
 आसाभारथी एक अखण्डित, सो ही स्वरूप है मेरा रे ॥८॥

४

मन लोभी तू सारों सूं भूँडो रे; हो भूँडो रे। रात दिवस तोहें कह  
 समझाऊँ, एक न माने गुन्डो रे ॥८॥

हूँ तो कहूँ तू लाग भजन में, तू नहीं माने भूँडो रे; हो भूँडो रे।  
 माया कारण फिरे भटकतो, हाथ घाले जाय ऊँडो रे ॥९॥  
 भोगों कारण फिरे जग माही, हाथ लियाँ छुरो कूँडो रे; हो कूँडो रे।  
 ऐसा धका लगावे ध्यान में, जमी टिके जाय ऊँडो रे ॥१०॥  
 अंग आकार पछु नहीं जाके, हाथ पाँव बिन दूँडो रे; हो दूँडो रे।  
 एक पलक में खलक मुलक री; खबर ले आवे दूँडो रे ॥११॥  
 घेरयो न घिरे द्वेष मन धारे, बैर चितारे ऊँडो रे, हो ऊँडो रे।  
 घड़ी पलक में दृष्ट न आवे, संत भागा ले भूँडो रे ॥१२॥  
 आसाभारथी निव समझावे, तू नहीं माने गुन्डो रे, हो गुन्डो रे।  
 भागाँ पीछे हाथ न आवे, एक ब्रह्म कर दूँडो रे ॥१३॥

५

रेजारे मन तुम्हको कौन पत आवे होजी। पल में होय पृथ्वी पति सुर  
 पति, पल में रंक कहावे रे। जारे मन तुम्हको कौन पत आवे होजी ॥८॥  
 पल में गरे भंडुरि जी ऊठे, पल में दश दिश धावें होजी।  
 स्वर्ग पाताल देखी विन देखी, पल में खबर ले आवे रे ॥१॥

आवत लखे न आवत चाखे, तो मति कोई न पावे होजी ।  
 तेरो चक्षुष वेग लखे वायु, और छाराज ज्ञानवे रे ॥२॥  
 लोक वेद गुरु सज्जन संगठ, तिनकी संग नहीं जावे होजी ।  
 नू शठ सीस सुने नहीं छनकी, छपणी टेक चलावे रे ॥३॥  
 निन्द्य अनिन्द्य शुभ अशुभ न देखे, सार असार न भावे होजी ।  
 होती आनहोखी करे एक पलक में, ध्यान में धक्का लगावे रे ॥४॥  
 जो कुछ देखन को हम भेजें तो, बांही अटक रह जावे होजी ।  
 जो सुखवा को जाय रसीलो, तो पीछे नहीं आवे रे ॥५॥  
 वृषत न होय विषय रस करके, स्वाध्याय नांव अवावे होजी ।  
 भक्ति काज फेड़ कड़ पत्र हारथो, निर्लज्ज लोभ न आवे रे ॥६॥  
 पाल को फेरके परेवा दहावे, धूर को कायल बनावे होजी ।  
 ते गुटका दह जाय मान में, पल में आग लगावे रे ॥७॥  
 बाजीगर से खयाल रचावे, माना रंग दिखावे होजी ।  
 आसामोरधी कहे घन बाको, जो इन ते बच जावे रे ॥८॥

६

भय राठ अपने ही कर भूलायो हे । बन्धो आसक जंगल से होय कर,  
 निज स्वरूप विसरायो ॥टेरा॥

अपने रूप रूप में कैहरी, निरख पड़यो नहीं बायो हे ।  
 जो भ्रम मूल भटक रयो भौंद, भवे जल तरंग बहायो ॥१॥  
 गहें शुक नलिनी ऐसी दुख मान्यो मोये, किलही धान्य लटकायो हे ।  
 यो प्रथ तोप आप में मूरख, जान मान दुख पायो ॥२॥  
 न्यो कंस मुष्ट मूंद गारर में, छोलत नहीं भरमायो हे ।  
 ऐसे ही बन्धो अधिया आत्म, जय से जीव कहायो ॥३॥  
 सूखत घास पास मृगमद हे, पशु बच धृषा होहायो हे ।  
 यो भटकन फल भेद दिन भौंद, अन्तराल ना लखायो ॥४॥  
 घन करि राष्ट्र दाय लख कोलुप, कहे रवि गयो छिपायो हे ।  
 ऐसे ही मूढ आत्म मानत, जानत बन्धो बन्धायो ॥५॥



लख करि आन अज्ञान फटिक पर, छोड़त दन्त रिसायो हे ।  
 यों कर राइ परस्पर मारत, होय होय दुख बढ़ायो ॥५॥  
 काच के सदन स्थान लख आन ही, भूंक भूंक भरमायो हे ।  
 यों लख सकत अज्ञान ज्ञान बिन, बुद्धि हीन बहकायो ॥६॥  
 अपने रूप आप ही चेतन, आपको आप भूलायो हे ।  
 आसाभारथी आर आपमें, मौन गही जिन पायो ॥६॥

७

तेरे धम तू ही भूलायो, तेरे को तू ही नहीं पायो ॥टेरा॥  
 नृप जब नीन्द में सोयो, स्वप्न में रंक होय रोयो ।  
 जाग्यो जब स्वप्न भग्न खोयो, भूष तो हो तो सो ही होयो ॥१॥  
 मुकर के महल में आयो, आन लख स्थान भूँकायो ।  
 नलिनी गह कीर कूकायो, मुझे किन बांध लटकायो ॥२॥  
 मकड़ी जिम तार फैलायो, फन्स रच आप अलुभायो ।  
 रची इम लालकी फांसी, घन्थो यो आप अविनारी ॥३॥  
 कहर इम भारथी आसा, अजब दुनिया का समाधि ।  
 शुद्ध निज रूप नहीं जाम्यो, जगत को दुखमुख कर मान्यो ॥४॥

८

समक तू आपको सारे, तेरो क्या रूप है प्यारे ॥टेरा॥  
 बराबर में व्यापक है जो ही, तेरो निज रूप है चोही ।  
 दुही को दूर कर जोई, तेरे बिन और नहीं कोई ॥१॥  
 विरंगी रंग रंग के मांही, भलक रही नूर की भांही ।  
 यहाँ वहाँ देखवा काँई, सबल में एक है साँई ॥२॥  
 नाना विध दीखना जो ही, लोहे में शस्तर है त्योही ।  
 चेतन का विवृत है सोई, आत्म में हुवा न है दोई ॥३॥  
 आत्म परिपूरण निज है ई, यज्ञ दृढ़ वैराग कर जोई ।  
 भारथी आसा निज सो ई, भेद का लेश नहीं कोई ॥४॥

हारे भाई परिपूरण रस एक दशों दिश, किण दिश आरती कीजे ।

आप प्रकाश जामु आगे किम, दीपक कर देखीजे ॥८॥

हारे भाई व्यापक सकल ताहि आवाहन, कर कैसे तेकीजे ।

आप आधार सरब को समरथ, जिन आसन किम दीजे ॥९॥

हारे भाई शुद्ध स्वरूप आत्मन कैसे, हृच्छा न करय क्यों लीजे ।

निरमल निज निराकार निकैबल, केम सिनान सजीजे ॥१०॥

हारे भाई निरालंब जिन कैसे जीनेऊ, भरण आभरण न लीजे ।

अनन्त ब्रह्मण्ड विश्व को डाकण, केम बख पहरीजे ॥११॥

हारे भाई निज निर्लेप गन्ध किम लेपे, कैसे तिलक करीजे ।

निर्योसना पुण्य किम परसे, अंजन ताम्बूल न चढ़ीजे ॥१२॥

हारे भाई है निर्गन्ध घूप जिन कैसे, निरफल काम न लीजे ।

नित्य रुपत नैवेद्य न बाहे, भोला भरम पतीजे ॥१३॥

हारे भाई नित्यानन्द दक्षिण कैसे, अगम मुद्रा किम रीके ।

स्वयं प्रकाश ज्ञान निज आपो, विराजमान किम कीजे ॥१४॥

हारे भाई एक अद्वैत खुती कैसे, अनन्त परिक्रमा न कीजे ।

अन्तर बाहर एक रस अविगत, केम डन्डोव करीजे ॥१५॥

हारे भाई निर्विकल्प में कल्पे मूरत, पूजा कर परचीजे ।

हीन होय चारे धरणी धरियो, असल नही ओलसीजे ॥१६॥

हारे भाई सो अद्भुत उपदेश अनुपम, क्या किम कर दीजे ।

आसामारधी भेद असंभन, लख चुपचाप रहीजे ॥१७॥

१०

हारे भाई जोयो जोयो अचल अखंड अमंगी, बहुरंगी एक सारा ए हां ।

अन अंगी समल सर्वगी, मिल संगी नित न्यारा ए हां ॥देरा॥

हारे भाई मौल फरी मेहराण महान्नम, अनन्त देश विस्तारा ए हां ।

एक देश में अज्ञान अलोकित, लपकी ताहि मेभार ए हां ॥११॥

इम जाग गत सचियार थारा, बाजते निसाण हो ॥३॥  
 नहीं शिखिर सागर गगन धरणी, गांव बिन गम जाय वरणी ।  
 जोत जागी निमिर हरणी, इम पछम ऊगो भाण हो ॥४॥  
 अनन्त रचि शशि जोत जागी, सुरत मिलकर शबद पगी ।  
 अगम मुरना गई है आगी, करी जिन ओलखाण हो ॥५॥  
 मेरु शिखिर अमग गङ्गा, असंग धारा अमी तरङ्गा ।  
 अधर भास भेल अङ्गा, गुटक गुरु गम जाण हो ॥६॥  
 ठठे नाम धुन सुन परम भेला, जाय कीना ब्रह्म मेला ।  
 करस परस करे केला, अनन्त मौजां माण हो ॥७॥  
 अत्ये मन्डल निरल नूरा, निमरण लागत सन्त सूरा ।  
 बाजिया अनदद तूरा, परम पुरुष पिछाण हो ॥८॥  
 सूर शशि भिन सुखम लागत, बह्म भेदी भरम भागा ।  
 आसाभारथी भाग जागा, भेटिय महाराण हो ॥९॥

१४

२। यो भाई हम करमन से न्यारे । सचित और क्रियमाण अज्ञाना,  
 ज्ञान अग्नि कर जारे ॥ देर ॥

अहं प्रअ ज्ञान जव आयो, सब जर बर भये द्वारे ।  
 रहे करम प्रारब्ध भोग हित, भूने अन्न आदारे ॥१॥  
 बादल में शशि धावत दीखे, शीत ते तोय धुवांटे ।  
 कृष्ण के संग अरुण भयो अम्बर, यों प्रारब्ध हमारे ॥२॥  
 चालत नाथ चपल हुम दीखे, कम्पत तोय ब्यारे ।  
 शूर शक्ति करि बाण वेग लहे, यों नहीं करम आधारे ॥३॥  
 सलिल संग राशि सूर चमलता, रङ्ग सङ्ग फटिक रङ्गारे ।  
 जलके निरुट वृत्त भये ऊँचे, यों सङ्ग देह हमारे ॥४॥  
 सीता फटु लगे पित्त दोष ते, विमिरं दोष अमारे ।  
 श्वेत पीत रङ्ग दोष ते दीखे, यो सब देह विकारे ॥५॥  
 चोर की सङ्ग सांध को चोर, सब कोई कहत पुकरे ।

अणु-चक्षुः सज्ज नैन भ्रमत भये, यों जानो करम सारे ॥६॥  
 पीत मुकर मुख दरसत पीरो, करे सज्ज भये सारे ।  
 यों आरब्ध करम सज्ज भोगो, भोगत देह हमारे ॥७॥  
 जीवन मुक्त देह सज्ज हम ही, होय विदेह भव न्यारे ।  
 देह विदेह सज्ज ले लीना, मिट गई बचन न्ययहारे ॥८॥  
 बचन भेद आकारा नीला भयो, एक तम निराकारे ।  
 तेसे ही सखन्द भारयी आसा, सोई स्वरूप हमारे ॥९॥

१५

साधो भाई सतरी सज्जत मुख धारा । जो कोई भाय न्हाय नित सा में,  
 हो आवे भव जल धारा ॥१०॥

सज्जत गङ्गा प्रवाह प्रेम जल, कथा फिलोस अवार ।  
 बचन कहर गुरु देत क्या निधि, ज्ञान रतन तत् सारा ॥११॥  
 अथ जन अनन्त विगङ्गाबारा, तिन मिल होवे जल भार ।  
 साधू आस चरण तट धारे, निरसत होवे जल सारा ॥१२॥  
 लोख कठोर टोर सहे घन की, होवे कवी कुदासा ।  
 पारस सज्ज अङ्ग दृष भूपण, कमल ज्वन सिर धारा ॥१३॥  
 घीरयो पेट फिरे भूमी पर, कीट करम का भार ।  
 गहि कर भङ्ग कीट अपने सज्ज, भङ्ग होय करत गुंजारा ॥१४॥  
 रहे बहू फेर फेर सज्ज बन्दन, द्रम बन काण्ड करारा ।  
 शीतल सरस गंध भई सब में, मलिन्य करत बन सारा ॥१५॥  
 बन्दन के सज्ज बन्दन हो गये, महीधर धर तरु सारा ।  
 कपट गांठ बांस के अन्दर, भेदत नहीं लिगारा ॥१६॥  
 हेन चौफेर सरु छाया तरु, रहे द्रम के द्रम सारा ।  
 ताहि सखसङ्ग अंग नहीं न्यापे, बुझा कमल देह धारा ॥१७॥  
 कामयेनु कल्पतरु चिन्तामणि, फल पांक्षित दे सारा ।  
 मिटे नहीं प्रास बिना सत सज्जत, होवे नहीं करम उपारा ॥१८॥  
 विन सतसङ्ग इरीकी कयाके, होवे नहीं मुक्ति अधिकारा ।

हां भाई उनसे भई आवरण अविद्या, और विज्ञेय विकारा ए हां ।  
 तामे मिल ईश्वर भयो नाना, शुद्ध ब्रह्म मिल न्यारा ए हां ॥१॥  
 हां भाई सभर भरयो शुद्ध ब्रह्म सरोवर, जाका वार न पारा ए हां ।  
 करी किलोल ईश्वर ता मांही, चली जो मन्तर धारा ए हां ॥३॥  
 हां भाई उन धारा में धार चली अहकारा, गरजी माया भंकारा ए हां ।  
 तिरगुण तरंग लठी ता मांही, क्रिया अनन्त घून्त विरता ए हां ॥४॥  
 हां भाई ईश्वर एक तरंग अग में, अनन्त तरंग अपारा ए हां ।  
 बुद्ध बुद्ध जीव रच्यो चौआनी, पिन्ड प्रच्छन्द पसारा ए हां ॥५॥  
 हां भाई तत् पद लहर लिथी ता मांही, त्वं पद घून्त अपारा ए हां ।  
 चिद् घन मुधा सिन्धु दावन में, असि पद जल इक सारा ए हां ॥६॥  
 हां भाई आसाभारथी आपही वारण, आपही तिरये हारा ए हां ।  
 जल की लहर लीन जल मांही, ऐसा भेद हमारा ए हां ॥७॥

११

पद तो अगमछैजी। गम करने के कम जाण्यो जाय; पदो पद तो अगम छैजी ॥देर॥  
 आदि नथी धारो रे अन्त न आवे, मध्य बखो नहीं जाय ।  
 गुप्त कहे तो प्रगट परिपूरण, प्रगट ही गुप्त समाय ॥१॥  
 अधर कहू तो घटो घट धारियो, धर कहू अधर रहाय ।  
 धर नहीं अधर सहज सब धरधर, समरथ रह्यो समाय ॥२॥  
 स्थूल वैराट उभय रच ईश्वर, यूं धर अधर कहाय ।  
 धर ही माया अधर ही माया, सब उनकी परछाय ॥३॥  
 है मन मांय मनन मे नहीं आवे, बोधत बुद्धि नहीं पाय ।  
 चित मे चितवनमें नहीं आवे, नित चेतन चित नांय ॥४॥  
 वय मय ज्ञान यके सब खानी, हेरत सोही हेराय ।  
 है श्रुति मे श्रुति हू नहीं जाने, नेति नेति कहे लाय ॥५॥  
 एक अलख अलख परिपूरण, दूजो केम बताय ।  
 जो कहू एम जीव मैं जानूं, जीव जुदो नहीं भाय ॥६॥

हे सब मांय मिले नहीं भेलो, बिनस्यो विगत न थावे ।  
आसाभारथी भेद असंभव, अकथ कथ्यो नहीं जाय ॥५॥

१२

अदभुत चरित अदेख दिखायो । देखत देखण हार बिलायो ॥६॥  
अरधन उरष दशु विश देखा; सुरत रावद नहीं पावे शिवेका ।  
आगे न पीछे बीच बसायो; गुप्त न प्रगट सकल घट छायो ॥१॥  
बिन श्रवण सुणवे वाणी; बिन मुखके समभावे ज्ञानी ।  
अन्तः करण बि ॥ ओलखायो; अन्तरगत सब मांय समायो ॥२॥  
बिचार करत बिचार बिलायो; खोजत खोजण हार नहीं पायो ।  
हेरत हेरत सोही हेरायो; देखत देखत दृष्ट न आयो ॥३॥  
जो कोई एक ही प्रह्न मत्तावे; एक अनेकों में नहीं आवे ।  
जो कहे दूर निकट ही पायो; तो पावण हार और नहीं आयो ॥४॥  
जब मन सुरत रावद में लागे; रावद ही अगम बतावे आगे ।  
कहा कहूँ कहत नहीं आयो; कहाँ कहाँ हार नहीं पायो ॥५॥  
एक सत्ता में सत्ता सब भासे; एकण सत्ता में सकल प्रकासे ।  
सत्ता स्वरूप लखण में नहीं आयो; लललल मांही अलललखायो ॥६॥  
आसाभारथी अकथ कहाली; बकत थके कथत बहु वाणी ।  
कहा कहूँ धने न बतायो; पयू चुप चाप गुंगे गुड़ खायो ॥७॥

१३

परियाय पूरा जिकां पायो-हे । आपमें आपे दिखायो, नेति नेति निताम गायो,  
ध्यायो सदर दिवाण हो । परियाय पूरा जिक्रं पायो हे ॥८॥  
घाट औघट घाट बेगम, अट करम कपाट खोले ।  
ग्यांरी सुधद सुरता नहीं होले, जिके सन्त मुजाण हो ॥९॥  
चलण मग बिन पंय म्या बिन वचन लग बिन जीम खोले ।  
ध्यांरी मनो ममता पढ़ी खोले, कुटुम्ब बाधा बांध हो ॥१०॥  
जैम मल्ल जल छलट धारा गढ़े मकड़ी भीण तारा ।

इम जाग गत सचियार ग्याग, धाजते निस्ताण हो ॥३॥  
 नही शिंदिर सागर गगन घरणी, गांव चिन गम जाय घरणी ।  
 जोन जागी निमिर हरणी, इम पक्षम उगो माण हो ॥४॥  
 अनन्त रवि शशि जोत जागी, सुरत मिलकर शब्द पागी ।  
 अगम मुरना गई है आगी, करी जिन ओलखाण हो ॥५॥  
 मेरु शिम्बिर अमग गङ्गा, अलंग धारा अमी तरङ्गा ।  
 अधर भारा भेल अङ्गा, गुटक गुरु गम जाण हो ॥६॥  
 ठटे ताम धुन सुन परम भेला, जाय कीजा ब्रह्म मेला ।  
 करस परस करे केलां, अनन्त मौजां माण हो ॥७॥  
 अखे मण्डल निरव नूरा, मिमरख लागा सन्त सूर ।  
 वाजिया अनदद तूरा, परम पुरुष पिद्वाण हो ॥८॥  
 सूर शशि भिन गुप्पम लागा, बङ्क भेदी भरम भागा ।  
 आसाभारधी भाग जागा, भेटिय महाराण हो ॥९॥

१४

साथो भाई हम करमन से न्यारे । सचित और क्रियमाण अज्ञाना-

ज्ञान अग्नि कर जारे ॥ टेर ॥

अहं मझ शान जय आये, सब जर घर भये धारे ।  
 रहे करम प्रारब्ध भोग हित, भूने अन्न आधारे ॥१॥  
 बादल में शशि धावत दीखे, शीत ते तोष धुवारे ।  
 अध के मंग अरुण भयो अम्बर, यों प्रारब्ध हमारे ॥२॥  
 बालत नाथ अपल हुम दीखे, कम्पत तोष ब्यारे ।  
 शूर शक्ति करि बाण वेग लहे, यों नहीं करम आधारे ॥३॥  
 सज्जित संग शशि मूर चलता, रङ्ग सङ्ग फटिक रङ्गारे ।  
 जलके निकट वृत्त भये ऊँचे, यों सङ्ग देह हमारे ॥४॥  
 सीता फट्ट लगे पित दोष ते, तिमिर दोष अमारे ।  
 श्वेत पीत रंग दोष ते दीखे, यो सब देह विकारे ॥५॥  
 चोर की सँझ साध को चोर, सब कोई कहत पुकारे ।

चरण-पङ्क्तन सङ्ग नैन धमत भयो, नौ जानौ करम सारे ॥६॥  
 पीत सुन्दर मुख दरसन पीरो, झरे सङ्ग भयो चरे ।  
 नौ प्रारब्ध करम सङ्ग सोलो, भोग्य देह हमारे ॥७॥  
 जीवन मुक्त देह सङ्ग ह्व डी, होय विदेह ध्व न्याये ।  
 देह विदेह सन्द छे सीमा, मिट गई बचन जगदहारे ॥८॥  
 प्रचन भेद आकाश नील भयो, एक नम निराधारे ।  
 तैछे ही अकलभ भारपी आसा, सोई स्वरूप हमारे ॥९॥

१२

साधो गई सतरी सङ्गत मुख धारा । जो कोई पाय न्याय नित या में,  
 हो कामे सब लल धारा ॥१०॥

सङ्गत गङ्गा प्रसाद प्रेम अल, क्या किञ्चल अपारा ।  
 प्रचन सहार गुरु देव दया निधि, ज्ञान रसन वत् सारा ॥११॥  
 अथ जन अज्ञान विगल धारा, जिन मिल होवे जल मारा ।  
 साधू पाय करण तट धारे, निरमल होवे जल सारा ॥१२॥  
 कोछ कठोर ठौर सहे पन को, होवे कसी कुशाखा ।  
 धारस सङ्ग अङ्ग रूप मूल्य, कनक झर सिर धारा ॥१३॥  
 पीरयो पेट किरे भूमी पर, कीट करम का मारा ।  
 गरि कर भङ्ग कीट अपने सङ्ग, भङ्ग होय करत गुं जारा ॥१४॥  
 रहे चहूँ केर घेर सङ्ग चन्दन, द्रव बत काष्ठ करारा ।  
 शीतल सरस गंध भई सब नै, मलिन करत बन सारा ॥१५॥  
 चन्दन के सङ्ग चन्दन हो गये, महीधर घर घर सारा ।  
 कपट गर्भ धांस के अन्दर, भेदत नही लिगारा ॥१६॥  
 हेन चौधर मरु छाया तरु, रहे द्रव के द्रव सारा ।  
 कदि सत्सङ्ग अंग नही नवाये, वृथा कनक देह धारा ॥१७॥  
 कामधेनु फलपत्र पितृतामसि, फल वीक्षित वे सारा ।  
 मिटे नही आस बिना सत सङ्गत, होवे नही परम उकारा ॥१८॥  
 बिन सतसङ्ग श्रीकी कथाके, होवे नही मुक्ति अधिकारा ।



धिन प्रभु हेत खेन है सूको, जीवत प्रेत पसारा ॥६॥  
 निर्मल बृन्द बड़े आसू की, बरसे अमृत धारा ।  
 मुक्त सीप सरप मुख विप भयो, बरतन का व्यवहारा ॥ १०॥  
 कर सतसङ्ग ८४ दरी लागी, भागा भरम अन्यारा ।  
 आसाभारथी सङ्गत निज गंगा, ऊँच नीच को तारा ॥११॥

१६

साधो भाई जग मिथ्या दरसाई । जगत रूप सोई है परमात्म,  
 सत बिना जड़ कुछ नाई ॥देर॥

दृष्टिगोचर स्थूल पदारथ, ये सब धरण मिलीं ।  
 अवनी मिले तोय के सङ्गा, आपा अगन समाई ॥१॥  
 पावक मिले पत्रन में परतक, नम में यात बिलाई ।  
 व्योम अज्योम और चारु तत्व, चेतन मांय लखाई ॥२॥  
 सीपी रजत स्थाणु पुरुष है, रज्जु सरप दिखाई ।  
 गगन नीलता घृग जल छल जिम, यों ब्रह्ममें विरच दिखाई ॥३॥  
 जोगी जह्मम उती मन्यासी, नेति नेति कहे लोई ।  
 आदि अन्त और मध्य म बा में, नहीं एक नहीं दोई ॥४॥  
 सूत्र पुराण वेद और गीता, ये सब कहे थक जाई ।  
 जप तर होम कीरतन पूजा, है त्रिपुटी के माही ॥५॥  
 अन्तःकरण के धरम ये कहिये, काम और लोभ सदाई ।  
 जो कोई अज्ञ आप में कलपे, मिथ्या भरम सुलाई ॥६॥  
 शम दम और विवेक धैरागा, ये साधन दरसाई ।  
 सतगुरु महिमा अधिक सभी से, आदि अनादि से गाई ॥७॥  
 अजर अमर अविनारी आनन्दा, जित चेतन निरभोई ।  
 अखे अद्वैत अलुब्ध अजन्मा, आसाभारथी है सोई ॥८॥

१७

फकीरी उन मुन रहत उदास । होय मन मगन फिर मरजीवा,  
 जीवत मसाम्यों में पस ॥देर॥

हां जरना आरे कुबष बिहारे, ममता भारे वास ।  
 आशा कृष्णा चिन्ता मिथ्या, कियो सघन को नाश ॥१॥  
 हां सैया शीत लषण चिन ओढण, पौढण भूमि निवास ।  
 धूली ध्यान धीरज गहल कथा, निर्मय नगरी में वास ॥२॥  
 हां ज्ञान मुषा गहल नित नावत, ब्रह्म गुफा में वास ।  
 आसन अहिग अजपा सिमरण, सोहं स्वासो स्वास ॥३॥  
 हां बैठ दिवैक वृत्त की छाया, चित चेतन के पास ।  
 परमानन्द तीरथ पर तापे, एको एक निराश ॥४॥  
 हां भोली चदर पास कर पातर, मिच्छा क्षेत्र निराश ।  
 आवाभारथी अदल फकीरी, ऊँच नीच सम आस ॥५॥

### ॥ बाण्डी श्री रामदेव जी महाराज की ॥

असर पधाओ न्हारे घंट रह्यो हेजी होजी; होय रया मंगलाचार ॥१॥  
 आया ए जोगेश्वर न्हारे पावया हेजी होजी; धर सायब अपतार ।  
 चालो ए वधावों आपां जुगत सू हेजी होजी; नहीं तर रह जांसों लार ॥ १ ॥  
 मारग बेलरी धारियो हेजी होजी; मेठ्यो २७ अलुजाक ।  
 पोश पयन्ती लोल दी हेजी होजी; मध्यमा कियो है निहार ॥ २ ॥  
 परा नगर में गुरु ने लाभया हेजी होजी; प्रमानन्द दरबार ।  
 दुरियात तखत पिछाय-दो हेजी होजी; जदिया रतन अपार ॥ ३ ॥  
 पांच मीस दस भेला हुया हेजी होजी; होय रही मीक अपार ।  
 धमने सुरत सहेलदी हेजी होजी; भर गक मोतिथों रो आल ॥ ४ ॥  
 दोल धन्यो ए सैया ध्यान रो हेजी होजी; धुल रया रंग अपार ।  
 सन्त पधाय घर लाबिया हेजी होजी; मिट गयो भेद विकार ॥ ५ ॥  
 राम रीझ राजी हुया हेजी होजी; एको दृष्टि निहार ।  
 सगलां ने आप में भेलियां हेजी होजी; कोई नहीं राख्यो है लार ॥ ६ ॥  
 ७ मयो हेजी होजी; सुरत कियो रे विचार ।

हम और सतगुरु दोय जणा हेजी होजी; करसों बचन बिहार ॥ ७ ॥  
 तब हंस बोल्या म्हाारा नाथजी हे नी होजी; तू है मूरख गंवार ।  
 मैं सो तू तू सो मैं ही हूँ हे ना हाजी; रहे नहीं भेद जिगार ॥ ८ ॥  
 मैं और तू दोनूँ मिट गया हेजी होजी; अपना ही आप आधार ।  
 इष्ट विध सन्त बधावजो हेजी होजी; कदेई न पडे जम री मार ॥ ९ ॥  
 सत रो बधायो साधो गावियो हेजी होजी; कर कर मन में प्यार ।  
 कहे रामदेव पहुँचियो हेजी होजी; इद बेहद सूँ पार ॥ १० ॥

॥ दोश ॥

रामा सामा आव जो, कलजुग बहत करूर ।  
 अरज कल अजमाल रा, म्हाारे सामो जोय जरूर ॥  
 हरजी कहे हालो देवरे, परसों रामा पीर ।  
 दुखियों तणा जो दुख हरे, रहे सकट में सीर ॥

३

म्हाारे तो इष्ट तुम्हारो अजमाल सुत, म्हाारे तो इष्ट तुम्हारो ।  
 आप कहो के हूँ मैं सकल में, माने नहीं मन म्हाारे । अजमाल सुत ॥ १ ॥  
 सामा उभा ने अन्तर किए विध, ओं कोई मतो है तुम्हारो ।  
 सिबरे जिहां री सहाय करो थे, डूबतों ने तारो ॥ १ ॥  
 केवो किए विध भूलां आपने, ओ होसी अन्तर भारो ।  
 सिबरदां काज सार दो पल में, सुण दुर्बल री पुकारो ॥ २ ॥  
 हर शरणे भाटी हरजी बोले, थे म्हाारे प्राण आधारो ।  
 ऐसो ज्ञान मोय नहीं भावे, सेवक हूँ चरणों रो ॥ ३ ॥

४

म्हाने दोय मत जाणो भाटी हरजी, म्हाने दोय मत जाणो ।  
 हम तुम दोनो एक कहीजे, आत्म भाव पिछाणो । भाटी हरजी ॥ १ ॥  
 महीं मैं, धणी ने ना तूँ सेवक, इष्ट भूलने दूर दटाखो ।

आ निश्चय कर आप पीर होय, भेद ने भाव मिटाखो ॥ १ ॥  
 नहीं अजमल घर जन्म लियो मैं, नहीं कोई देह धराखो ।  
 भूजे भाव लियो ये हरजी, चले सूं चलमाखो ॥ २ ॥  
 वेद ने ग्रथ साख देवे सगला, आदि ब्रह्म कहाखो ।  
 म्भारो सपत्नियों पार न होखो, मिलसी नहीं ठिकाखो ॥ ३ ॥  
 अरण्यो ही रूप जाण तूं म्हांने, और भाव मत आखो ।  
 केवे रामदेव सुणो भाटी हरजी, भरम सूं दूर छुटाखो ॥ ४ ॥

५

मैं हूं नेडा सूं नेडो हरजी, मैं हूं नेडा सूं नेडो । दूर जाणो ज्यानै  
 दुरमत कहिये, पावे कष्ट बखेरो; हरजी ॥ ६ ॥  
 पांच तीन जो कहे सभरी में, भेद न जाणो मेरो ।  
 इण सूं नंजीक रहूं मैं इरदम, इण सब ही ने प्रेरो ॥ ७ ॥  
 मन बुद्धि चित्त अहंकार चार ये, मेरो रूप नहीं हेरो ।  
 पास रहूं यांने नहीं पुके, हुय रयो तिमिर बखे रो ॥ ८ ॥  
 सवसूं पहिले इभी एक कहिये, पीछे मनो है बखेडो ।  
 सभी समेट एक में करले, जग है रूप बह मेरो ॥ ९ ॥  
 म्भारो कयो मान ले हरजी, परचो करदूं तेरो ।  
 जगतो सकल ज्ञान बिन अन्धी, तूं क्यों मिलियो भेलो ॥ १० ॥  
 म्भारो साथ हाथ तेरो पकहु, मते फिर अलयो फेरो ।  
 केवे रामदेव सुणले हरजी, मत होय समता रो चेरो ॥ ११ ॥

६

आ मत किण विष आवे, हो महाराजा; म्भारे मन नहीं भाषेजी ॥ ६ ॥  
 प्रगट्या प्रगट आण अजमल घर, झूठ बचंखो किम जावे ।  
 क्योंकर झूठ कहूं म्भारे मुखसूं, जगमें जाहिर कहावे ॥ १ ॥  
 ये तो केवो के अनेकों में रहेऊ, म्हांने अनेक दरसावे ।  
 एक हूये तो दूली क्यों रोवे; रोवत अंठे क्यों आवे ॥ २ ॥

मृत्ने भूलावण काम रच्यो ये, हरियो छोड़ण नही पावे ।  
हर रामखे भाटी हरजी बोले, मृदरे तुम इष्ट कहावे ॥१॥

७

ना कोई गया न आया भाटी हरजी न कोई गया न आया ।  
लाही ठोड़ फटेई नहीं दोसे, मारत जिलभूं रवाया । भाटी हरजी ॥देरा॥  
मिसरी मरोसे राख मठ सावो, मुख कढ़यो हो जाया ।  
परचा मांय भूल भत हरजी, अपना आप दिखाया ॥१॥  
ज्योकर निश्चय करे रे अकरने, दौड़ दौड़ यहाँ आया ।  
अनो स्वरूप समकहे इनछे, परचा आप ही पाया ॥२॥  
चेतन देव भूल गया अणख, मथरों सिर परचाया ।  
पूजत पधर डगर सब छोई, सुपने अकल नही आया ॥३॥  
साचो अवदेश कइ मैं धाने, बालीनाथ समझाया ।  
केरे रामदेव सुख भाटी हरजी, अनखे ही आप गमाया ॥४॥

८

भूला ने मारग बताये हो बापजी, भूला ने मारग बतावोजी ।  
मोपर महर करो महराजा, निज कर मोय समझावो; हो बापजी ॥देरा॥  
मैं तो देव आपने जाहया, और देव नहीं ध्यावोजी ।  
बाप ही केजो के देव कोई दूजो, ओ भगं वर भगवो ॥१॥  
मृदरे तो इष्ट आप एक कहिये, दूजो नोय मनावोजी ।  
आ पंडई नात कही अजमाल रह, मोय अचम्मो थाखे ॥२॥  
दिन और रात आपने सिवरु, और निष्ठागुण गाऊंजी ।  
मापने छोड़ कडे अब जाऊं, किछ विष देव हरसाऊं ॥३॥  
हर रामखे भाटी हरजी बोले, सुवां ने लाल अणावोजी ।  
महर करो अजमाल गुन रामा, जन्म ने मरण बिदावो ॥४॥

६

केणो मानले म्हारो भाटी हरजी, केणो मानले म्हारो । केणो मान्य  
 कलङ्क सब मिटसी, परचो होसी थारो; भाटी हरजी ॥८॥  
 आपही देव ने आपही पुजारी, आप दुखी ने सुखियारो ।  
 आपणो ही परचो आप लेव है, खेल रूप जग सारो ॥९॥  
 नौकर चाकर एक नहीं म्हारे, ब्रह्म रूप ज्ञाधारो ।  
 आपणी इच्छा से आप होत सब, नहीं कोई करये हारो ॥१०॥  
 ना मैं किछी ने परचो देखूँ, नहीं तिराऊ नहीं तारो ।  
 आपणो भाव आप होय परगट, नहीं आसाण हमारो ॥११॥  
 समता छोड़ एक होय मिल ले, मौड़ छोड़ वे सारो ।  
 कहे रामदेव मुखलो हरजी, कहूँ मैं बार ही बारो ॥१२॥

१०

फहो किमकर पत आवे ही बापजी, कहो किमकर पत आवेजी ।  
 मैं तो इष्ट आपने पकड़या, दूर किया नहीं जा वे ॥८॥  
 सिंघर या पैल आपो ये सबेला, पलक डील नहीं लोवेजी ।  
 कहो क्योंकर अब भेल समझूँ, वात समझ नहीं आवे ॥९॥  
 साधू सन्त आपने सिंघरे, सर्व जग माने ध्यावेजी ।  
 दुखियों रा दुख दूर कर देवी, भेला पूरण पावे ॥१०॥  
 आप कहो के संव मांय न्यैसक, कहो किम देखये जावेजी ।  
 परतक देव सामने ऊमा, अलंगा क्यों समझावे ॥११॥  
 म्हारे तो ब्रह्मदेव नहीं चहिये, कृष्ण देव नहीं चावेजी ।  
 हर शरणे भाटी हरजी बोले, भूलाने मारग बतावे ॥१२॥

११

आई है भूल थारे मांई भाटी हरजी, आई है भूल थारे मांई ।  
 जब तक मोय मानुस कर पूजो, तब तक मुक्ति नाई; भाटी हरजी ॥८॥  
 नहीं अजमाल चाप मेरो कहिये, साव नेखाई नाई ।

तन अभिमान छोड़ दे हरजी, पूज पूज निज साई ॥ १ ॥  
 तन तो मंड्यो ने फेर बिखरसी, ओ इष्ट निभेला नाई ।  
 बोले राम नहीं है कोई छानो, दूर करो जल सूं काई ॥ २ ॥  
 जय तक कंवर जागो अजमाल रो, तय तक सुख नहीं पाई ।  
 अजमाल कंवर मरे और जनमे, इण भ्रम मे भटकाई ॥ ३ ॥  
 नहीं तू मिन नहीं मैं इष्ट थारो, छोड़ परी दुतियाई ।  
 रमता राम अतीत एक है, केवल रूप गुसाई ॥ ४ ॥  
 बालीनाथ री कृपा भई जद, धूवर ने दिवी है उढाई ।  
 केवे रामदेव मुनो भाटी हरजी, आ साचोड़ी राह बताई ॥ ५ ॥

१२

बात दाय नहीं आवे अन्नदाता, याव दाय नहीं आवे । थे हो देय दास में  
 थारो, किण विध मिलव्यो आवे । अन्नदाता ॥टेर॥  
 सिधरे जिकोरी सहाय करो थे, पलमें पार लगावे ।  
 परतक परचो क्योंकर छोड़ूं, उलटो मरम दरसावे ॥१॥  
 खेवों धूप धखी रे आगे, जद ही परचो पावे ।  
 होय लीले असवार अन्नदाता, हाजर आण सिधावे ॥२॥  
 थे केवो के ब्रह्म सकल में, म्हाने नहीं दरसावे ।  
 अगम अरूप नहीं गम जियरी, म्हारे काम काई आवे ॥३॥  
 थारो ब्रह्म तो येईज रहण दो, म्हारे मन नहीं भावे ।  
 हरियो चाकर राज रो रेसी, चरण कमल गुण गावे ॥४॥

१३

क्यों तूं जग अलुभावे माटी हरजी, क्यों तूं जग अलुभावे । म्हारी  
 कही मानले अब तूं, सरत पीर होय जावे । माटी हरजी ॥टेर॥  
 किण रो काज करे तू हरजी, किणने परचा दिख्यवे ।  
 घर रो परचो आप नहीं ओलखे, फिर फिर गोता खावे ॥१॥

किण्वे चैठो पूत तूं देवे, किण्वर कलंक भडावे ।  
 खुद रो कलंक भ्रादियो नांही, यह मोहे हांसी आवे ॥२॥  
 करम कोट सू तूं है जड़ियो, जिण ने नहीं मिटावे ।  
 ब्रह्मानन्द औपव नहीं लेवे, किण्व विष रोम हटावे ॥३॥  
 किणी ने पांव दे किणी ने आंख दे तूं, फिर फिर जगत ठावे ।  
 मोह मद मांघ हुवो तूं आंघो, चर री न आंख खुलावे ॥४॥  
 ना में देव ने ना तूं पुजारी, भूठो मौद मचावे ।  
 मेरो ही रूप और नहीं दूजो, समझे तो मो में समावे ॥५॥  
 बिन समझ्यां थाने और दुख होवे, समझ लेवे तो सुख पावे ।  
 तेंवर रामदेव साची भावे, समझ्यां मौज उढावे ॥६॥

१४

हारे हरजी तज दो नी भरम, समझो मन मांही रे जी । यूं जीवों ने जाय  
 जगावो रे हां । हारे हरजी तज दोनी भरम समझो मन मांही रे जी ॥देर॥  
 हारे हरजी नहीं कोई देव दास दोनूं त्यागो रे जी ।  
 ओ तो है किण्वे खरा जावो रे हां ।  
 हारे हरजी हारयोदो जीवों ने फेर ना हरावो रेजी ।  
 धाने सैनी दे समझावो रे हां ॥१॥  
 हारे हरजी कुण तो आवे ने कूण खुलावे रेजी ।  
 उठे देव दूजो नहीं पावो रे हा ।  
 हारे हरजी तेरो देव तू ही तो कहीजे रे जी ।  
 भाई रे ध्यावो जठेई प्रगटावो रे हां ॥२॥  
 हारे हरजी साची कहूँ मैं माने तो थारी मरजी रे जी ।  
 सान्यां भव तिर जावो रे हां ।  
 हारे हरजी नहीं सर पढेला पौरासी रे मांही रे जी ।  
 ये तो निकमा ही पत्थर पुजावो रे हां ॥३॥  
 हारे हरजी जोत्यां जगाय क्यो ये जगत धडकावो रे जी ।  
 आप हुवो ने हुमावो रे हां ।



हारे हरजी उलटी सुरत मांयने फेरो रे जी ।  
 तो अमर जोत मिल जावो रे हां ॥४॥  
 हारे हरजी पूजे पत्थर पापी वे कहिये रे जी ।  
 थे तो आत्म-पूजो ने पूजायो रे हां ।  
 हारे हरजी बजसा अकरम अनरथ यूं होसी रे जी ।  
 थो मत अन्याय चलावो रे हां ॥५॥  
 हारे हरजी केवे यूं रामदेव गुणो भाई म्हारा रे जी ।  
 इण पड़दे ने दूर हटावो रे हां ।  
 हारे हरजी परसो आत्म हुवे आरा परचा रे जी ।  
 थेई मुक्त सा पीर कहावो रे हां ॥६॥

१५

निज परसो पायो नहीं, तो परचा लेवो अनेक ।  
 तँपर रामदेव देखियो, जग में परचो एक ॥  
 किनको ध्यावे को मिले, कौन देव को पीर ।  
 सब घट आत्म बिलतो, मैं देखयो मुख री सीर ॥

१६

हारे वीरा आवणो हुवे तो सीधोड़े पंथ आवो रे जी, ऊजड़ पंथ कांयने  
 जावो म्हारा लाल । आवणो हुवे तो सीधोड़े पंथ आवो रे जी ॥८॥  
 जीहो लालजी ऊँच ने नीच वरण कुल नाही रे जी;  
 मन मांयले ने समझावो रे लाल ।  
 जरणा ने जार अमीरस पीयो रे जी; आपही सिध बण जावो रे लाल ॥९॥  
 जीहो लालजी नारो पुरुष रो नहीं है अठे दावो रे जी,  
 चेतन होय ने चेतारो रे लाल ।  
 चेत्या जिके तो चौक मांही खेले रे जी; वोरे मांय जाय मिल जावो रे लाल ॥१०॥  
 जीहो लालजी गुरु बंधनों रा बेला बंधिया रे जी;  
 जन्म ने मरण मिटावो रे लाल ।



जो देवे भेट पार पहुँचावे रे जी; अधविच नहीं छिटकावे म्हारा लाल ॥३॥  
 हारे वीरा तन मन करुं कुरवाण वारे ऊपर जी;  
 ज्याने पलक भूल्या नहीं जावे म्हारा लाल ।  
 वे हरिजन म्हांने प्राणा सूँ प्यारा रे जी; जिके दे दूरवीण दिखावे म्हारा लाल ॥४॥  
 हां रे वीरा वारो आसाण पलक नहीं बिसरुं रे जी;  
 वे रग रग मांय समावे म्हारा लाल ।  
 केवे रामदेव इसा साथो ने रे जी, रामरूप कहे जावे म्हारा लाल ॥५॥

१६

लाल म्हारा वीरा रे, देहइली मांयला हीरा, हेरो हो बाबाजी ॥६॥  
 ज्ञान रतन री गांठही ले आया हो बाबाजी ।  
 नुगरां आगे सो मती खोलो रे म्हारा वीरा ॥७॥  
 नैयांरो काजलियो कोरे कूपलिये नहीं रीफे हो बाबाजी ।  
 पर ने नारी रा मोयोड़ा परले जावे रे म्हारा वीरा ॥८॥  
 हाथ में दीयलियो नुगरांने उजियालो नहीं सूझे हो बाबाजी ।  
 गुरुगम रे उजियाले काया हेरोरे म्हारा वीरा ॥९॥  
 अमृत रस भरियो नुगरांने पीवणो नहीं आवे हो बाबाजी ।  
 मदिरा रा पीयोड़ा मति रा दीणा रे म्हारा वीरा ॥१०॥  
 घर मांय घर है नुगरांने निगे भैं नहीं आवे हो बाबाजी ।  
 बाहर रा भटक्कोड़ा किम घर चीन्हे रे म्हारा वीरा ॥११॥  
 तँवरों रो टीकावन सिद्ध रामदेवजी बोले हो बाबाजी ।  
 सगु री संगत में रुड़ा हीरा रे म्हारा वीरा ॥१२॥

२०

लाल म्हारा वीरा रे समझने परखो हीरा, हीरा हो बाबाजी ॥१३॥  
 सूतोड़ा जागो थे अब तो नोदइली निवारो हो बाबाजी ।  
 सिर पर है जमराखो नीन्द किम आवे रे म्हारा वीरा ॥१४॥  
 मनुष्य जन्म याने फेर हाथ नहीं आवे हो बाबाजी ।

कायारे कमठायोः पलक में जावेरे म्हारा बीरा ॥२॥  
 गयोडो श्वास पाछो न्हीं आवे हो बाबाजी ।  
 सूई रे नाके सू छोरो जावेरे म्हारा बीरा ॥३॥  
 करखो हुवे सो वेगो करखो हो बाबाजी ।  
 ए पदियां गयो फिर पद्मतावो रे म्हारा बीरा ॥४॥  
 घर मांही घर खोखो बाने बाहर हाथ न्हीं आवे हो बाबाजी ।  
 गुरु गम रे लजियाले वो मिल आवे रे म्हारा बीरा ॥५॥  
 तंबरा रो टीकायत सिद्ध रामदेवजी बोले हो बाबाजी ।  
 तुमरां थी बचियां सू मुखो जावेरे म्हारा बीरा ॥६॥

२१

मिल आनन्द हम भोजख्यो हेजी होजी; ऊगो सहजे सूर ॥देर॥  
 बचन बुद्धि सू ओ पार है हेजी होजी; इसको अवसुत नूर ।  
 कलम किया पहुंचे न्हीं हेजी होजी; लिख दू तो होव कूर ॥१॥  
 जप तप छणने लागे न्हीं हेजी होजी; मुक्ति रहत मजूर ।  
 काम किया सारा थक गया हेजी होजी; हुय गया चकना वूर ॥२॥  
 बाहर लोजत घर में मिल गया हेजी होजी; बाग्या म्हारे बनहद तूर ।  
 साची कही साचा मिलया हेजी होजी; ऊगो म्हारे ज्ञान अंशूर ॥३॥  
 बारी हो बारी वाली नायजी हेजी होजी; हो वयू परख्यो जहूर ।  
 रामदेव परचो पायो हेजी होजी; सब में पूरम पूर ॥४॥

२२

पयो पव परिपाण ने हेजी होजी; उगो म्हारे दिल बिच भाख ॥देर॥  
 अजब फकीरी साधो म्हे लीयो हेजी होजी; जीवत जग्यो रे मसाण ।  
 दिना रे आग चिन म्हे तप्या हेजी होजी; जद परख्यो महाराण ॥१॥  
 म्हारे भेलो एक जोगियो हेजी होजी; तप्यो परम सुजाण ।  
 इण तो जोगीदे जुलम कियो हेजी होजी; कयां सू मिले ना निसाण ॥२॥  
 अगनी जगाई जोगी जोगरी हेजी होजी; जाग्यो तप उद्दान ।

महाने तो वाण्या ने आप वच गयो हेजी होजी; करलियो आपू समान ॥३॥  
 जीव ब्रह्म सारा बल गया हेजी होजी; रह गयो फकर महान ।  
 तुरीये तखत पर चढ़ बैठो हेजी होजी, वाण्या अनहद निशाण ॥४॥  
 मैं और तू उठे हे नहीं हेजी होजी, नहीं कोई वेद पुराण ।  
 हे सोई हे अब क्या कहूं हेजी होजी; देखो घर घर ध्यान ॥५॥  
 घालीनाथ गुरु भेटिया हेजी होजी, भेट्या सन्त सुजाण ।  
 तबेर राम अपणा आप-है हेजी होजी; सुपने न देखूं जम डाण ॥६॥

२३

५

परियाण पहुँच्या जिकां पाया हे हेजी । गयां पीछे नहीं आया, ब्रह्म में वे  
 ब्रह्म समाया; सहजे सुरत लगाय हो । परियाण पहुँच्या जिकां पाया ॥७॥  
 विना स्वासा सहज पोया; जीव तज कर ब्रह्म होया हे हेजी ।  
 द्वैत दुविधा भाव खोया, रया लगन लगाय हो । परियाण पहुँच्या ॥८॥  
 करम करता नहीं भरता, नहीं जन्मे नहीं मरता हे हेजी ।  
 निडर रेवे नहीं डरता; आपणी धुन धाय हो । परियाण पहुँच्या ॥९॥  
 नहीं तातु नहीं मातु, आप अपणो सहज आपू हे हेजी ।  
 नहीं अजना नहीं जापू, नहीं करणी कराय हो । परियाण पहुँच्या ॥१०॥  
 चन्दन सूर सहर नूरा, निन्द निन्दन नदी दूरा हे हेजी ।  
 सहज बाजा अनहद तूरा, ओलख्य निज मांय हो । परियाण पहुँच्या ॥११॥  
 नहीं वैषा नहीं सेवा, आप अपणो पाय भेवा हे हेजी ।  
 ब्रह्म डोरी सहज मदेवा, गहवा छोड़े नांय हो । परियाण पहुँच्या ॥१२॥  
 बोलिया सिध राम वाणी, छाएया पीछे दूध पाणी हे हेजी ।  
 दसा रीगत हंस जाणी; गुगा जाणे नांय हो । परियाण पहुँच्या ॥१३॥

२४

५

अजमाल नन्दन शब्द भापे, साधु हो सो सांमले । कवल साचा ब्रह्म वाचा,  
 देवता दसण करे । एरु राम असमान दुन्य है, जम सेती क्यों डरे ।  
 अमर बीज हाथ आयो, सो नर भूला क्यों फिरे । अजमाल नन्दन ॥७॥

कष्ट किरिया कूट मारण, पेड़ी रैखी कृष्ण रेवे, हे हे जी ।  
 मूषां पीछे जन्म धारे, घणी मारां वे सहवे ॥१॥  
 उमा शंकर भाख राखी, जह्वा बिष्णु सव करे, हे हे जी ।  
 जाय कारी लेवे करवट, विकट मौतां वे मरे ॥२॥  
 धरख कृपा शिखिर साडी, उरघ दिरा घणी भदे हे हे जी ।  
 अमर मीन असमान जगो, आ बिधि बिरला लखे ॥३॥  
 स्वर्ग ऊपर सैत पेड़ी, प्रमाणां सुं पार है, हे हे जी ।  
 सख पर परियाण समरय, अखे आप अपार है ॥४॥  
 शेष पेड़ी परियाण गाया, सन्त ने सोजी पडे, हे हे जी ।  
 बोलिया विध रामदेव, अजप्रा जपे व्यांने मिले ॥५॥

२५

रिल मिल रहो हेत सुं हालो रे जी; कठिन पंथ खान्हे री धार । सखा जिके  
 सदाहीनर सावा रे जी; हर भज उतरो पैले प्रार ॥देरा॥  
 पहिला शब्द सुग्न मांही होता रे जी; रिची रिपियां मिल परगट जान ।  
 तीनों देव ने माया शक्ति रे जी; अपने आप में करी पहिचान ॥१॥  
 मूंगा शब्द सुंगा कर हीना रे जी; मूज अमृत कर मेठ्यो खार ।  
 हंसला री होह फरे नर सुगला रे जी; नहीं पहुँचे वे परले पार ॥२॥  
 भीषी चाल निरखल चाले रे जी; नन लालल रुलियारां रे मांय ।  
 मांयले रो मैल कियो नही आछो रे जी; निज करणी सुं सोता लांय ॥३॥  
 शैतल चाल धार पट भीतर रे जी; सुरता करे शब्द री हार ।  
 तज अभिमान सेट दियो आपो रे जी; जद बाजे परियाणी खार ॥४॥  
 चेतन रहो चाल मत चूको रे जी; गुरु बचनों सुं करोनी बवार ।  
 अजमल सुत रामदेव बोले रे जी; सब में सावध है इकसार ॥५॥

२६

साको भाई जगत कयो नहीं माने रे हे जी हो जी ।  
 घर में देव जो हाथ नहीं आवे, इत इत फिरे भटकाने रे ॥देरा॥

निज आनन्द तो दीखे नांही, आनन्द अबर बतावे ।  
 अमृत महाराण भरथो है घरमें, पर घर नावण क्या जावे ॥१॥  
 म्हाने कहे पीरजी ये हो, हांसी इण्णी आवे ।  
 जो पोंहवे सोई पीर जगत में, घर विश्वास दृढ़ लावे ॥२॥  
 बिन विश्वास वे किये भटकता, जूत जमों रा खावे ।  
 विश्वासी नर पलक न चूके, निर्भय मौख उड़ावे ॥३॥  
 सिमरूं एक अनेक न सिमरूं, चाहे ब्रह्माण्ड उलटावे ।  
 मेरो ही रूप सकल में कहिये, और नहीं द्रसावे ॥४॥  
 जन्म जन्म सूं मैं सुखो जाग्यो, अबके नीन्द उड़ावे ।  
 कहे रामदेव सुखो दे भाई साधो, आप में आप समावे ॥५॥

२७

सतगुरु आन छुड़ावे, मेरे सन्तो; सतगुरु आन छुड़ावे रे ।  
 नुगणों जीव मरे और जन्मे, भटक भटक मर जावे । मेरे सन्तो० ॥देरा॥  
 सामो रतन नजर नहीं आवे, कंकर जाण बतावे ।  
 जौहरी मिले तो सौदा पटसी, मूरख मुक्त गमावे । मेरे सन्तो० ॥१॥  
 त्वान सूं बिगड़या पानसूं बिगड़या, मोह मद में बिगड़ावे ।  
 सत्संग सिवा कठेई नहीं सुधरे, तीनों ही लोक फिर आवे । मेरे सन्तो० ॥२॥  
 कर्मों रा पाप कठेई नहीं छूटे, करोड़ धाम जाय न्हावे ।  
 अमर पदो सत्संग में मिलसी, वो फिर कोई न छुड़ावे । मेरे सन्तो० ॥३॥  
 कहे रामदेव सुनो भाटी हरजी, कब तक कह मुख गावे ।  
 सत्संग तणी अगम की महिमा, शेष कहत थक जावे । मेरे सन्तो० ॥४॥

॥ वाणी रूपादे जी की ॥

१.

॥ दोहा ॥

भात करे परमहारी, पैठ देय एक भाँय ।  
 रुपां कहे रे भाईयो, किण बिष रखाय मिलाय ॥  
 सुख में जग जानी रहे, दुख में देखे रोय ।  
 भाई रुपां यों कहे, भयो करेई न होय ॥  
 दुखने दुख समझे नहीं, सुख सूँ हर्ष न होय ।  
 रुपां कहे सराय नहीं, जीवन मुक्ति लीय ॥  
 सतसगी सीधा बने, और मन नो कलटो होय ।  
 झोरो रे एक जूत है, पारे पकसी होय ॥  
 धीमा बाधे हंस बंधू, कहे कोकिल बंधू बैद्य ।  
 काग भ्रष्ट पक्ष ना करे, शीतल व्यास लेख ॥  
 आपतो सुघर-वाक्या भला, बालो दिया सुधार ।  
 कहे रुपां बाध संतरी, मैं सेवक बार्बार ॥

२

रुपां कहे रे भाईयो, ओ रूप कले क्यों कष्ट ।  
 रूप लोभ में मत कलौ, हूँ दो साहब साच ॥  
 पढ़े में वे देखसी, जिहि जग रो कर होय ।  
 सिंह मुक्त पक्षदे फिर, काल न लावे कोय ॥  
 सिंहली बन्धी जो ना मन्थे, गान्धे फिला दिन रहत ।  
 सावो प्रेम म्हारे श्याम सूँ, जग सूँ किमदो हेत ॥  
 जग म्हांसुँ अलगो नहीं, मैं हूँ जग रे भाँय ।  
 फिर पढ़दो किण बात रो, ओ अपरम मन आत्य ॥  
 मन में तो पढ़दो नहीं, अंग पर पढ़दो होय ।  
 रुपां कहे रे भाईयो, ओ गुण नो करे न कोय ॥



निज आनन्द तो दीखे नांही, आनन्द अवर बतावे ।  
 अमृत महाराण भरयो है घरमें, पर घर नावण क्या जावे ॥१॥  
 म्हांने कहे पीरजी ये हो, झांसी इणरी आवे ।  
 जो पोंहचे सोई पीर जगत में, घर बिश्वास टढ़ लावे ॥२॥  
 दिन बिस्वास वे फिरे भटकता, जूत जमों रा खावे ।  
 बिश्वासी नर पलक न चूके, निर्भय मौज उड़ावे ॥३॥  
 सिमरुं एक अनेक न सिमरुं, चाहे ब्रह्मान्ड उलटावे ।  
 मेरो ही रूप सकल में कहिये, और नहीं बरसावे ॥४॥  
 जन्म जन्म सुं मैं सुतो जाग्यो, अणके नीन्द उड़ावे ।  
 कहे रामदेव सुणो रे भाई साधो, आप में आप समावे ॥५॥

२७

सतगुरु आन छुड़ावे, मेरे सन्तो; सतगुरु आन छुड़ावे रे ।  
 नुगणों जीव मरे और जन्मे, भटक भटक मर जावे । मेरे सन्तो० ॥टेरा॥  
 सामो रतन नजर नहीं आवे, कंकर जाण खलावे ।  
 जौहरी मिले तो सौदा पटसी, मूरख मुक्त गमावे । मेरे सन्तो० ॥१॥  
 खान सुं बिगड़या पाप सुं बिगड़या, मोह मद में बिगड़ावे ।  
 सत्संग सिवा कठेई नहीं सुधरे, तीनों ही लोक फिर आवे । मेरे सन्तो० ॥२॥  
 कर्मों रा पाप कठेई नहीं छूटे, करोड़ धाम जाय न्हावे ।  
 अमर पटो सत्संग में मिलसी, वो फिर कोई न छुड़ावे । मेरे सन्तो० ॥३॥  
 कहे रामदेव सुतो भाटी हरजी, कब तक कह मुख गावे ।  
 सत्संग तणी अगम की महिमा, शेष कहत थक जावे । मेरे सन्तो० ॥४॥

॥ बासी रूपदे की की ॥

१.

॥ दोहा ॥

बात करे परबारी, बैठ देव एक जंग ।  
 रुपां कहे रे भाईयो, किछ बिष रवम भिलाव ॥  
 मुल में मग्न रहनी रहे, दुख में बूढ़े रोव ।  
 भाई रुपां यो कहे, यत्ने कहेई न होव ॥  
 दुलने दुख सपके ली, मुल मूं बूढ़े न होव ।  
 रुपां कहे लंका मही, जीवन मुक्ति लीव ॥  
 कलसगी सीधा फले, और मम को फलटो होव ।  
 श्रीते रे एक बूढ़े है, करे पक्षी रोव ॥  
 बीता बासे हंस लू, कहे कोविन्द वं प्रेस ।  
 फल छल पल ना करे, लीला वल्लभ देख ॥  
 बापतो मुकरभाक्या मला, कान्यो दिया मुपार ।  
 कहे रुपां कल संसरी, मैं सेवक कारनार ॥

२

रुपां कहे रे भाईयो, ओ रूप को लो कल ।  
 रूप लीव में मत करो, हूं हो साधु सन ॥  
 पक्षी में वे देखी, जिहि का रो क रोव ।  
 सिद्ध मुल पबड़े फिरे, कल न लवे कोव ॥  
 सिद्धसी पगनी जो नाकचे, बायो लि सिन बोल ।  
 काओ प्रेस बहारे रकाव मूं, अब हूं सिद्धो होव ॥  
 लप मारां छलमो ली, मैं हूं का रे बाव ।  
 फिर पक्षी पिय बासरो, ओ भक्त न बर बाव ॥  
 मन में वो पक्षी ली, अंग पर पक्षी होव ।  
 रुपां कहे रे भाईयो, ओ मुल रो कहे न होव ॥

कहे रूपां हो मालजी, मनमें धारो धीर ।  
 आप धणी सिर ऊपरे, और सब बाप ने बीर ॥  
 एक तुम ही करतार हो, एक है सरजन हार ।  
 दोयां ने कर जोड़वूँ, कर दीजो मंच पार ॥  
 दीन बन्धु परमेरा सो, यां बिन राजी न होय ।  
 इण सूँ मैं अरजी करूँ, थांसूँ हट्ट न कोय ॥  
 रूपां सतसु वीणवे, सन राखो जग मांय ।  
 सन सूँ आगे ई ऊपरया, फिर उबरे पल मांय ॥

३.

हारे वीरा नरे नारी माय एक है होजी । कोई दूजो मन जाणो ।

नर नारी मांय एक है होजी ॥टेरा॥

हारे वीरां सत रे मारग कोई हासिया होजी; जिके जाये पियाणो ।  
 कायर काम नहीं जाणसी होजी; भूलां ही भरमाणो ॥१॥  
 हारे वीरा जिण कारीगर जगन घड़यो होजी; जिखरो अजब कमठाणो ।  
 सोई तिराजे सबरे बीच में होजी; देखो अधर ठहराणो ॥२॥  
 हारे वीरा सगलों अंखण्ड फिर देखलो होजी; दूजो कोई निजरे न आणो ।  
 जिण पायो जिण पावियो होजी; सुतो नीन्द जगाणो ॥३॥  
 हारे वीरा भेलो रेवे पण नहीं मिले होजी; ऐडो है पंतुर सेयाणो ।  
 जो कोई भिले सो छेण में मिले होजी, आप कहीं आणो ना जाणो ॥४॥  
 हारे वीरा गुरु उगमसीजी भेटिया होजी; उलमयो ही सुलभाणो ।  
 बाई रूपां दे रो चीनती होजी; ओ हो सांभो परियाणो ॥५॥

५ -

हारे वीरा जलि सभी बंद आपरो होजी; दोष कर्म को दीजे ।

आप समझ लेवे आपने होजी; मन मांयलो सदाजे ॥टेरा॥

हारे वीरा अपणी खुशो से दीन भयो होजी; नाना प्रपंच रचाये ।  
 मन मांयलो मान्यो नहीं होजी; फिर फिर गोला छाया ॥१॥  
 हारे वीरा समझ सेरी है सोकही होजी; विणमें दोय नहीं माने ।  
 एक होय जद चालेंसी होजी; दोय रयां अलखाने ॥२॥  
 हारे वीरा अपणी इच्छा सँ अमन भयो होजी; नाना करम कर लीला ।  
 खेल रच्यो इच्छा मांयने होजी; अखिल मन्थन रच दीन ॥३॥  
 हारे वीरा आप हिरण आप पारधी होजे; आप ही जाल किताय ।  
 है तो आप दूता कहे होजी; खेल विकट यह साया ॥४॥  
 हारे वीरा गुरु रे नमसीजी भेटिया होजी; जाल निजर जद आया ।  
 बाई रुपां ओलख्यो आपने होजी; जाल सभी निमटाया ॥५॥

जोरे वीरा संगत करी साचे सन्तरी होजी; नहाने साच बताया ।  
 संगत करी साचे सब री होजी ॥६॥

जोरे वीरा समझा नहीं बड़ बड़ प्रक्या होजी; शब्द कया मन आया ।  
 समझ गया जद धुप होया होजी; चरणों में शीरा नवाया ॥१॥  
 जोरे वीरा संग ही मोती नीपजे होजी; समझां सीप रचाया ।  
 स्वाति धूर री संग किये होजी; मूगे मोल बिकाया ॥२॥  
 जोरे वीरा मन मुददा ममता मरी होजी; आशा री सीर सुकाया ।  
 घट में उजाला हुय रया होजी; चहुँ दिरा सुर जगाया ॥३॥  
 जोरे वीरा समता समद में मनको घोषियो होजी; शब्द मसाका खगाया ।  
 मन धुप करम सब गल भया होजी; दूजा निजर नहीं आया ॥४॥  
 जोरे वीरा गुरु रे नमसीजी भेटिया होजी; मांयले रे सांग जगाया ।  
 केने रुपां मांय जागिया होजी; आवस्य जावस्य सिटाया ॥५॥

जोरे वीरा ज्यारे सन में विरह नहीं होजी; ज्यारे पूरे खो दीयो ।  
 ज्यारे मन में विरह नहीं होजी ॥६॥

जीरे वीरा ऊपर भेष सुहावणो होजी; गेरु सू रंग लीनो ।  
 आप अगन में जलियो नहीं होजी; होय रचो मति हीनो ॥१॥  
 जीरे वीरा विरह सहित साधू होया होजी, जिकां शिर धर दीनो ।  
 मरणे सू डरिया नहीं होजी, मग में मारग कीनो ॥२॥  
 जीरे वीरा विरह होय भारत लड़या होजी, पाछा पग नहीं दीना ।  
 मतवाला भूमे मद भरया होजी; रंग भर प्यासा पीना ॥३॥  
 जीरे वीरा गुरु उगमसी साधू मिल्या होजी; जिकां मन कीयो भीणो ।  
 भाई रूपां री बीननी होजी, परगट निज पद चीनो ॥४॥

८

मुणो म्हारा भाईको रे, अपणों जगमांहे ओ हीज काम,  
 समस्त ने समझासां हे, निज देरा दिखासां हे ।  
 लासां गुरांरी सैन मांही हे हां ॥८॥  
 चालो म्हारा भाईको रे, आपों सतरे जुमले मांय;  
 जागने जगासां हे; आसी ब्यांने मारग ले जासां हे ।  
 लासां गुरांरी सैन मांही हे हां ॥९॥  
 मुणो म्हारा भाईको रे; निन्दक ने ई लेसां सुधार,  
 अपणों बयासां हे, अपणे मांय रत्नामां हे ।  
 लासां गुरांरी सैन मांही हे हां ॥१०॥  
 जग में म्हारा भाईको रे; आपणों बेरी न दीसे कोय,  
 सब रा सहण है; कुछ सुणना ने कहणा हे ।  
 लासां गुरांरी सैन मांही हे हां ॥११॥  
 पाप्यां ने म्हारा भाईको रे; पुनवान कर लेवों सग मांय,  
 जावण ना देवा हे; साचो सैन लखायां हे ।  
 लासां गुरांरी सैन मांही हे हां ॥१२॥  
 किसो म्हारा भाईको रे; जग में पुन और पाप,  
 जीव तिरासां हे; निज रूप बतासां हे :

लासां गुरांरी सैन मांही हे हां ॥५॥

हाथ में आयो हे; भायों जीव अब साखी न जाय,  
आये ने तिरवां हे; जग सुं पार संगवां हे ।

लासां गुरांरी सैन मांही हे हां ॥६॥

गुरुजी जगमसी हे; मिल्य म्हांने भगदे रे मांय,  
को क्षम सिखायो हे; निज देरा दिखायो हे ।

लासां गुरांरी सैन मांही हे हां ॥७॥

बोलिया क्हां दे हे; भाखजी रे घर री नार,  
मत्त मांही म्हारे हे; जग ने पार व्हारें हे ।

लासां गुरांरी सैन मांही हे हां ॥

६

ये मानो म्हारा भाईहो रे; समझले चालो म्हारा लाख,  
भव दुख भागे रे; भांरा भव दुख भागे रे ।

मिलार्ज सुन्दर श्याम सुं रे हां ॥देरा॥

चाको म्हारा भाईहो रे; आपां सत रे जुमले मांय,  
मिलने गास्यां हे; छटे मिलने गास्यां हे ॥१॥

वीरू दुख भेटां रे; चालो आपां गुरां रे दरबार,  
मन समझस्यां हे; मांझले ने समझास्यां हे ॥२॥

मायां नुगणा मत रहीजो रे; रहीजो गुरां रा सपूत,  
कपूत पयो त्यागो रे; कपूत पयो त्यागो रे ॥३॥

तुरखं पुरखें रो रे; भाई तज दीजो संग,  
यांने कंठ लगवे हे; यांने कंठ लगवे हे ॥४॥

गावो म्हारा भाईहो रे; आपो विरह रा पीत,  
हरि मिल जावे हे; जिण सुं हरि मिल जावे हे ॥५॥

केवे यूं रुपावे रे; यांने संत रा वैख,  
बैख म्हारा सुणजो हे; भव पैसा तिरजो हे ॥६॥

रावल माल हुय जावो साध सुधारो धाँरी काया होजी ।

धाँने बार बार समझाऊं म्हारा धोरी कथा,

हुय जावो साध भीखोड़े मारग चालो हो जी ॥८॥

मालजी भो संसार अथग जल भरियो हो जी । बेरो तेरुहों पार न पायो ।

हो रावल माल हुय जावो० ॥९॥

मालजी साधू मांथ तांत सायर बिच बेड़ी हो जी । वेने कूण बनारे पैले पार ।

हो रावल माल हुय जावो० ॥१०॥

मालजी काया में कूड़ काठ ने करोती हो जी । वा तो आवत आवत बैरे ।

हो रावल माल हुय जावो० ॥११॥

मालजी रूप दैग्य मत मन ने डिगाओ हो जी । बे रो फल चारपाँ पछतावो ।

हो रावल माल हुय जावो० ॥१२॥

मालजी काया कू पली ने मन कलूरी हो जी । बां पर जरणा रो ढकण दीजे ।

हो रावल माल हुय जावो० ॥१३॥

मालजी पैले री नार-जननी कर जाणो हो जी । बेने बेनइ कहे बतलाओ ।

हो रावल माल हुय जावो० ॥१४॥

मालजी पैले री वस्तु मांग कर लीजे हो जी । काम सर-यां पाव्री दीजे ।

हो रावल माल हुय जावो० ॥१५॥

मालजी जुगुरे माणस रो संग मत कीजे हो जी । वो तो आप कूचे ने बुवावे ।

हो रावल माल हुय जावो० ॥१६॥

मालजी कालर खेन बीज मत वावो हो जी । बे रो हमल हाथ नहीं आवे ।

हो रावल माल हुय जावो० ॥१७॥

मालजी घर री खांड कड़कड़ी लागे हो जी । गुड़ खोरी रो भीठो ।

हो रावल माल हुय जावो० ॥१८॥

मालजी नीम ज खारो नोमोली बे री भीठी हो जी । बिपं अगुस कर डारो ।

हो रावल माल हुय जावो० ॥१९॥

मालजी रूपे हन्दी नाद सोने हन्दी सेली हो जी । बोलिया रुभादे उगमसी री चेली ।

हो रावल माल हुय जावो० ॥२०॥

११

हारे बीरा किण ने केऊँ रे भेद नहीं जाणे रे जी ।

ए तो स्वार्थ छुरियाँ चलावे रे लाल जी । किण ने केऊँ ॥८॥

हारे बीरा खरी खरी रात ए जुमा रे जगावे रे जी ।

ए तो समी लोत जगावे रे लाल जी । बाहर प्रकाश लगावो नहीं माँही रे जी ।

ए से बुधा हो रात गमावे हो लाल जी । किण ने केऊँ ॥९॥

हारे बीरा भांगे नारेल चूरमा चूरे रे जी । ए तो होवा होखे सूँ गावे हो लाल जी ।

भाजे मंदूर मंजीरा गहरा रे जी । थारो माँवलो भरम नहीं जावे हो लाल जी ।

किण ने केऊँ ॥१०॥

हारे बीरा सिध समवेध भाई मारे भेलो रे जी ।

एतो कूड़ा फेंक जगावे हो लाल जी । रामे रोकरणी जगत सूँ ग्यारी दे जी ।

कोई करे वो पार हो गावे हो लाल जी । किण ने केऊँ ॥११॥

हारे बीरा पावे पीर परसें सोई होवे रे जी ।

एतो बिन परसाँ किम पावे हो लाल जी । बोखिया रुपावे चमसरी चेकी रे जी ।

सममे जिंके नर धावे हो लाल जी । किण ने केऊँ ॥१२॥

॥ बाणी रोयल जी की ॥

भाचरज खेत अर्चभा देखा । नहीं कोई रंग रूप नहीं रेखा ॥१॥

पाँच पत्र गुण तीन पसारा; चेतन एक बहुत विस्तारा ।

राज्य शंख रूप रस गंधा; सब में अलख लखे नहीं अंधा ॥२॥

शशि नहीं सूर दिवस नहीं रवनी; नहीं कोई अमात नहीं कोई मवनी ।

नहीं कोई फल नहीं कोई सूर; एक अखण्ड सब मद्र पुरा ॥३॥

नहीं कोई सुख शिखर नहीं गगना; नीच प्रेम मया; मन गगना ।

राज न दरसे बुद्धि नहीं परसे; स्वात पूर जल अदमिता परसे ॥४॥

नहीं कोई ज्ञान नहीं अज्ञान; नहीं कोई मूर्ख नहीं कोई स्वान ।

आप ही पैदा आप ही ताना; आप आप में खट समान ॥५॥



जन्म और मरण हुआ कछु नाई; कृप की छाया कृप के मांई ।  
नहीं कोई गया नहीं कोई आया; रोयल रत्न अमोहख पाया ॥१॥

२

हरिजन लाया शब्द का चेड़ा । सुखत पुकार आवे कोई नेड़ा;  
अमर लोक से आया तेड़ा । हरिजन० ॥ देर ॥  
मत का चेड़ा ले सबको बुलाया, सिर साटे लेजाऊँ भेला ।  
छोड़ ससार सब झूठ पसारा, काम क्रोध बुद्ध का खेड़ा ॥१॥  
मैन समझ चाले कोई सुरा, जम का मिटावे भगड़ा और भेड़ा ।  
सब मरजाद लोक लाज खोई, होय निरवाला राख्य नहीं चेड़ा ॥२॥  
सैन लक्ष में सुरत मिलाई, भव जल अमाप अथाग अवेड़ा ।  
दूत भूत कछ मछ भव सागर कै, हरिजन ठेल कनाया छेड़ा ॥३॥  
पैंढो पियाणो करत दिन रैखा, जल ते जहाज किया ले नेड़ा ।  
र सलामी पार उतारे, रोयल अमर घाट का नेड़ा ॥४॥

३

वहां नहीं पहुँचे युगला हे, पहुँचे हँसला हे ॥ देर ॥  
मान सरोवर मोक्षी मुक्ता, गुर विन गम नहीं पावे ।  
पूरण पद प्राप्ति बिना, फिर फिर गोता खावे हे ॥१॥  
काया बाड़ी में तरवर ऊगा, जाके अमर फल लागा ।  
शीश बिना लेसी सन्त सूर, कायर सुख मुख भागा हे ॥२॥  
भँवर गुफा में मनवर मिलिया, जोत जुगत कर जागी ।  
पाँच सात मिल साखी गावे, तख ठार धुन लागी हे ॥३॥  
जल भीतर एक अग्नी जलत है, विन दीपक उजियाला ।  
अमृत मगर अभी भरत है, पीवे हरिजन प्यारा हे ॥४॥  
प्रेम पियास लगी घट भीतर, अपर कछु नहीं भावे ।  
काया नगर में अलख विराजे, जो खोजे सो पावे हे ॥५॥  
अमरापुर में आसण बीना, दुर्जन मार हटाया ।  
रोयल रात गई दिन पाया, इच्छा मंगल गाया हे ॥६॥

हँसा करो रे पचासा रे पछोपरा हे । तू तो छोट अगम पद बैठ रे,

हँसा गुरुजी रो देश मुहानवयो हे । (हिरा)।

हँसा गुरुजो रे देश में आविबो रे; छटे थारी जाण न भिन्नण रे ।

हँसा कौण करे थारी पारख रे; ओतो झाँधो लोफ अनाख रे ॥१॥

हँसा भक्तागार री सीर ये रे; ओतो फलो जात संसार रे ।

हँसा भजन करे सोई उमरे रे; ए तो हूब मरे गंधार रे ॥२॥

हँसा ज्ञान गुणों हन्वी गंडही रे; आबो विन गहक मर खोल रे ।

हँसा नद जाने बेरा पारख रे; आबो बिहसी भोले मोल रे ॥३॥

हँसा ज्ञान पुरी गढ़ गांव है रे; छटे रे हंसो केरो धाम रे ।

हँसा कुणाला गिर पंखा पड़े रे; एतो हंस पड़े निरवाण रे ॥४॥

हँसा कुणाला भक्ति जो करे रे; ज्ञानि अंग नहीं कोई ठौर रे ।

हँसा अनन्त जगय ने घर रखा रे; ए तो पण पण मूँवा करोड़ रे ॥५॥

हँसा थारे कुल रो कोई नही रे; ओ तो जवर विराणो साज रे ।

हँसा जानसरोवर मूलखो रे; छटे रे हंसो के रो राज रे ॥६॥

हँसा गुरु सम हाता कोई नही रे; जाने बार बार परखम रे ।

हँसा रोखत शरखो श्रम रे रे; मैं तो कहां पाबो पिसराम रे ॥७॥

वेपथु हुये सो लीजो सोचा भाईदों हे । अब ही जेवण के री विरिख रे साथो;  
भानसो जन्म हीरो हाथ न आवे हे । फेर मदक पौरसी रे साथो; पेसो रचव  
हीरो हाथ न आवे हे । (हिरा)।

श्याम घटा गिर खेत मई दे हे; जज हू न आवे जन्म रे साथो ।

विशेष निम्ने नर अरखी सु विरिख हे; सरिया जि कोरा काख रे साथो ॥१॥

जान क्यो नर रैखी न रैखी हे; विन रैखी कैसा ज्ञान रे साथो ।

म परमोद सके नहीं अणणी हे; धौरो सु मंगई खाना रे साथो ॥२॥

सुखा हुये सो हंस गत दाने हे; धौतर पान न गेले रे साथो ।

माध हुवे ज्यारे घट सजियाला हे, अकल कला मांहे खेले रे साधो ॥१॥  
 शीश उतार धरयो गुरु आगे हे; अब कछु सशय नांही रे साधो ।  
 पाचो ने उलट एकण घर लाया हे; अनुभव आतम मांही रे साधो ॥४॥  
 किरपा भई जद सवदा रचिया हे, भाव भगत कैसी हांसी रे साधो ।  
 रोयल रतन अमोलख पायो हे; शिर साटे अविनाशी रे साधो ॥५॥

६

समझ हालो रे मौजा भाइयो हे; थे लेयोनी गुरां मूं परतीत भाई रे लोय ।  
 काया मांयला कुलक्षण परहरो हे; आई है हंसो केरी रीत भाई रे लोय ।  
 निरा दिन-भूलो हर रे नाम में हे ।टेर॥

धन धन साधू रे सूरवा हे; ज्यारे बिरह अग्नि घट मांय भाई रे लोय ।  
 शीश दियो पर ब्रह्म ने हे; अब कछु सशय नांय भाई रे लोय ॥१॥  
 दिल दरयाबों में भूलणो हे; नाम नीर अंग धोय भाई रे लोय ।  
 ज्ञान अंजन वारे नेतरां हे; पाने कबहू न दरसे दोय भाई रे लोय ॥२॥  
 अचरज ख्याली रे आप है हे; अकथ कथ्यो नहीं जाय भाई रे लोय ।  
 मुर नर मुनि जन रट रया हे, बिन किरपा कछु नांय भाई रे लोय ॥३॥  
 चित चेतन सू आ मिल्यो हे; अब बीझड़वा को नांय भाई रे लोय ।  
 रोयल शरयो शाम रे हे; मूंद रली जल मांय भाई रे लोय ॥४॥

॥ वाणी गांय पिथरासर के ठाकुर जगमालसिंह जी की ॥

मेरा स्वरूप अनूप रूप है, सब वेदों में गाया । सखिदानन्द सदा नित  
 व्यापक, नाश न रहित बताया ॥टेर॥

चेतन आश्रित मूल अविद्या, बहुधा भेद दिखाया ।

नाम रूप किरिया में अनुगत, नित चेतन निरदाया ॥१॥

व्यापक व्योम अखण्ड एक रस, घट मठ नाम धराया ।

साक्षी बुद्धि विशेषण मिलके, परिद्धिन्न जीव कहाया ॥२॥

देश काल परिच्छेद न मो र्हे, वस्तु निरन्तर थाया ।

कारण काज स्रजति दिजति, अतिथि फेद मिटाया ॥३॥

मैं सब का आधार अकृता, किरिया उनमुन काया ।

नित प्राप्त मम रूप सदाई, सो सतगुरुजी से पाया ॥४॥

सूक्ष्म स्थूल कई लोक चतुर्दश, विषय-पदार्थ-माया ।

सब मैं मिल्या सरव से न्यारा, स्वतः प्रकाश अंजाया ॥५॥

ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय बुद्धि वृत्ति, त्रिपुटी भरम उपजाया ।

आत्म ब्रह्म अपरंपर साक्षी, ज्ञेय ज्ञाता ही पाया ॥६॥

श्यामी नारायणगिर किरण करके, तत्त्वं कहि दरसाया ।

अब जगमाल नहीं कह्यु करतब; सिंधु में सिंधु समाया ॥७॥

॥ भजन साधू मोहनरामजी कवीर पंथी के ॥

राग-पिल्ली, तर्ज—“कोई रोके तुम्हें और यह कहे” ॥

मन के स्वारथ छोड़ जरा, कृष्ण के मार्ग आता जा ।

छोटे से नाते को छोड़ के दूर, विश्व से प्रेम बढ़ाता जा ॥८॥

अपना कल्याण तू करने को, सात्ता जप तप और बास करे ।

बन ना तिठझा ऐसा अब, इस कृष्ण पुजारी कहाता जा ॥९॥

कौन से वेदों का मन्त्र रटे, कौनसा उपनिषद् दूटे ।

एक कृष्ण की गीता पढ़कर के, सब जग को अपनाता जा ॥१०॥

काम करो सब विश्व के पर, व्यक्तिगत को कुछ भी नहीं ।

चक्र चले भगवान का यह, तू भी भाग बढ़ाता जा ॥११॥

जो तू एकान्त में जावेगा, तो पाप औरों का खावेगा ।

सुद सी कर्त्तव्यारूढ बनो, शुद्ध जो भोग को पाता जा ॥१२॥

औरों के भूजे भोग जो तू, खाया तू दुख पावेगा ।

आपही पता मोक्षा बन आप, जुदा मन निकाले जा ॥१३॥

मोहन सब है यह रूप तेरा, तू ही सभी का रूप सदा ।

नाम और रूप है मिथ्या समी, शुद्ध स्वरूप समाता जा ॥१४॥

रग-फिल्मी, तब "अधेरा होरा चला गया" ॥

ज्ञान रवि जब उदय हुआ तो, भरम अधेरा चला गया ।  
 आ बंटे सत्संगत में तो, समी बखेड़ा चला गया ॥८॥  
 राग द्वेष की धमकेड़ें, चित्त में यह रोज सताती थीं ।  
 कुकर्मों की कोचरियें ये, नाना शब्द सुनाती थीं ।  
 देखा सत के सूरज को, अज्ञान उल्लू सो चला गया ॥९॥  
 काजी मुल्ला पंडित गुरुवर नित, तस्कर मार मचाते थे ।  
 हमको झूठा दम देकर ये, माल मुफ्त में खाते थे ।  
 आगे मुक्ति का भ्रम घँसा, बस अब यह हमारा चला गया ॥१०॥  
 अब नहीं हम स्वर्ग को चाहते हैं, बैकुंठ की कुछ परवाह नहीं ।  
 देह विदेह मुक्ति की दिल में, हमको नहीं चाह रही ।  
 जय अपना स्वरूप निहार लिया, तब भरम अधेरा चला गया ॥११॥  
 अब नहीं जीव और नहीं ब्रह्म, और नहीं ईश्वर का डर हमको ।  
 मोहनराम रूप जग है, अब भरम अधेरा चला गया ॥१२॥

रग-फिल्मी, तब "हवा में उड़ता जाये" ॥

कोई शानी निजानन्द जोये, जो भाव थे मन के पोये; होजी होजी ॥८॥  
 आने जाने की दुविधा में कर, सब में एक दिखाया; हां सब में एक  
 दिखाया । जैसे जल बिच तरंग समावे, ऐसे ब्रह्म समाया; हां ऐसे ब्रह्म  
 समाया । वो सदा एक रस नहीं जागे नहीं सोये । कोई शानी० ॥९॥  
 जीव भाव को मिटाकर उनने, माखन आनन्द लीना; हां माखन आनन्द  
 लीना । तपा के उसमें ज्ञान धृत जो पीये उनकी दीना; हां जो पीये उनको  
 दीना । जो पीये वो ही जन मैला मन का धोये । कोई शानी० ॥१०॥  
 सत्संग करने का आनन्द लेना होवे लेवे; हा लेना होवे लेवे । मान बड़ाई  
 दूर हटा कर परमानन्द पद सेवे; हां परमानन्द पद सेवे । गाफिल रहे जनम  
 भर जग में यूँ ही घात सब खोये । कोई शानी० ॥११॥  
 मोहन रग राग में यह राचा और न दूजा कोई; हां और न दूजा कोई ।

खेल कहूँ खेलाड़ी बनकर रंगू न रंग में सोई; हां रंगू न रंग में सोई ।  
मेरे रंग में रंगे सभी यह मुझमें एका होये । कोई जानी० ॥४॥

राग—फिल्मी, तर्ज—“मिगड़ी बनाने वाले” ॥

दुविधा मिटाओ मन की, आश पद पावो; राग द्वेष को दूर हटावो ॥८॥  
सत्संग का दाया रखते, खाली क्यों मुख से बकते,  
बकते क्यों क्यों नहीं लखते; मन समझाओ । राग द्वेष को० ॥१॥  
सत की निद्रा संगत करना, दुर्बसनों को तुम हरना,  
पाप से मन में हरना; अभी पीओ पाओ । राग द्वेष को० ॥२॥  
सत्संग का आनन्द आवे, सारे विद्वेष मिटावे,  
विष्व अपना धन जावे; सब में समाओ । राग द्वेष को० ॥३॥  
मोहन यह आनन्द लीजे, अक्की मच देरी कजे,  
यहत अमोक्ष छीजे; नीव को चढाओ । राग द्वेष को० ॥४॥

राग—फिल्मी, तर्ज—“मिगड़ी बनाने वाले” ॥

सत्संग में आने वाले, अमृत फल खाने वाले;  
फिर क्यों विषय के, विष फल खावो ॥८॥  
गीता को निश दिन पढ़ते, आदत से फिर नहीं हटते,  
तोते बयूँ क्यों यह रटते; श्यान क्यों गमावो । फिर क्यों विषय० ॥१॥  
बाबा बन्दी से नहीं हटते; पापों से कुछ नहीं डरते,  
कृष्ण का धन क्यों भरते; जग क्यों हँसावो । फिर क्यों विषय० ॥२॥  
धनुर्धर कुटुम्ब हमारा, सब ही है हमको प्यारा,  
देखा है रूप प्यारा; भेद सब मिटावो । फिर क्यों विषय० ॥३॥  
मोहन के होय उपासी, मुक्ति है उनकी दासी,  
यो क्यों मुगले खौरासी; जीवत मुक्ति पावो । फिर क्यों विषय० ॥४॥

राग—फिल्मी, तर्ज—“जहाँ बदला वफा का” ॥

किया निश्चय यही हमने; सभी हम में यह दुनिया है ॥८॥  
मूल पर हम ही हमको हम, पड़े माया के चक्र में;

हमी को चीन लीया फिर । सभी हम में यह दुनिया है ॥१॥  
हमी तो वाप बन सबके, हमी बनते सबके चेटा,  
हमी स्वामी हमी मालिक । सभी हम में यह दुनिया है ॥२॥  
मेरा सकल्य सभी दुनिया, मिटा दूं तो सब मिट जाये;  
सभी मृग लुप्ता का जल है । सभी हम में यह दुनिया है ॥३॥  
नहीं कोई कूप में केहर, फटिक में गयद नहीं कोई;  
नहीं है काच में सूरज । सभी हम में यह दुनिया है ॥४॥  
नहीं है सीप में बाँदी, रज्जू में सर्प नहीं होगा;  
ऐसे मोहन निश्चय करले । सभी हम में यह दुनिया है ॥५॥

राग-फिहमी, तर्ज-“अपसाना” की ॥

करना है तुम्हको ज्ञान जो जग के व्यवहार का,  
गीता का अमृत पीले, जो कि श्याम मुरार का ॥६॥  
गोपाल ने निज गीता में, सब भेद बताया है ।  
हर ध्वंद से धो खोल के, प्रजुन की पढाया है ।  
उसको विचार ले नूँ, मारग निस्तार का ॥७॥  
सोये हुवे जो नींद में, उनको जगा रही ।  
मर चुके विषयों में उनको, फिर जिला रही ।  
पढाती है ये मन्त्र सारे, विश्व के प्यार का ॥८॥  
भगवान ने की थी दया, गंगा बहाई है ।  
जो छोड़ी इसमें नैया, पार लगाई है ।  
दिलला दिया है जीते मुक्ति, यह मन्त्र उद्धार का ॥९॥  
ये पी चुके हैं अमृत धो तो, फिर न आयेंगे ।  
अगर आयेंगे तो इच्छा से, अवतार पायेंगे ।  
दोगा न पापों का अधिकारी, न दुल के वारका ॥१०॥  
मोहन यह निश्चय करले, निज अपने रूप का ।  
तज दे तू आसरा इस, जग भ्रम के कू का ।  
ले ले मजा विराट उस, भगवान चार का ॥११॥